लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें सीरीज़–37

तुर्की की परियों की चौवालीस कहानियाँ

भाग 1

इगनाज़ कुनौज़

1913

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2023

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-37
Book Title: Turki Ki Pariyaon Ki Chauvalis Kahaniyan-1 (Fourty-four Turkish Fairy Tales-1)

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2022
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Turkey

विंडसर, कैनेडा

2023

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें 6

तुर्की की परियों की चौवालीस कहानियॉ–1 8

1 रचना 10

2 भाई और बहिन 13

3 डर 25

4 तीन सन्तरा परी 35

5 गुलाबी सुन्दरता 55

6 चुप राजकुमारी 68

7 हीरो करा मुस्तफा 86

8 जादूगर दरवेश 98

9 मछली परी 106

10 घोड़ा देव और जादूगरनी 116

11 सीधा सादा 128

12 जादू की पगड़ी जादू का कोड़ा और जादू का कालीन 141

13 गंजा मुहम्मद 152

14 तूफान राक्षस 163

15 हॅसता हुआ सेब और रोता हुआ सेब 187

16 कौआ परी 200

17 चालीस राजकुमार और सात सिर वाला ड्रैगन 209

18 चॉद घोड़ा कमेरताज 222

19 दुख की चिड़िया 237

20 जादुई अनार की शाख और सुन्दरी 250

21 जादू की बालों की पिनें 273

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में अब तक 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोन, नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज़ के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। अब तक इस सीरीज़ में **35** पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं। यह एक मज़ेदार संग्रह है। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2023

तुर्की की परियों की चौवालीस कहानियॉ–1

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़ा महाद्वीप सबसे पहले और सबसे छोटा महाद्वीप सबसे बाद में। सब महाद्वीपों में अपने अपने देश हैं पर इस तुर्की देश की स्थिति बड़ी अजीब सी है। यह दो महाद्वीपों में आता है। इसका बहुत थोड़ा सा हिस्सा पूर्वी यूरोप में है और काफी बड़ा हिस्सा पश्चिमी एशिया में है। क्योंकि इसका अधिक हिस्सा एशिया में है तो इसे हम एशिया में ही गिनते हैं।

इसमें पूरी पुस्तक की कहानियॉ दी हुई हैं। इसके लेखक का कहना है कि ये कहानियॉ उसने अपने आप ही इकट्ठी की हैं किसी पुस्तक से नहीं ली हैं क्योंकि तुर्की कोई बहुत ही साहित्यिक देश नहीं है और ऐसी कोई पुस्तक भी यहॉ नहीं है जहॉ से इन्हें लिया जा सके। इससे ऐसा लगता है कि यह वहॉ की परियों की कथाओं पर यह पहली पुस्तक है। ये कहानियॉ वहॉ इस्तानबूल में रोज ही कही सुनी जाती हैं। स्त्रियॉ इन्हें तन्दूर के पास बैठ कर अपने मित्रों और बच्चों को सुनाती हैं।

लेखक का दावा है कि ये कहानियॉ किसी भी कहानी जैसी तो बिल्कुल भी नहीं हैं पर मिलती जुलती भी नहीं हैं। कुछ इनमें से यूरोप के स्रोतों भारतीय स्रोतों और "अरेबियन नाइट्स" से ली गयी हैं। ये मुस्लिम धर्म की हैं और इनके चरित्र मुसलमान हैं। इनके शरीर से लिपटे हुए काफ्तान सिरों की पगड़ी और पॉवों के स्लिपर सब पूर्वीय लगते हैं।

शाहज़ादे उनके बेटे सुलताना या तो अकेले हैं या फिर तीन और सात की संख्या में बहिन और भाई हैं। देवों के अलावा परियॉ फाख्ता की शक्ल में आखिरी पल में आ कर सहायता कर जाती हैं। जब कोई बाहर यात्रा पर जाता है तो वह अच्छी आत्माओं द्वारा सहायता प्राप्त करता है और बुरी आत्माऐं उसको नुकसान पहुॅचाती हैं। ये जानवर फूल पेड़ आदि के रूप में प्रगट होती हैं।

तुर्की के लोग परियों की दुनियॉ में तीन रास्तों द्वारा पहुॅच सकते हैं – या तो पैगैसस की पीठ पर बैठ कर या फिर परियों के द्वारा। स्वर्ग जाना हो तो अंका चिड़िया की सहायता से जा सकते हैं और नीचे जाना हो तो देव की सहायता से जा सकते हैं। रास्ते में बहुत सारी सराय और दूकानें हैं फूलों के बागीचे हैं।

सब लोक कथाओं की तरह से ये कहानियॉ भी बच्चों के लिये नहीं हैं हालॉकि बच्चे ही इनकी ओर सबसे अधिक आकर्षित होते हैं और बच्चों के बाद स्त्रियॉ। ये कहानियॉ एक हजार एक रातों की कहानियॉ नहीं बल्कि एक हजार एक दिनों की कहानियॉ हैं। ये सब कहानियॉ एक पुस्तक से ली गयी हैं जो **1913** में प्रकाशित की गयी थी।[2]

1913 की भूमिका से

यह पुस्तक तुर्की की लोक कथाओं से ली गयी है। "तुर्की की परियों की चौवालीस कहानियॉ" बहुत दिनों से प्रकाशन में नहीं है। इसका एक कारण यह है कि इसके प्रकाशन का स्तर बहुत ऊॅचा था। इसका साइज़ साधारण साइज़ से बड़ा

---

[22] Forty-four Turkey Fairy Tales. By Ignacz Kunos.
Taken from the site : https://www.sacred-texts.com/asia/ftft/index.htm
These are availabale on the following site also :
https://ia800702.us.archive.org/3/items/fortyfourturkish001862/fortyfourturkish001862.pdf

था। इसके कागज का माप एकसा रखने के लिये इसका सोने का ढॉचा था – लगभग 10 इंच ऊॅचा। इसका हर पृष्ठ दो रंग में छापा गया था और इसमें चार रंग के 16 चित्र थे जो हाथ से चिपकाये गये थे। इसकी छोटी कापी का मूल्य तीन अंकों की संख्या तक जाता था।

1 रचना[3]

अल्लाह ने जो सबसे अधिक शानदार भगवान है और जो सातवें आसमान पर रहता है संसार की रचना खत्म की। आसमान में भी सात स्तर है और धरती के भी सात स्तर हैं जो बुरी आत्माओं के रहने की जगह है।

स्वर्ग के रास्ते में परियॉ या अच्छी आत्माऐं रहती हैं और धरती के अॅधेरे में देव[4] या बुरी आत्माऐं रहती हैं। स्वर्ग की रोशनी हमेशा ही धरती के अॅधेरे से लड़ती रहती है। परियॉ स्वर्ग में उड़ती हैं जो धरती से बहुत ऊॅचा है जबकि देव धरती के अॅधेरे में नीचे डूबते जाते हैं।

पहाड़ स्वर्ग के रास्ते में दीवार बन कर खड़े रहते हैं और केवल अच्छी आत्माऐं ही "तॉबे के क्षेत्र"[5] तक पहुॅच पाती हैं जहॉ से चॉदी के पहाड़ों और सोने की पहाड़ियों का रास्ता खुलता है। बुरी आत्माऐं इस समय स्वर्ग की चमक से अन्धी हो जाती हैं।

उनके रहने की जगह तो धरती की गहराइयों में है जहॉ पानी के स्रोतों के रास्ते से घुसते हैं। वहॉ सफेद और काली भेड़ें घूमती रहती हैं जिनके बालों में ये बुरी आत्माऐं घुस जाती हैं जिनमें हो कर ये सातवें स्तर पर पहुॅच जाती हैं।

---

[3] The Creation. Tale No 1

[4] This "Dew" does not mean Hindu's Devtaa but Dev who are giant in size and terrible in look.

[5] Translated for the words "Copper Range"

सफेद भेड़ पर बैठ कर वे धरती पर आती हैं। परी और देव दोनों ही बहुत ताकतवर हैं और दोनों ने ही अल्लाह को संसार की रचना करते देखा है – पहला आदमी।

अल्लाह ने पहला आदमी बनाया और उसे धरती पर रहने के लिये भेजा। और जब पहला नश्वर आदमी धरती पर प्रगट हुआ तो परी अल्लाह का काम देख कर बहुत खुश हुई। बुराई के पिता ने भी देखा तो वह ईर्ष्या से जल उठा। तुरन्त ही उसके दिमाग में एक तरकीब आयी जिससे वह इस शानदार काम को बेकार कर सकता था।

उसने अल्लाह के बनाये इस जीव में पाप का बीज बो दिया और बहुत जल्दी ही इस पहले आदमी ने बिना कोई सन्देह किये हुए अपने पवित्र शरीर पर इस अपमानजनक बुराई का थूक ले लिया जिसे बुराई ने उसे उसके पेट में मारा।

पर दयालु अल्लाह ने जो सब चीज़ों पर विजय प्राप्त करने वाला है उस खराब मॉस को निकाल फेंका और उसे जमीन पर गिरा दिया। इस तरह आदमी में नाभि का जन्म हुआ।

वह गन्दा मॉस जो बुराई के थूक की वजह से गन्दा था अल्लाह ने उसे मिट्टी में से उठा कर फिर से सॅवारा और एक नया जीवन दे दिया। और लगभग उसी समय अल्लाह ने कुत्ते को बनाया – आधा आदमी के शरीर से और आधा बुराई के थूक से।

इसलिये कोई भी मुसलमान कुत्ते को अपने घर में सहन नहीं करता पर फिर भी वह उसे कोई नुकसान नहीं पहुॅचाता। कुत्ते की एक आदमी प्रति वफादारी इसलिये है क्योंकि वह उसके आधे हिस्से से बना है और उसका जंगलीपन और असभ्यता इसलिये है कि वह आधा बुराई से बना है।

पूर्वी देशों में कुत्ते बढ़ते नहीं और हालॉकि मुसलमान उसकी रक्षा करते हैं फिर भी वह उनके कठोरदिल दुश्मन है।

2 भाई और बहिन[6]

एक बार की बात है कि एक बूढ़ा बादशाह था। उसके एक बेटा था और एक बेटी थी। समय पूरा होने पर वह मर गया। उसके बाद उसका बेटा गद्दी पर बैठा। गद्दी पर बैठे उसे अभी बहुत दिन नहीं हुए थे कि उसने अपने पिता का सारा पैसा खत्म कर दिया।

एक दिन उसने अपनी बहिन से कहा — "मेरी प्यारी बहिन। हमने अपने पिता जी का सारा पैसा खर्च कर दिया है। अगर यह बात लोगों को पता चल जाती है कि हमारे पास अब कोई पैसा नहीं है तो हमको यहॉ से जाना पड़ेगा क्योंकि हम किसी से ऑखें नहीं मिला पायेंगे। इसलिये इससे पहले कि हमें देर हो जाये हमें खुद ही यहॉ से शान्तिपूर्वक निकल जाना चाहिये।"

सो उन्होंने अपना सामान इकट्ठा किया और उसी रात अपना महल छोड़ दिया। वे चलते गये चलते गये। न जाने कहॉ। न जाने किधर। आखिर वे एक बहुत बड़े मैदान में पहुॅच गये जिसके ओर छोर का कोई पता नहीं था।

दोनों बेचारे भीषण गर्मी से परेशान थे। अपनी गर्मी को शान्त करने के लिये उनको वहॉ एक तालाब दिखायी दे गया। भाई ने बहिन से कहा — "बहिन। बिना पानी पिये मैं तो यहॉ से एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता।"

---

[6] The Brother and Sister. Tale No 2

बहिन बोली — "पर भैया। क्या पता यह पानी है भी या नहीं। हम अपनी प्यास को अब तक सहते चले आ रहे हैं तो हम अपनी प्यास कुछ दूर तक तो और सह ही सकते हैं। हो सकता है कि तब हमें पानी मिल जाये।"

भाई बोला — "पर बहिन। मैं तो अब बिना पानी पिये एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता। मुझे ज़िन्दा रहने के लिये पानी चाहिये ही चाहिये।"

यह सुन कर बहिन ने उसे थोड़ा सा पानी ला कर दे दिया। भाई ने उसे बड़ी जल्दी जल्दी पी लिया। जैसे ही उसने पानी पी कर खत्म किया तो वह तो तुरन्त ही एक बारहसिंगे में बदल गया।

बहिन यह देख कर बहुत दुखी हुई और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। पर अब तो जो कुछ हो चुका था वह तो हो चुका था उसे बदला नहीं जा सकता था सो उन लोगों ने फिर से अपनी यात्रा शुरू कर दी।

वे उस बड़े से मैदान में घूमते घूमते एक पेड़ के पास एक स्रोत के पास आये यहॉ उन लोगों ने सुस्ताने का निश्चय किया। बारहसिंगा अपनी बहिन से बोला — "बहिन तुम इस पेड़ पर चढ़ जाओ मैं कुछ खाना ढूँढने का इन्तजाम करता हूँ।"

बहिन पेड़ पर चढ़ गयी और बारहसिंगा आस पास में खाना ढूँढने चला गया। जल्दी ही वह एक बड़ा खरगोश पकड़ लाया जिसे

उसकी बहिन ने उसके लिये पकाया। इस तरह से वे दोनों कई हफ्ते तक रहते रहे।

अब कुछ ऐसा इत्तफाक हुआ कि बादशाह के घोड़े उसी पेड़ के पास से स्रोत से पानी पीने के आदी थे जहॉ वे भाई बहिन ठहरे हुए थे। शाम को राजा के नौकर घोड़ों को पानी पिलाने के लिये लाये और उनके पीने के पानी एक बर्तन में भर दिया।

जब वे पानी पी रहे थे तो उन्होंने उस साफ पानी में बहिन की परछाई देखी तो वे डर कर पीछे हट गये। यह देख कर नौकरों को लगा कि यह पानी शायद साफ नहीं है। तो उन्होंने उस पानी को फेंक कर दूसरा पानी भरा। फिर भी घोड़ों ने उसमें से पानी नहीं पिया तो नौकरों ने इस तर्कहीन घटना को बादशाह से जा कर कहा।

एक सईस बोला — "शायद पानी गन्दा था।"

नौकर बोले — "नहीं। वह पानी गन्दा नहीं था। क्योंकि हमने तो इनके पानी पीने के बर्तन को खाली कर के फिर से भर दिया था।"

बादशाह बोले — "जाओ और फिर से जा कर चारों तरफ देखो। हो सकता है कि आसपास में कोई चीज़ ऐसी हो जिसकी वजह से ये डर रहे हों।"

सो वे बेचारे फिर वहॉ गये तो उन्होंने चारों तरफ देखा तो देखा कि एक लड़की पेड़ की चोटी पर बैठी हुई है। वे तुरन्त ही अपने मालिक के पास वापस गये और अपनी खोज की कहानी सुनायी।

बादशाह को इसमें बड़ी रुचि हो गयी तो वह उस जगह पर आया जहॉ पर उसके घोड़े पानी नहीं पी रहे थे। उसने सिर ऊपर उठा कर देखा तो देखा कि पेड़ पर तो चॉद जैसे सुन्दर मुखड़े वाली एक लड़की बैठी हुई है।

उसे देख कर उसने पूछा — "क्या तुम कोई आत्मा हो या फिर कोई परी हो?"

लड़की बोली — "न तो मैं कोई आत्मा हूँ और न ही कोई परी। मैं तो आदमी का बच्चा हूँ।"

बादशाह ने उससे नीचे उतरने के लिये बहुत कहा पर सब बेकार। उसके अन्दर नीचे उतरने का साहस ही नहीं हुआ। इस बात पर बादशाह को गुस्सा आ गया तो उन्होंने अपने नौकरों से उस पेड़ को काट गिराने के लिये कहा।

नौकरों ने अपनी कुल्हाड़िया लीं और उसे इधर उधर से काटना शुरू कर दिया। जब वह पेड़ गिरने को था तो रात हो गयी। सो उन्हें अपना काम अगले दिन पर छोड़ देना पड़ा।

वे अभी मुश्किल से ही वहॉ से गये ही थे कि बारहसिंगा जंगल से आ गया और पेड़ की हालत देख कर अपनी बहिन से पूछा कि वहॉ क्या हुआ था।

बारहसिंगा ने जब उसकी कहानी सुनी तो बोला — "यह तुमने ठीक किया। किसी भी हालत में नीचे नहीं आना।"

फिर बारहसिंगा पेड़ के नीचे गया और उसे चाटा तो लो पेड़ का तना तो पहले से भी अधिक मोटा और मजबूत हो गया।

अगली सुबह बारहसिंगा फिर से जंगल चला गया। अगले दिन बादशाह के लोग फिर वहीं आये तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गये कि उस पेड़ का तना जहॉ जहॉ उन्होंने काटा था वहॉ सब ठीक हो गया है और यही नहीं वह तना और मोटा भी हो गया है।

खैर उन्होंने अपना काम फिर से करना शुरू कर दिया। पर अभी उन्होंने अपना काम केवल आधा ही किया था कि फिर शाम हो गयी।

थोड़े में कहो तो जब नौकर लोग चले गये तो जंगल में से बारहसिंगा फिर से आ गया उसने फिर से तने को चाटा और वह तना फिर से वही हुआ – तना केवल ठीक ही नहीं हुआ बल्कि और मोटा और मजबूत भी हो गया।

अगले दिन सुबह फिर ऐसा ही हुआ। जब बारहसिंगा जंगल चला गया तो बादशाह वहॉ आया। उसने देखा कि पेड़ तो साबुत था और और अधिक मोटा हो गया था। तो उसने कोई दूसरी तरकीब सोची जिससे वह अपना काम पूरा कर सके।

वह एक बुढ़िया के पास गया वहॉ जा कर एक जादूगरनी को आवाज लगायी तो आवाज सुन कर एक बुढ़िया बाहर निकल कर

आयी। बादशाह ने उसे अपनी कहानी बतायी और कहा कि अगर वह एक लड़की को पेड़ पर से नीचे उतार देगी तो वह उसे बहुत सारा खजाना देगा।

जादूगरनी ने तुरन्त ही यह काम स्वीकार कर लिया और हाथ में एक तीन टॉगों वाला चूल्हा और एक बर्तन ले कर और कुछ और चीज़ें ले कर उधर चल दी। उसने पहले तीन टॉगों वाला चूल्हा जमीन पर रखा और फिर उसके ऊपर बर्तन रख दिया। पर बर्तन भी उलटा रखा।

उसने स्रोत से पानी लेते हुए अन्धे होने का नाटक करते हुए पानी को बर्तन में नहीं बल्कि उसके पास डाल दिया। लड़की ने यह सोचते हुए कि वह बुढ़िया तो अन्धी थी उसे पुकारा और कहा — "मॉ जी। आपने अपना बर्तन उलटा रखा हुआ है इसलिये आपका पानी नीचे बिखर रहा है।"

"ओह प्यारी बेटी। तुम कहॉ हो। मैं तुम्हें देख नहीं सकती। मैं मैले कपड़े धोने के लिये यहॉ ले कर आयी हूॅ। अल्लाह के लिये यहॉ आ कर मेरा बर्तन सीधा कर जाओ ताकि मैं अपने कपड़े ठीक से धो सकूॅ।"

पर सौभाग्य से लड़की को बारहसिंगे की चेतावनी याद रही सो वह वहीं बैठी रही।

अगले दिन वह जादूगरनी वहॉ फिर आयी। वह उसी पेड़ के नीचे आ कर बैठ गयी। उसने वहॉ आग जलायी और अपना आटा

निकाला। पर उसने आटे की बजाय राख को चलनी में डाल कर छानना शुरू कर दिया।

पेड़ पर चढ़ी लड़की ने जब यह देखा तो उसके मुँह से निकला — "ओह यह बेचारी अन्धी बुढ़िया। मॉ जी। आपने चलनी में आटे की बजाय राख डाल रखी है।"

जादूगरनी बोली — "बेटी मैं अन्धी हूँ। मैं देख नहीं सकती। क्या तुम मेहरबानी कर के यहॉ आ कर मेरी सहायता कर सकती हो।"

पर बारहसिंगे की बात ध्यान में रख कर लड़की वहीं पेड़ पर बैठी रही और नीचे नहीं उतरी। इस तरह एक बार फिर वह बुढ़िया उसे पेड़ से नीचे नहीं उतार सकी।

तीसरे दिन वह बुढ़िया फिर उस पेड़ के नीचे आयी। इस बार वह एक बकरा ले कर आयी थी। पर जैसे ही उसने उसे काटने के लिये अपना चाकू उठाया तो उसने बजाय उसके फल से उसे काटने के उसके गले में चाकू का हैन्डिल घुसा दिया।

लड़की से उस बेचारे बकरे का दर्द नहीं सहा गया और वह सब कुछ भूल कर तुरन्त ही बकरे को दर्द से बचाने के लिये नीचे उतर आयी।

पर तुरन्त ही उसको अपने इस काम के लिये पछताना भी पड़ा। क्योंकि जैसे ही उसने जमीन पर पैर रखा बादशाह जो पेड़ के

पीछे खड़ा हुआ था बाहर निकल आया उस पर कूद पड़ा और उसको अपने महल ले गया।

लड़की ने बादशाह की ऑखों में एक ऐसी इच्छा देखी जैसे कि बादशाह उससे शादी करने के लिये तुरन्त ही तैयार था। पर उसने मना कर दिया जब तक उसका भाई उसके पास नहीं लाया जाता वह उससे शादी नहीं कर सकती।

बादशाह ने उस बारहसिंगे को ढूँढने के लिये चारों तरफ अपने नौकर भेज दिये। जल्दी ही वे उसे पकड़ कर महल ले आये।

जब यह सब हो गया तो उसके बाद से दोनों भाई बहिन ने एक दूसरे का साथ नहीं छोड़ा। वे एक साथ सोते थे एक साथ उठते थे।

जब लड़की की शादी बादशाह से हुई तो भी भाई ने उसका साथ नहीं छोड़ा। पर रात को जब लड़की अपने सोने वाले कमरे में जाने लगी तो बारहसिंगे ने अपने अगले खुर उसे धीरे से मारे और उससे कहा "यह जीजा जी की हड्डी है और यह बहिन की हड्डी है।"

इस तरह से समय चलता रहा। कहानी का समय तो और भी जल्दी जाता है और प्रेमियों का समय तो उड़ता है। हमारे प्रेमी बहुत अच्छी तरह से रहते पर वहॉ एक धब्बा था और वह थी महल की एक नीग्रो स्त्री जो वहॉ दासी का काम करती थी।

वह रानी से बहुत जलती थी क्योंकि बादशाह ने अपनी पत्नी के लिये पेड़ वाली एक लड़की को चुना था न कि उसे खुद को। अब यह स्त्री बदला लेने का मौका ढूँढ रही थी जो उसे बहुत जल्दी ही मिलने वाला था।

महल के पास ही के बागीचे में एक बहुत बड़ा तालाब था। बादशाह की पत्नी यहॉ अक्सर अपना समय गुजारने के लिये आ जाया करती थी। उसके हाथ में सोने का एक प्याला होता और पॉव में चॉदी के जूते।

एक दिन जब वह तालाब के पास खड़ी हुई थी तो उस दासी ने अपनी छिपी हुई जगह से उसे धक्का दे कर तालाब में गिरा दिया। वह बेचारी सिर के बल तालाब में गिर पड़ी।

वह काली स्त्री फिर महल पहुँची जैसे कुछ हुआ ही न हो। उसने अपनी मालकिन के कपड़े पहने और मालकिन की जगह पर बैठ गयी।

रात हुई तो बादशाह आया और उसने अपनी नकली पत्नी से पूछा कि वह इतनी काली कैसे हो गयी। तो वह बोली — "मैं अपने बागीचे में घूम रही थी कि सूरज की तेज़ धूप से मेरा चेहरा काला पड़ गया।"

बादशाह को कोई शक नहीं हुआ सो उसने उसे अपने पास खींच लिया और उसे तसल्ली दी। पर बारहसिंगा वहॉ आ गया और धोखे को पहचान गया। उसने दोनों के पैरों को अपने आगे वाले

खुरों से नर्मी से सहलाया और बोला "यह जीजा जी की हड्डी है और यह बहिन की हड्डी है।"

दासी को तो इस बात का कुछ पता नहीं था सो वह डर गयी। साथ में उसे यह डर भी लगा कि कहीं बारहसिंगे के सामने उसकी पोल न खुल जाये सो उसने उस बारहसिंगे से पीछा छुड़ाने की कोई तरकीब सोचनी शुरू कर दी।

अगले दिन उसने बीमारी का बहाना किया और पैसे और मीठे शब्दों के ज़ोर पर डाक्टरों को बादशाह से यह कहने पर मजबूर कर दिया कि उसकी पत्नी बहुत बीमार थी। और केवल बारहसिंगे का दिल खाने से ही वह ठीक हो सकती थी।

बादशाह अपनी नकली पत्नी के पास गया और पूछा कि क्या वह अपने बारहसिंगे भाई का दिल खायेगी। ऐसा करने से क्या उसे दुख नहीं होगा।

उसने जवाब दिया — "मैं क्या करूॅ जब उसे खाना है तो खाना ही है। अगर मैं मर गयी तो भी उसका बुरा होगा। तो इससे अच्छा तो यह है कि मुझे ही उसे मार देना चाहिये। तब मैं बच जाऊॅगी और मरने के बाद वह भी अपने जानवर के रूप से निकल आयेगा।"

बादशाह ने उसे काटने के लिये अपने नौकरों को चाकू तेज़ करने का हुक्म दे दिया और पानी गर्म होने के लिये रखवा दिया।

बेचारे बारहसिंगे ने महल में हलचल देखी तो वह उस हलचल का मतलब समझ गया। वह भागा भागा बागीचे के तालाब पर गया और जा कर अपनी बहिन से यह तीन बार कहा —

चाकू तेज़ किया जा रहा है पानी उबाला जा रहा है
मेरी बहिन जल्दी करो मेरी सहायता करो

तीनों बार एक मछली के अन्दर से आवाज आयी —

मैं यहॉ मछली के पेट में हूँ मेरे हाथ में सोने का प्याला है
मेरे पैरों में चॉदी के जूते हैं मेरी गोद में छोटा बादशाह है

क्योंकि बादशाह की पत्नी को मछली के पेट में होने पर भी एक बेटा हो चुका था उसने इसलिये ऐसा कहा। उधर बादशाह खुद कुछ नौकरों को ले कर बारहसिंगे को पकड़ने गया था कि उसने बारहसिंगे और किसी लड़की की आवाज सुनी।

अब उस तालाब का पानी निकालना तो कुछ ही मिनटों का काम था। सो मछली भी निकाल ली गयी। उसका पेट चीरा गया तो लो देखो तो बादशाह की असली पत्नी अपने छोटे बादशाह को लिये उसमें बैठी थी।

बहुत खुश खुश बादशाह अपनी पत्नी और बेटे को ले कर महल लौटा। उसकी पत्नी के हाथ में अभी भी सोने का प्याला था और पैरों में चॉदी के जूते थे। बादशाह ने महल आ कर यह घटना महल के सभी लोगों को बतायी।

इस बीच बारहसिंगे ने मछली का थोड़ा सा खून चाट लिया था सो वह जादुई ढंग से बारहसिंगे से आदमी में बदल चुका था। वह भी खुशी के मारे दौड़ता हुआ अपनी बहिन के पास चला गया। बहिन ने भी जब अपने भाई को आदमी के रूप में देखा तो सबकी खुशी दोगुनी हो गयी।

अब बादशाह ने उस अरब स्त्री को अपने सामने बुलवाया और उससे पूछा कि उसे क्या चाहिये – 40 तलवारें या फिर 40 घोड़े। उसने जवाब दिया — "चालीस तलवारें मेरे दुश्मनों का गला काटने के लिये। और चालीस घोड़े मेरी सवारी के लिये।"

उसके बाद वह नीच स्त्री 40 घोड़ों की पूँछों से बॉध दी गयी और वे घोड़े उसे भगा कर ले गये जिससे उसके शरीर के चिथड़े उड़ गये।

उसके बादशाह ने अपनी शादी दोबारा मनायी। बारहसिंगे राजकुमार को भी उसके दरबारियों में से एक सुन्दर लड़की मिल गयी। 40 दिन और 40 रातों तक इन दोनों की शादियों का उत्सव मनता रहा।

जैसे वे खाते रहे पीते रहे और अपना उद्देश्य पूरा करते रहे उसी प्रकार हम भी खाते रहें पीते रहें और अपना उद्देश्य पूरा करते रहें जिसके लिये हम यहॉ भेजे गये हैं।

3 डर[7]

यह बहुत समय पुरानी बात है कि एक स्त्री थी और उसका एक बेटा था। एक दिन शाम को दोनों साथ साथ बैठे हुए थे तो मॉ ने अपने बेटे से कहा — "बेटा ज़रा दरवाजा बन्द कर दे। मुझे डर लग रहा है।"

बच्चे ने अपनी मॉ से पूछा — "मॉ डर क्या होता है।"

मॉ बोली — "जब कोई डरता है।"

बच्चे ने सोचा "यह डर क्या हो सकता है। मैं जा कर पता करता हूॅ।"

सो वह घर से चल दिया और एक पहाड़ पर आ पहुॅचा जहॉ उसने चालीस डाकू देखे। उन्होंने वहॉ आग जलायी और उसके चारों ओर बैठ गये। नौजवान उनके पास गया और उन्हें सलाम किया तो उनमें से एक डाकू ने पूछा —

"यहॉ तो कोई चिड़िया भी आने का साहस नहीं करती यहॉ से कोई कारवॉ भी नहीं गुजरता तो यहॉ तुम्हारे आने का साहस कैसे हुआ?"

नौजवान बोला — "मैं डर की तलाश में हूॅ। मुझे डर देखना है।"

"डर तो वहॉ है जहॉ हम हैं।"

[7] Fear. Tale o 3

नौजवान ने पूछा "कहॉ।"

तब डाकू ने कहा — "यह केटली लो आटा लो घी लो चीनी लो और यहीं पास में कब्रिस्तान है इनको ले कर वहॉ चले जाओ और जा कर इनसे हलवा बना लाओ।"

नौजवान बोला "ठीक है।" और वह सब सामान ले कर पास के कब्रस्तिान में चला गया। वहॉ पहुँच कर उसने आग जलायी और हलवा बनाना शुरू कर दिया।

जब वह हलवा बना रहा था तो एक कब्र में से एक हाथ निकला और एक आवाज आयी — "क्या इसमें से मुझे कुछ नहीं मिलेगा?"

उसने उसके हाथ पर चम्मच मार कर कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। ज़िन्दा लोगों से पहले मैं मरे हुओं को खिलाऊँगा।"

यह सुन कर वह हाथ वहॉ से गायब हो गया। उधर नौजवान भी अपना हलवा और सब सामान उठा कर डाकुओं के पास चला गया। डाकुओं ने उससे पूछा — "क्या तुम्हें वहॉ डर मिला?"

नौजवान बोला — "नहीं मुझे वहॉ डर तो नहीं मिला बस केवल एक हाथ मिला जो मेरे सामने प्रगट हुआ और हलवा मॉग रहा था पर जब मैंने उस पर एक चम्मच मारी तो वह गायब हो गया। उसके बाद मैंने उसे नहीं देखा।"

डाकुओं को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ। तब उनमें से एक दूसरा डाकू बोला — "यहॉ से पास में ही एक सुनसान इमारत

है। तुम वहॉ चले जाओ। मुझे विश्वास है कि तुम्हें वहॉ डर अवश्य ही मिल जायेगा।"

वह उस घर में गया। जब वह उसमें अन्दर घुसा तो उसने उसमें एक ऊॅचा से चबूतरा देखा जिस पर एक झूला रखा हुआ था और उसमें एक बच्चा रो रहा था। एक कमरे में एक लड़की इधर से उधर घूम रही थी।

उसे देख कर वह लड़की उसके पास आयी और उससे बोली — तुम मुझे अपने कन्धे पर चढ़ा लो। बच्चा रो रहा है और मुझे उसे चुप कराना है।"

नौजवान राजी हो गया और वह लड़की बच्चे को ले कर उसके कन्धे पर चढ़ गयी। वहॉ बैठ कर वह तो बच्चे में उलझ गयी पर वह अपने दोनों पैरों से उसकी गरदन दबाने लगी जब तक कि नौजवान को गला घुटने की सी घुटन महसूस नहीं होने लगी।

घुटन से वह उछल पड़ा और उस उछलने से वह गिर पड़ा जिससे वह लड़की उसके कन्धे से कूद गयी और फिर तुरन्त ही वह गायब भी हो गयी। जैसे ही वह गयी उसकी बॉह से एक बाजूबन्द खुल कर नीचे गिर गया। उसने वह बाजूबन्द उठा लिया और घर छोड़ कर चला गया।

जब वह उसे ले कर सड़क पर जा रहा था तो उसे एक ज्यू मिला जो उस बाजूबन्द को देख कर बोला "अरे यह बाजूबन्द तो मेरा है।"

नौजवान बोला — "नहीं यह मेरा है।"

ज्यू बोला — तो चलो फिर काज़ी के पास चलते हैं। वही फैसला करेगा कि यह किसका है। अगर वह यह तुम्हें दे दे देता है तो यह तुम्हारा होगा और अगर वह इसे मुझे दे देगा तो फिर इसे मैं रखूॅगा।"

इस तरह से आपस में तय कर के वे काज़ी के पास पहुॅचे। काज़ी ने कहा — "यह बाजूबन्द उसी का होगा जो यह साबित करेगा कि यह उसका है।"

उन दोनों में से कोई भी इस बात को साबित नहीं कर सका कि वह बाजूबन्द उसका है सो काज़ी को यह फैसला सुनाना पड़ा कि वह बाजूबन्द तब तक उसके पास ही रहेगा जब तक इसका दूसरा बाजूबन्द ला कर नहीं दिखाया जाता। जो कोई भी उसे ले कर आयेगा यह बाजूबन्द उसी का हो जायेगा।

अब ज्यू और नौजवान दोनों ही वहॉ से चले गये।

नौजवान समुद्र के कनारे की ओर चला गया। वहॉ उसने देखा कि एक जहाज़ पानी में ऊपर नीचे उछल रहा है और उसमें से डर के मारे लोगों के रोने की आवाजें आ रही हैं तो वह वहीं किनारे पर से ही चिल्लाया — "क्या तुम लोगों को डर मिल गया है?"

लोग चिल्ला कर बोले — "अफसोस हम लोग डूब रहे हैं।"

नौजवान ने तुरन्त ही अपने कपड़े उतारे और पानी में कूद पड़ा और जहाज़ की ओर तैर गया।जब वह वहॉ पहुॅचा तो लोगों ने

उससे कहा कि कोई उनके जहाज़ को इधर उधर हिला रहा है। हमें बहुत डर लग रहा है।

नौजवान ने एक रस्सी अपनी कमर से बॉधी और तुरन्त ही समुद्र की तली तक पहुॅच गया। वहॉ उसे समुद्र की बेटी डिनीज़ कीज़ी[8] मिल गयी जो उनका जहाज़ हिला रही थी।

वह जा कर उसे ऊपर गिर गया और उसे कस कर जकड़ कर वहॉ से हटा दिया। उसके बाद वह सतह पर आ गया और उनसे पूछा कि "क्या यही आप सबका डर था?"

लेकिन बिना उनका जवाब सुने ही वह किनारे की ओर तैर आया। अपने कपड़े पहने और वहॉ से चला गया।

वह फिर डर की खोज में चल दिया। अबकी बार वह एक बागीचे में आया जिसके सामने एक फव्वारा खड़ा हुआ था। उसने सोचा कि वह उस बागीचे में जा कर थोड़ा आराम कर लेता है सो वह बागीचे में चला गया।

फव्वारे के चारों तरफ तीन कबूतर बैठे हुए थे। वे उसके पानी में डुबकी मारते थे और फिर जैसे ही वह पानी में से बाहर आ कर अपने पंख फड़फड़ाते थे वे एक सुन्दर लड़की में बदल जाते थे। जब तीनों कबूतर लड़कियों में बदल गये तो उन्होंने एक मेज सजायी जिस पर पीने के लिये गिलास लगे हुए थे।

[8] Denize Kyzy – daughter of the Sea

जब उनमें से पहली लड़की ने गिलास अपने होठों से लगाया तो दूसरी ने पूछा — "तुम किसकी तन्दुरुस्ती के लिये पी रही हो।"

तो उसने जवाब दिया — "उस नौजवान के लिये जो कब्रिस्तान में हलवा बना रहा था और जिसके आगे कब्र में से एक हाथ उठा और फिर भी वह उससे नहीं डरा।"

जब दूसरी लड़की ने अपना गिलास अपने मुँह से लगाया तो दूसरी दो लड़कियों ने उससे पूछा — "तुम किसकी तन्दुरुस्ती के लिये पी रही हो

उसने जवाब दिया — "उसकी तन्दुरुस्ती के लिये जिसके कन्धों पर मैं खड़ी थी। मैंने तो उसका गला करीब करीब घोट ही दिया था परफिर भी वह डरा नहीं। बस उसी के लिये।"

फिर तीसरी लड़की ने अपना गिलास अपने मुँह से लगाया तो बाकी दो ने उससे पूछा — "और तुम किसकी तन्दुरुस्ती के लिये पी रही हो?"

तीसरी बोली — "समुद्र में मैंने एक जहाज़ को इधर उधर उछाला तो एक नौजवान आया और मुझे पकड़ कर इतना मारा कि मैं तो बस मर ही गयी थी। मैं उसकी तन्दुरुस्ती के लिये पीती हूँ।"

तीसरी लड़की ने अपनी बात बस खत्म ही की थी कि नौजवान खुद वहॉ प्रगट हो गया और बोला — "और वह नौजवान मैं हूँ।"

तीनों लड़कियॉ उसे गले लगाने के लिये उठी पड़ीं।

वह बोला — "काज़ी के पास मेरा एक बाजूबन्द है जो तुममें से किसी एक के हाथों से गिर गया था। एक ज्यू उसे मुझसे लेना चाह रहा था पर मैंने उसे देने से मना कर दिया तो काज़ी ने कहा कि जो कोई भी इसका दूसरा बाजूबन्द ले कर आयेगा यह बाजूबन्द भी उसी को मिलेगा। तो अब मैं उसके साथी की तलाश में हूॅ।"

वे लड़कियॉ उसे एक गुफा में ले गयीं जहॉ शाही ढंग से सजे हुए बहुत सारे कमरे थे। हर कमरा सोने से और बहुत कीमती चीज़ों से भरा हुआ था। लड़कियों ने उसे पहले बाजूबन्द का दूसरा साथी दे दिया तो वह तुरन्त ही उसे ले कर काज़ी के पास गया।

उसने उसे काज़ी को दिखा कर उससे अपना पहले वाला बाजूबन्द लिया और फिर से वापस गुफा में आया। लड़कियों ने कहा — "अब तुम हमसे अलग नहीं हो सकते।"

नौजवान बोला — "यह तो अच्छा है पर मैं डर खोजने के लिये निकला हूॅ और जब तक मैं डर को खोज नहीं कर लूॅगा तब तक मैं चैन से नहीं बैठूॅगा।"

हालॉकि उन्होंने उसे बहुत रोकने की कोशिश की पर वह यह कह कर वह वहॉ से चल दिया। चलते चलते वह एक ऐसी जगह आ गया जहॉ बहुत भीड़ लगी हुई थी। वहॉ आ कर उसने पूछा कि वहॉ इतनी भीड़ क्यों लगी है।

लोगों ने उसे बताया कि उनका शाह मर गया है। एक कबूतर छोड़ दिया गया है और वह अब जिस आदमी के सिर पर बैठ

जायेगा उसी को शाह बना दिया जायेगा। नौजवान उन सब उत्सुक देखने वालों की भीड़ में खड़ा रहा। कबूतर छोड़ दिया गया था और वह अब हवा में चारों ओर उड़ रहा था।

सब लोग यह देखने के लिये उत्सुक थे कि वह किसके सिर पर बैठेगा। आखिर वह उस नौजवान के सिर पर आ कर बैठ गया। तुरन्त ही उसे वहॉ का शाह घोषित कर दिया गया।

पर क्योंकि वह यह शान वाला पद स्वीकार नहीं कर रहा था तो एक दूसरा कबूतर छोड़ा गया। इत्तफाक की बात कि यह कबूतर भी नौजवान के सिर पर ही आ कर बैठ गया। तो फिर तीसरा कबूतर छोड़ा गया तो वह भी उसी के सिर पर आ कर बैठ गया।

अब नौजवान के पास वहॉ का शाह बनने के अलावा और कोई चारा नहीं था। फिर भी वह भीड़ को अपने आपको महल ले जाने से रोकने के लिये बोला — "मैं डर खोजने निकला हूॅ और मैं तुम्हारा शाह नहीं बन सकता"

जो उसने अभी कहा वह बात शाह की विधवा तक पहुॅचायी गयी तो उसने कहा — "आज रात उसे यहॉ का शाह का पद ग्रहण करने दो कल मैं उसकी मुलाकात डर से करवाऊॅगी।"

नौजवान राजी हो गया हालॉकि उसे जो भी शाह मर गया था उसके बारे में कोई बड़ी अक्लमन्दी की बात सुनने को नहीं मिली जैसे वह पहले दिन ज़िन्दा था और अगले दिन ही वह मर गया था।

महल में घूमते घूमते वह एक ऐसे कमरे में आ पहुँचा जिसमें उसका ताबूत बनवाया जा रहा था और पानी गर्म किया जा रहा था।

वह शान्ति से वहॉ सो तो गया पर जैसे ही उसके नौकर वहॉ से गये वह उठा उसने अपना ताबूत दीवार के सहारे रख दिया और फिर उसमें आग लगा कर उसे जला कर राख कर दिया। उसके बाद वह आराम से लेट गया और गहरी नींद सो गया।

अगले दिन जब सुबह हुई तो नौकर लोग नये राजा की लाश को लेने के लिये आये पर जब उन्होंने राजा को आराम से सोते हुए देखा तो बहुत खुश हुए। इस अच्छी खबर को सुनाने के लिये वह तुरन्त ही सुलताना के पास गये।

फिर सुलताना ने रसोइये को बुलाया और उससे कहा कि वह सूप की प्लेट में एक ज़िन्दा चिड़िया डाल दे। शाम हुई शाह और सुलताना दोनों खाना खाने बैठे। जब सूप की प्लेट आयी तो सुलताना ने शाह से कहा कि वह उस प्लेट का ढक्कन खोले।

नौजवान बोला — "नहीं। मुझे सूप की कोई इच्छा नहीं है।"

सुलताना बोली — "पर आप ढक्कन तो खोलें।"

सुलताना के बार बार कहने पर उसने अपना हाथ बढ़ाया और प्लेट का ढक्कन खोला तो उसमें से एक चिड़िया उड़ कर भाग गयी। यह घटना इतनी अचानक थी कि एक पल को उसे डर का धक्का लगा।

तभी सुलताना चिल्लायी — "देखा यही है डर।"

नौजवान बोला — "क्या यही डर है।"

सुलताना बोली — "आप तो सचमुच में डर गये थे।"

उसके बाद शादी की दावत की तैयारियॉ की गयीं जो **40** दिन और **40** रात तक चलीं। फिर वह अपनी मॉ को भी वहीं ले आया और सब लोग खुशी खुशी रहे।

4 तीन सन्तरा परी[9]

बहुत पुराने समय में हर चीज़ बहुतायत से मिलती थी तो हम लोग सारा दिन खाते पीते रहते थे फिर भी रात को भूखे ही सोते थे। ऐसे समय में एक बादशाह थे जो हमेशा बहुत दुखी रहते थे क्योंकि उनके कोई बेटा नहीं था।

एक दिन दुखी दिल से वह अपने लाला यानी वज़ीर के साथ घूमने निकले। रास्ते में वह कौफी और तम्बाकू पीते जाते थे। चलते चलते वे एक बड़ी घाटी में आ गये।

वे सुस्ताने के लिये एक जगह बैठ गये कि उन्हें उस घाटी में कोड़े मारने की आवाज आयी। तभी उनके सामने एक सफेद दाढ़ी वाला दरवेश हरे कपड़े और पीले जूते पहने हुए प्रगट हो गया।

बादशाह और उनका साथी उसे देख कर डर गये पर जब दरवेश उनके पास आया और उसने उनको "सलाम आलेकुम" कह कर सलाम किया तब उनकी कुछ हिम्मत बॅधी और उन्होंने उसका जवाब दिया "वाले कुम सलाम"।

दरवेश ने पूछा — "बादशाह सलामत। कहॉ जा रहे हैं।"

बादशाह बोले — "अगर आप यह जानते हैं कि मैं बादशाह हूॅ तो आप मेरे दर्द की दवा भी जरूर जानते हांगे।"

---

[9] The Three Orange Peris. Tale No 4
[My Note : This story is like the frame story of the Italian folktale book "Il Pentamerone" by Giambattista Basile, 1636, 50 tales. Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com]

अपनी छाती में से एक सेब निकालते हुए और उसे बादशाह को देते हुए दरवेश बोला — "इसका एक आधा हिस्सा सुलताना को खाने के लिये दे दीजियेगा और दूसरा आधा हिस्सा आप खा लीजियेगा।" और तुरन्त ही गायब हो गया।

बादशाह वहॉ से घर चले गये। उन्होंने उस सेब का आधा हिस्सा रानी को दे दिया और बाकी का बचा आधा हिस्सा खुद खा लिया। समय आने पर महल में एक शाहज़ादा पैदा हुआ। बादशाह तो खुशी के मारे पागल हो उठे।

उन्होंने बहुत सारा दान दिया बहुत सारे बन्दियों को छोड़ दिया और अपने राज्य के हर आदमी को खाना खिलाया।

शाहज़ादा धीरे धीरे बढ़ने लगा। वह अब **14** साल का हो गया था। एक दिन शाहज़ादे ने अपने पिता से विनती की — "बादशाह और मेरे पिता। आप मेरे लिये एक छोटा सा संगमरमर का महल बनवा दीजिये जिसमें दो फव्वारे हों जिसमें से एक में से तेल बहता हो और दूसरे में से शहद बहता हो।

बादशाह अपने एकलौते बेटे को बहुत प्यार करता था सो उसने उसके लिये वैसा ही संगमरमर का महल बनवाने का हुक्म दे दिया जैसा वह चाहता था – दो फव्वारे वाला महल एक तेल का और एक शहद का।

एक बार शाहज़ादा अपने महल में बैठा हुआ अपने दोनों फव्वारों की तरफ देख रहा था कि एक बुढ़िया अपना जग ले कर

वहॉ आयी ताकि वह वहॉ के फव्वारों में से एक में से उसे अपने लिये भर सके। शाहज़ादे ने तुरन्त ही एक पत्थर उठाया और उसके जग का निशाना बॉध कर फेंक दिया।

उसका जग टूट गया। बिना कुछ कहे उसने अपना हाथ खींच लिया। अगले दिन वह फिर वहॉ आयी और जैसे ही वह अपना जग फिर से वहॉ भरने लगी तो शाहज़ादे ने फिर से एक पत्थर उठाया और उसके जग में मार दिया।

उसका जग फिर टूट गया। बिना कुछ कहे वह फिर से वहॉ से चली गयी। पर तीसरे दिन वह फिर वहॉ आयी और शाहज़ादे ने तीसरी बार भी उसका जग तोड़ दिया।

इस बार बुढ़िया बोली — "मैं अल्लाह से प्रार्थना करती हूॅ कि आप तीन सन्तरों की परियों के प्यार में पड़ जायें।"

उसी पल से जैसे शाहज़ादे के शरीर में आग लग गयी। वह बेहोश हो गया। बादशाह ने जब अपने बेटे की यह हालत देखी तो उसने अपने शाही डाक्टर और होजाओं[10] को बुला भेजा। पर शाहज़ादे की बीमारी को कोई भी ठीक नहीं कर सका।

एक दिन शाहज़ादे ने अपने पिता से कहा — "ओह शाह, मेरे पिता। ये लोग मेरा कोई भला नहीं कर सकते। उनकी सब कोशिशें बेकार हैं। मुझे तीन सन्तरों की परियों से प्यार हो गया है। मैं तब तक शान्त नहीं बैठूॅगा जब तक मैं उन्हें खोज नहीं लूॅगा।

[10] Hodja – means astrooger

यह सुन कर बादशाह बेचारा उसे देख देख कर रोने लगा — "ओह मेरे बच्चे। तू तो मेरा एकलौता बच्चा है। अगर तू ही मुझे छोड़ कर चला गया तो मैं ज़िन्दा कैसे रहूँगा।"

पर शाहज़ादे की हालत सुधरने की बजाय बिगड़ती ही जा रही थी तो बादशाह ने सोचा कि अब उसे अधिक देर तक घर में रखना ठीक नहीं है। उसे उन तीन परियों की खोज में जाने देना ही चाहिये। हो सकता है कि वे तीन परियॉ उसे मिल जायें और वह वापस आ जाये।

कीमती कीमती सामान ले कर शाहज़ादा अपनी यात्रा पर चल दिया। पहाड़ियों के ऊपर घाटियों से हो कर वह अपने रास्ते पर आगे बढ़ता ही रहा।

चलते चलते वह एक बहुत बड़े मैदान में आ पहुँचा। वहॉ उसे एक बहुत बड़े साइज़ की "देव की मॉ" मिली। वह दो पहाड़ियों के ऊपर खड़ी थी – उसका एक पैर इस पहाड़ी पर था तो दूसरा पैर दूसरी पहाड़ी पर था।

वह अपने दॉतों से किशमिश चबा रही थी और उसके इस चबाने की आवाज दो दो मील तक जा रही थी। उसकी सॉसों से तूफान उठ रहा था। और उसकी बॉहें नौ नौ गज लम्बी थीं।

शाहज़ादे ने अपनी बॉहें उसकी कमर में डाल कर उससे पूछा — "मॉ जी। आप कैसी हैं।"

देव की मॉ बोली — "अगर तुमने मुझे मॉ जी न कहा होता तो मैं तुम्हें अभी खा जाती।" फिर उसने शाहज़ादे से पूछा कि वह कहॉ से आ रहा था और किधर जा रहा है।

शाहज़ादा एक लम्बी सॉस भर कर बोला — "ओह प्यारी मॉ। मेरी किस्मत इतनी खराब है कि अच्छा होता कि आपने उसके बारे में मुझसे न पूछा होता और मैंने आपको न बताया होता।"

"फिर भी कुछ कहो तो सही।"

शाहज़ादा फिर एक लम्बी सॉस भर कर बोला — "मैं तीन सन्तरों वाली परियों के प्यार में पड़ गया हूॅ। क्या आप मुझे उन तक पहुॅचने का रास्ता दिखा सकती हैं?"

देव की मॉ बोली — "शान्त। यहॉ इन शब्दों को बोलना मना है। मैं और मेरे बेटे भी उससे अपने आपको सुरक्षित रखने की कोशिश करते हैं। पर मुझे यह नहीं मालूम कि वे कहॉ रहती हैं। मेरे **40** बेटे हैं जो धरती में ऊपर नीचे घूमते रहते हैं हो सकता है कि वे उनके बारे में कुछ जानते हों।

जब शाम ढल गयी तो देव की मॉ ने अपने बेटों के आने से पहले शाहज़ादे को उठाया और उसे धीरे से मारा तो वह अब पानी का जग बन गया। यह सब उसने किया ही था कि उसके चालीसों बेटे वहॉ आ पहुॅचे।

वे आते ही चिल्लाये — "मॉ हमें किसी आदमी के मॉस की खुशबू आ रही है।"

"पर यहॉ किसी आदमी को क्या करना चाहिये। कोई यहॉ क्यों आयेगा तुम लोग भूखे होगे तुम लोग बैठो और खाना खा लो।"

सो वे सब देव खाना खाने बैठे। जब वे सब खाना खा रहे थे तो मॉ ने उनसे पूछा — "अगर धरती का कोई आदमी तुम्हारा भाई हो तो तुम क्या करोगे।"

सब एक साथ बोले — "हमें उसके साथ क्या करना चाहिये मॉ? हम उसे अपने भाई के समान प्यार करेंगे।"

अपने बेटों से आश्वासन पाने के बाद मॉ ने जग के ऊपर हाथ मारा तो उसमें से एक नौजवान प्रगट हो गया।

मॉ ने कहा — "देखो यह है तुम्हारा भाई।"

देव भाइयों ने बहुत खुशी से उसका स्वागत किया उसे अपना भाई कहा और अपने पास बिठाया। फिर उन्होंने अपनी मॉ से पूछा कि उसने उसका उनसे खाने से पहले परिचय क्यों नहीं करवाया।

मॉ बोली — "बेटे। यह वह खाना नहीं खा सकता था जिसे खाने के तुम आदी हो। धरती के लोग चिड़ियें खाते हैं गाय का बकरे का मॉस जैसी चीज़ें खाते हैं।"

तुरन्त ही उन ओस भाइयों में से एक ओस भाई उठा और एक भेड़ ले आया और ला कर नौजवान के सामने रख दी।

मॉ बोली — "बेटा तुम बहुत सीधे हो। यह खाने से पहले पकायी जाती है। उसके बाद ही इसे खाया जाता है।"

सो वह फिर से उठा और उस भेड़ को वहॉ से ले गया और कुछ ही देर में भून कर ले आया और उसे फिर से शाहज़ादे के पास रख दिया। शाहज़ादे ने उसमें से पेट भर कर खाया और बाकी बचा हुआ एक तरफ को रख दिया।

यह देख कर सब देव भाइयों ने उससे पूछा कि उसने वह सारी भेड़ क्यों नहीं खायी तो उनकी मॉ ने उन्हें बताया कि धरती के लोग उतना नहीं खाते जितना कि वे लोग खाते हैं।

उनमें से एक देव भाई बोला — "हम भी देखते हैं कि भेड़ का मॉस कैसा लगता है।" कह कर उसने उसमें से एक दो कौर ही खाये होंगे कि वह सारी भेड़ खत्म हो गयी।

अगली सुबह देव की मॉ ने अपने बेटों से कहा — "बच्चों तुम्हारा भाई बहुत दुख में है।"

"मॉ इन्हें क्या दुख है? हो सकता है कि हम उनकी कुछ सहायता कर सकें।"

मॉ बोली — "इन्हें तीन सन्तरों वाली परियों से प्यार हो गया है।"

देव भाई बोले — "हमको तो तीन सन्तरों वाली परियों के रहने की जगह मालूम नहीं। हम उनके पड़ोस में भी कभी नहीं जाते पर शायद हमारी मौसी को पता हो।"

मॉ बोली — "ठीक है। तुम लोग इन्हें वहीं ले जाओ। उसे मेरी तरफ से सलाम बोलना और कहना कि यह मेरा बेटा है और

यह मेरी इच्छा है कि अगर वह कर सकती है तो वह इसकी सहायता अवश्य करे।"

देव भाई अपनी मॉ का कहना मान कर उसे अपनी मौसी के पास ले गये और जा कर उसे सब बताया। इस बुढ़िया के 60 बेटे थे। यह भी खुद नहीं जानती थी कि तीन सन्तरों की परियॉ कहॉ रहती थीं सो उसने भी अपने बच्चों के आने का इन्तजार किया।

इसको भी यह पता नहीं था कि उसके बच्चे उस नौजवान का किस तरह से स्वागत करेंगे सो उसने भी उसे धीरे से छुआ और उसे एक बर्तन में बदल दिया। बच्चों ने आते ही कहा — "मॉ यहॉ तो किसी आदमी के मॉस की बू आ रही है।"

मॉ बोली — "हॉ हॉ वह तो तुम्हें आयेगी ही। तुम इतने दिनों से आदमी का मॉस जो खा रहे हो। आओ चलो खाना खा लो।"

उसके सब बेटे खाना खाने बैठ गये। तब मॉ ने उस बर्तन को हल्के से मारा तो साठों देव भाइयों को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसमें से तो धरती का एक छोटा सा आदमी निकल पड़ा। उन्होंने उसका दिल से स्वागत किया और बैठने के लिये जगह दी और खाने के लिये खाना दिया।

अगले दिन देवों की मॉ ने अपने बच्चों से कहा — "यह बच्चा तीन सन्तरों की परियों के प्रेम में पड़ गया है। क्या तुम लोग इसे वहॉ नहीं ले जा सकते?"

बच्चे बोले — "मॉ हम इन्हें वहॉ नहीं ले जा सकते शायद हमारी दूसरी मौसी जानती हो कि वे कहॉ रहती हैं।"

मॉ बोली — "तब तुम लोग इसे वहॉ ले जाओ। मेरी ओर से उसे सलाम कहना और कहना कि यह मेरा बेटा है और उसका भी। हो सकता है कि वह इसकी कुछ सहायता कर पाये।"

बच्चे उस शाहज़ादे को अपनी दूसरी मौसी के पास ले गये और उसे सारी बातें बतायीं। वह बोली — "ओह मेरे बच्चों। मैं तो इस बारे में कुछ नहीं कर सकती पर शाम को जब मेरे **80** बच्चे घर आयेंगे तब मैं उनसे बात करूॅगी।"

यह सुन कर **60** देव भाइयों ने शाहज़ादे को वहॉ छोड़ा और वापस चले गये। शाम को जब उसके बच्चे आने वाले थे तब उसने शाहज़ादे को हल्के से छुआ और एक झाड़ू में बदल दिया और उसे दरवाजे के पीछे रख दिया।

वह यह कर के चुकी ही थी कि उसके **80** बेटे आ पहुॅचे और घर में किसी आदमी के मॉस की बू के आने की बात करने लगे। मॉ ने उन्हें खाना खिलाया और उनसे पूछा — "अगर तुम्हारा एक भाई धरती का एक आदमी होता तो तुम क्या करते।"

उन्होंने कसम खायी कि वे उसे कोई नुकसान नहीं पहुॅचायेंगे।

तब मॉ ने उस झाड़ू को हल्के से मारा तो वह एक शाहज़ादे के रूप में आ गयी। बच्चों ने उसका बड़े प्यार से स्वागत किया। उसकी तन्दुरुस्ती के बारे में पूछा।

मॉ ने फिर पूछा कि क्या वे जानते थे कि तीन सन्तरों की परियॉ कहॉ रहती थीं क्योंकि उनका भाई उनके प्यार में पड़ा हुआ था। सबसे छोटा ओस भाई तो यह सुन कर कूद पड़ा और बोला कि वह जानता है कि वे कहॉ रहती हैं।

मॉ ने कहा — "तो फिर इसे ले जाओ और इसकी इच्छा पूरी करो।"

अगली सुबह दोनों अपनी यात्रा पर निकल पड़े। चलते चलते छोटा ओस बोला — "भाई जल्दी ही हम लोग एक बागीचे के पास पहुँचेंगे। उसमें एक तालाब है वहीं हमें तीन सन्तरे मिलेंगे। जब मैं बोलूँ "अपनी ऑखें बन्द करो... अपनी ऑखें खोलो।" तो तुम वैसा ही करना और जो भी चीज़ तुम्हारे सामने आ जाये उसे पकड़ लेना।"

वे कुछ दूर आगे चले तो वह बागीचा आ गया जिसकी वह देव भाई बात कर रहा था। जैसे ही देव भाई ने तालाब देखा तो वह बोला "अपनी ऑखें बन्द करो... अपनी ऑखें खोलो।"।

शाहज़ादे ने वैसा ही किया तो उसने देखा कि तालाब की चिकनी सतह पर तीन सन्तरे रखे हैं। उसने उसमें से एक सन्तरा उठा कर अपने जेब में रख लिया।

देव ने उसे दोबारा कहा "अपनी ऑखें बन्द करो... अपनी ऑखें खोलो।" शाहज़ादे ने फिर वैसा ही किया और अबकी बार

उसने दूसरा सन्तरा उठा कर अपने जेब में रख लिया और फिर इसी तरह तीसरा भी।

ओस भाई बोला — "अब तुम ध्यान रखना कि इन्हें किसी ऐसी जगह मत तोड़ना जहॉ पानी न हो नहीं तो तुम बहुत पछताओगे।"

शाहज़ादे ने देव भाई से वायदा किया कि वह उसके कहे अनुसार ही करेगा और दोनों अपने अपने रास्ते चले गये एक दॉये और दूसरा बॉये।

जब शाहज़ादा पहाड़ी पर ऊपर चढ़ कर जा रहा था तो उसे उन सन्तरों का ध्यान आया। सो उसने एक सन्तरा अपनी जेब से निकाला ताकि वह उसे तोड़ सके। जैसे ही उसने सन्तरे में उसे काटने के लिये चाकू घुसाया कि उसमें से चॉद सी सुन्दर एक लड़की बाहर निकल आयी और बोली "पानी। पानी। मुझे पानी चाहिये।"

अब पानी तो उसके पास था नहीं से वह तुरन्त ही गायब भी हो गयी। यह देख कर शाहज़ादा बहुत निराश हुआ पर अब जो कुछ हो गया था उसे वापस नहीं किया जा सकता था।

कुछ घंटे और बीत गये। वह अब तक कई मील चल चुका था। उसने फिर एक सन्तरा तोड़ने की सोचा सो उसने दूसरा सन्तरा निकाला और उसे चीरा तो उसमें से भी पहले से भी सुन्दर एक लड़की निकली और बोली "पानी। पानी। मुझे पानी चाहिये।"

यहॉ भी शाहज़ादे के पास कोई पानी नहीं था सो वह भी तुरन्त ही गायब हो गयी। शाहज़ादे ने सोचा कि वह अब तीसरे सन्तरे को

बहुत ध्यान से तोड़ेगा। उसे बहुत प्यास लगी थी। कुछ देर तक चलने के बाद उसे एक स्रोत मिला तो वहॉ उसने पानी पिया और सन्तरा छील दिया।

उस सन्तरे में से पहले से भी सुन्दर एक लड़की बाहर निकल आयी और उसने भी निकलते ही पानी मॉगा "पानी। पानी। मुझे पानी चाहिये।"

अबकी बार तो वह स्रोत के पास ही था सो उसने उसे पानी पिला दिया। अब वह शाहज़ादे के पास ही रही।

शाहज़ादे को चिन्ता थी कि वह उसके पिता के राज्य में कैसे घुसेगी जब तक वह ठीक हालत में न हो। सो उसने लड़की से कहा कि वह स्रोत के पास लगे पेड़ में छिप कर बैठ जाये जब तक वह उसके लिये शाही कपड़े और शाही सवारी ले कर आता है।

जब शाहज़ादा यह सब लेने के लिये चला गया तब वहॉ एक काली दासी पानी भरने के लिये आयी। जब वह पानी भरने लगी तो उसने पेड़ पर बैठी लड़की की परछाईं पानी में देखी जो बहुत सुन्दर थी। उसने सोचा कि वह उसी की परछाईं थी।

उसे अपनी परछाईं अपनी मालकिन के रूप से कहीं अधिक सुन्दर लगी तो उसने सोचा कि वह तो अपनी मालकिन से बहुत सुन्दर है तो वह उसका पानी क्यों भरे उसे उसका पानी भर कर उसके पास लाना चाहिये।

यह सोच कर उसने अपना घड़ा फेंक दिया। घड़ा मिट्टी का था गिरते ही टूट गया। वह घर वापस चली गयी।

मालकिन ने पूछा कि पानी कहॉ है तो वह काली दासी गुस्से से उसकी ओर देखते हुए बोली — "मैं तुमसे ज़्यादा सुन्दर हूॅ इसलिये मुझे तुम्हारे लिये पानी नहीं बल्कि तुम्हें मेरे लिये पानी भरना चाहिये।"

मालकिन ने शीशा उसके सामने रखते हुए कहा — "क्या तेरी अक्ल मारी गयी है। देख शीशे में देख।"

दासी ने शीशे में देखा तो उसने देखा कि वह तो बहुत काली है। बिना कुछ बोले उसने दूसरा घड़ा उठाया और फिर से पानी लाने चल दी। जब वह वहॉ पहुॅची तो उसने फिर से उस लड़की परछाईं देखी और फिर से उसे अपनी परछाईं समझ लिया।

मैं निश्चित रूप से अपनी मालकिन से अधिक सुन्दर हूॅ कह कर वह एक बार फिर से घड़ा फेंका और घर वापस आ गयी। मालकिन ने उससे फिर से पूछा कि वह पानी ले कर क्यों नहीं आयी।

दासी ने फिर गुस्से से जवाब दिया — "मैं तुमसे अधिक सुन्दर हूॅ इसलिये तुमको मेरे लिये पानी लाना चाहिये।"

मालकिन बोली — "तुम पागल हो गयी हो।" कह कर उसने फिर से उसके शामने शीशा रख दिया।

दासी ने फिर से अपनी शक्ल शीशे में देखी तो उसकी समझ में आ गया कि वह तो सचमुच में ही नीग्रो है तब वह तीसरी बार घड़ा ले कर पानी भरने चली गयी।

उस लड़की की परछाईं फिर से पानी में पड़ी देखी तो दासी फिर से अपना घड़ा फेंकने वाली थी कि वह लड़की हॅस पर ऊपर से बोली — "अरे अपना घड़ा क्यों तोड़ती हो। तुम्हें पानी में मेरी परछाईं दिखायी दे रही है न कि तुम्हारी।"

तब दासी ने अपनी निगाह ऊपर की तो एक बहुत सुन्दर लड़की को वहॉ बैठे देखा। इतनी सुन्दर लड़की तो उसने पहले कभी कहीं नहीं देखी थी।

वह शहद से मीठे शब्दों में बोली — "ओह तुम तो दुनियॉ की सबसे सुन्दर लड़की हो। तुम वहॉ ऊपर बैठे बैठे थक गयी होगी। आओ नीचे आ जाओ और मेरी गोद में सिर रख कर थोड़ा आराम कर लो।"

दासी को शिकार हाथ लग गया था। लड़की नीचे उतर कर उसकी गोद में सिर रख कर लेट गयी थी। दासी ने बालों की एक पिन ली और उसकी खोपड़ी में घोंप दी। उसी समय उसकी इच्छा पूरी हो गयी और वह लड़की दासी को पेड़ के नीचे अकेला छोड़ कर एक नारंगी चिड़िया बन कर उड़ गयी।

कुछ देर बाद शाहज़ादा सुनहरे कपड़े पहन कर एक शाही कोच में सवार हो कर वहॉ लौटा तो देखा कि एक काली स्त्री पेड़ के पास

बैठी हुई है और वह जिस लड़की को पेड़ के ऊपर बिठा कर गया था उसका कोई पता नहीं है।

उसने काली लड़की से पूछा — "तुम्हें क्या हुआ?"

"बस तुम मुझे छोड़ दो और चले जाओ। सूरज ने मेरा रंग ही खराब कर दिया है।"

अब शाहज़ादा बेचारा क्या करता। उसने उसी लड़की को अपनी कोच में बिठाया और पिता के महल ले चला।

उधर शाह दरबारी जनता सभी परी के आने के इन्तजार कर रहे थे। पर जब उन्होंने काली लड़की को देखा तो वे तो बहुत निराश हुए। शाहज़ादे ने इसमें क्या देखा। यह तो बिल्कुल भी सुन्दर नहीं है। तरह तरह की बातें उठने लगीं।

शाहज़ादा बोला — "यह लड़की काली नहीं है। क्योंकि यह बहुत देर तक धूप में बैठी रही इसलिये इसका रंग काला पड़ गया है। यह जल्दी ही गोरी हो जायेगी।" यह कहते हुए वह उस लड़की को अपने महल तक ले गया।

शाहज़ादे के महल के पास ही एक बागीचा था। एक दिन एक नारंगी चिड़िया यहॉ आ गयी और पेड़ पर बैठ कर उसने माली को बुलाया।

माली ने पूछा — "तुम्हें मुझसे क्या चाहिये।"

चिड़िया ने पूछा — "शाहज़ादे कैसे हैं।"

माली बोला — "ठीक हैं।"

"और उनकी काली पत्नी कैसी है।"

"वह भी बहुत अच्छी है पर वह अपने महल में ही रहती है।"

यह सुन कर चिड़िया उड़ गयी। अगले दिन वह फिर आयी और उसने अपने वही सवाल फिर पूछे। तीसरे दिन भी उसने यही किया। पर खास बात यह थी कि वह जिस जिस पेड़ पर बैठती थी वह वह पेड़ मुरझाता जाता था।

कुछ समय बाद ही एक दिन शाहज़ादा बागीचे में घूमने के लिये आया तो उसने बागीचे में बहुत सारे मुरझाये पेड़ देखे तो उसने माली से इसका कारण पूछा — "तुम इन सब पेड़ों को ठीक से देखते भालते क्यों नहीं हो। ये सारे के सारे पेड़ मुरझा गये हैं। इनकी पत्तियॉ भी झड़ रही हैं।"

तब माली शाहज़ादे को चिड़िया वाली घटना और उसके सवाल बताये। फिर सोचा कि उसने उन पेड़ों की कितनी सेवा की है पर सब बेकार। शाहज़ादे ने माली से कहा कि वह उन पेड़ों पर चिड़ियों को पकड़ने वाले मसाले मल दे। और जब वह चिड़िया पकड़ में आ जाये तो वह उसे उसके पास ले आये।

माली ने वैसा ही किया और जब चिड़िया पकड़ी गयी तो वह उसे शाहज़ादे के पास ले गया। शाहज़ादे ने उसे एक पिंजरे में रख दिया।

काली लड़की ने जैसे ही उस चिड़िया को देखा तो वह पहचान गयी कि वह कोई साधारण चिड़िया नहीं बल्कि यह तो वही सुन्दर

लड़की थी जिसे उसने उसकी खोपड़ी में बालों की पिन घुसेड़ कर नारंगी चिड़िया बना कर उड़ा दिया था।

यह देख कर वह बीमार पड़ गयी। उसने शाही घराने का सबसे बड़ा डाक्टर बुलाया और उसे रिश्वत दे कर उससे यह कहलवा दिया कि जब तक उसे एक खास तरीके की चिड़िया नहीं खिलायी जायेगी वह ठीक नहीं हो पायेगी।

जब शाहज़ादे ने सुना कि उसकी पत्नी बहुत बीमार है तो उसने शाही डाक्टर बुलवाये और उनसे पूछा कि उसे क्या करना चाहिये। तो उन्होंने कहा कि शाहज़ादी को एक खास तरह की चिड़िया खिलाने पर ही वह ठीक हो पायेंगी।

शाहज़ादा बोला — "अरे ऐसी चिड़िया तो मैंने अभी अभी पकड़ी है।" उसने तुरन्त ही हुक्म दिया कि उस चिड़िया को पका कर शाहज़ादी को खिला दिया जाये ताकि वह जल्दी से जल्दी ठीक हो सके।

पर इस बीच क्या हुआ कि उस चिड़िया का एक पंख नीचे गिर गया और कमरे के फर्श में लगे दो तख्तों के बीच में अटक गया। किसी ने भी इस बात को नहीं देखा। समय गुजरता गया और शाहज़ादा अपनी पत्नी के गोरे होने का इन्तजार करता रहा।

महल में एक स्त्री थी जो वहॉ अन्दर रहने वालों को पढ़ना लिखना सिखाती थी। एक दिन जब वह सीढ़ियॉ चढ़ रही थी तो उसको कमरे में पड़ी कोई चमकीली चीज़ दिखायी दी।

उसने उसे उठा लिया तो देखा कि वह तो चिड़िया का एक पंख था। उस पर कुछ धब्बे थे जो हीरों की तरह चमक रहे थे। वह उस पंख को अपने कमरे में ले गयी और उसे दीवार की एक झिरी में अटका दिया।

एक दिन वह महल में काम करने गयी तो वह पंख उस झिरी में से नीचे फर्श पर गिर पड़ा। जैसे ही वह गिरा तो लो वह तो एक ऑखों को चौंधियाती हुई सुन्दर लड़की में बदल गया।

उसने घर की सफाई की खाना बनाया घर का सब सामान सहेज कर रखा और फिर उसके बाद वह फिर से पंख बन गयी और दीवार में जा कर अपनी जगह लग गयी।

जब वह बुढ़िया घर आयी तो वह तो अपना घर देख कर आश्चर्यचकित रह गयी। उसने घर में चारों तरफ देखा पर उसे इस पहेली का कोई हल या अता पता नहीं मिला।

अगले दिन वह फिर महल गयी तो वह पंख फिर से लड़की बन गया फिर से उसने घर का सारा काम किया और फिर से पंख बन कर दीवार में अपनी जगह जा कर लग गयी। बुढ़िया जब घर वापस आयी तो वह फिर से आश्चर्यचकित थी।

तीसरे दिन जब वह बुढ़िया फिर से महल जाने लगी तो उसने सोचा कि आज वह इस बात का भेद जान कर ही रहेगी। सो बजाय अपने घर को ताला लगा कर महल जाने के वह एक जगह छिप गयी जहॉ से वह अपना घर देख सकती थी।

जल्दी ही एक बहुत सुन्दर लड़की उसको अपने कमरे में दिखायी दी। उसने देखा कि उस लड़की ने सब सामान अपनी जगह पर रखा और फिर खाना बनाने चली गयी। जब सब तैयार हो गया तब वह बुढ़िया दौड़ी और उस लड़की को पकड़ लिया और उससे पूछताछ की।

लड़की ने उसे अपनी सारी कहानी बतायी और बताया कि कैसे उस काली लड़की ने उसे दो बार मार डालने की कोशिश की और कैसे वह एक पंख के रूप में यहॉ आयी।

बुढ़िया बोली — "दुखी मत हो बेटी। मैं बहुत जल्दी ही सब मामला ठीक कर दूँगी।"

वह तुरन्त ही शाहज़ादे के पास चल दी और उसे उसी शाम अपने घर खाना खाने के लिये आने के लिये कहा। खाना खाने के बाद कौफी लायी गयी। यह कौफी बुढ़िया ने लड़की से लाने के लिये कहा था।

जब लड़की ने कौफी के प्याले ला कर रखे शाहज़ादे ने उसके चेहरे की तरफ देखा तो वह तो उसे देखते ही बेहोश हो गया। जब उसे होश में ले आया गया तो उसने पूछा "यह लड़की कौन है?"

"मेरी नौकरानी।"

"आपने इसे कब रखा? क्या आप इसे मुझे नहीं बेचेंगी?"

बुढ़िया मुस्कुराती हुई बोली — "उस चीज़ का आपको क्या बेचना जो है ही आपकी।"

कह कर उसने परी का हाथ पकड़ा और उसे शाहज़ादे की तरफ ले गयी और उसे डॉटते हुए कहा कि वह आगे से अपनी सन्तरे की परी की ठीक से देखभाल करे।

तब शाहज़ादा अपनी सन्तरे की परी को अपनी जीत की तरह से अपने महल ले गया। काली लड़की को उसने मौत की सजा सुना दी और अपनी नयी शादी की दावत **40** दिन और **40** रातों तक मनायी।

इस खुशी के अन्त के बाद हम भी अपने दीवान पर लेटने जाते हैं।

5 गुलाबी सुन्दरता[11]

बहुत पुराने समय में जब ऊँट घोड़ों का व्यापारी था चूहा नाई था कोयल दरजी थी कछुआ बेकर था और गधा तभी भी नौकर था। एक बार एक चक्की वाला था जिसके पास एक काली बिल्ली थी।

अब इस चक्की वाले के अलावा वहॉ एक बादशाह भी रहता था जिसके तीन बेटियॉ थीं – एक **40** साल की दूसरी **30** साल की और तीसरी **20** साल की।

एक दिन सबसे बड़ी बेटी अपनी सबसे छोटी बहिन के पास गयी और उससे कहा कि वह पिता को कुछ ऐसी चिट्ठी लिख दे – "मेरी एक बहिन **40** साल की है दूसरी बहिन **30** साल की है। उन दोनों की शादी अभी तक नहीं हुई है। मैं आपको बता देना चाहती हूँ कि मैं इतने साल तक शादी के लिये इन्तजार नहीं करूँगी।"

इस चिट्ठी को पढ़ कर बादशाह ने अपनी बेटियों को बुलाया और उनसे कहा — " देखो तुम तीनों के लिये ये धनुष और बाण यहॉ रखे हुए हैं। इन्हें ले जाओ और इनसे निशाना लगाओ। जिसका बाण जहॉ गिरेगा उस लड़की की शादी वहीं हो जायेगी।"

पिता से धनुष बाण ले कर वे सब बाहर गयीं और निशाना लगा कर उन्होंने अपने अपने बाण छोड़ दिये।

[11] The Rose Beauty. Tale No 5

सबसे बड़ी बेटी ने सबसे पहले अपना बाण छोड़ा तो उसका बाण वज़ीर के बेटे के महल में गिरा तो उसकी शादी वज़ीर के बेटे से हो गयी। दूसरी बेटी का बाण शेख़ उल इस्लाम के महल में गिरा तो दूसरी बेटी की शादी उससे हो गयी।

तीसरी बेटी का बाण एक लकड़हारे की झोंपड़ी में जा कर गिरा तो हर आदमी बोला इस बाण को नहीं गिना जाना चाहिये। छोटी शाहज़ादी को एक मौका और दिया जाना चाहिये।

लोगों के कहने पर ऐसा ही किया गया पर वह दोबारा भी उसी जगह पर जा कर पड़ा। तीसरी कोशिश भी कोई इससे अच्छा परिणाम ले कर नहीं आयी।

बादशाह अपनी इस बेटी से इसकी चिट्ठी की वजह से पहले से ही बहुत नाराज था अब बोला — "यह तुम्हारे साथ अच्छा ही हुआ। ऐसा ही होना चाहिये था। तुम्हारी बहिनों ने धैर्यपूर्वक इन्तजार किया इसलिये उन्हें अपने इस इन्तजार का ठीक फल मिला।

तुमने जो घर में सबसे छोटी हो मुझे वह चिट्ठी लिखने का साहस किया उसके लिये तुम्हें ठीक सजा मिली है। तुम अपने लकड़हारे से शादी करो और उसके साथ जाओ।" सो उस बेचारी की शादी उस लकड़हारे से हो गयी और वह उसके साथ चली गयी।

समय आने पर सबसे छोटी शाहज़ादी की एक बेटी हुई। लकड़हारे की पत्नी बहुत दुखी हुई कि उसकी बच्ची को इतना गरीब

घर मिला। जब वह यह सोच सोच कर रो रही थी कि तभी वहॉ तीन परियॉ उस झोंपड़ी की दीवार से निकल आयीं जहॉ वह बच्ची लेटी हुई थी।

उन तीनों में से एक ने अपना हाथ सोती हुई बच्ची की ओर बढ़ाया और बोली — "मैं इस लड़की को आज यह आशीर्वाद देती हूॅ कि तुम्हारी यह बेटी एक गुलाब की तरह सुन्दर होगी। इसका नाम "गुलसुन्दरी" होगा। और इसकी ऑखों से ऑसुओं की बजाय मोती गिरेंगे।"

दूसरी परी ने भी उसके सिर पर हाथ रखा और बोली — "मैं इस बच्ची को यह आशार्वाद देती हूॅ कि जब यह मुस्कुरायेगी तो गुलाब फूलेंगे।"

तीसरी परी बोली — "मैं इसे यह आशीर्वाद देती हूॅ कि जहॉ जहॉ इसके कदम पड़ेंगे वहॉ वहॉ शैल घास उग आयेगी।"

इतना कह कर तीनों परियॉ फिर उसी दीवार में जा कर गायब हो गयीं। इस बात को सालों बीत गये। बच्ची भी बड़ी होती गयी और अब वह **12** साल की हो गयी थी। जो भी उसको एक बार देख लेता तो वह उससे प्यार करने लग जाता।

जब वह मुस्कुराती तो गुलाब खिल जाते जब वह रोती तो उसकी ऑखों से ऑसुओं की बजाय मोती गिरते और जब वह चलती तो जहॉ जहॉ वह अपने कदम रखती घास उग आती। उसकी सुन्दरता के चर्चे पास और दूर फैल गये।

अब एक जगह एक शाहज़ादा रहता था उसकी मॉ ने भी गुलसुन्दरी की सुन्दरता के चर्चे सुने तो उसने सोच लिया कि वही उसके बेटे की बहू बनेगी।

उसने अपने बेटे को बुलाया और उससे कहा कि फलॉ फलॉ शहर में एक लड़की है जिसके मुस्कुराने से गुलाब खिल जाते हैं रोने पर उसकी ऑखों से मोती गिरते हैं और जब वह चलती है तो उसके कदमों की जगह घास उग आती है। उसे जा कर उसे देखना चाहिये।

परियों ने पहले ही शाहज़ादे को उसके सपने में उस लड़की को दिखा रखा था और इस तरह उसके दिल में उस लड़की के लिये प्यार को लौ जला रखी थी। पर अपनी मॉ के सामने उसे शर्म आ रही थी सो उसने उससे मिलने के लिये मना कर दिया।

पर सुलताना ने उससे जिद की तो शाहज़ादे के कहने पर एक स्त्री को उसके साथ भेजने का इन्तजाम करने के लिये कहा।

दोनों लड़की की झोंपड़ी में अन्दर घुसे और अपने आने का कारण बताया और अल्लाह के नाम पर लड़की का हाथ शाहज़ादे के लिये मॉगा। यह सुन कर शाहज़ादी बहुत खुश हुई। उसने हॉ कर दी और अपनी बेटी की शादी की तैयारियॉ शुरू कर दीं।

अब यह स्त्री जो शाहज़ादे के साथ गयी थी उसकी अपनी भी एक बेटी थी जिसकी शक्ल गुलसुन्दरी से मिलती जुलती थी।

यह स्त्री इस बात इस बात से बहुत नाखुश थी कि शाहज़ादे की शादी बजाय उसकी अपनी बेटी के इतने गरीब घर की लड़की से हो रही थी। यह सोच कर उसने शाहज़ादे और उसकी मॉ को धोखा देने की एक योजना बनायी। उसने शाहज़ादे की शादी अपनी बेटी से करने की सोची।

शादी के दिन उसने लकड़हारे की बेटी को नमकीन खाना खिला दिया। फिर उसने पानी का एक जग लिया और एक बहुत बड़ी टोकरी ली और दोनों को दुलहिन की कोच में रख दिया जिसमें उसकी अपनी बेटी और गुलसुन्दरी जाने वाली थीं।

रास्ते में गुलसुन्दरी को प्यास लगी तो उसने पानी मॉगा। लड़की ने कहा — "मैं तुम्हें तब तक कोई पानी नहीं दूँगी जब तक तुम मुझे अपनी एक ऑख नहीं दोगी।"

गुलसुन्दरी को बहुत प्यास लगी थी सो उसने उसे अपनी एक ऑख निकाल कर दे दी लड़की ने उसे उसकी ऑख के बदले में पानी पिला दिया।

वे लोग और आगे बढ़े तो बेचारी गुलसुन्दरी को फिर से प्यास लगने लगी तो उसने उससे दोबारा पानी मॉगा। लड़की ने फिर वही जवाब दिया कि वह उसे पानी तब ही देगी जब वह उसको अपनी दूसरी ऑख भी उसे दे देगी।

गुलसुन्दरी को इतनी प्यास लगी थी कि उसने दोबारा पानी पीने के लिये अपनी दूसरी ऑख भी उसे दे दी। जैसे ही लड़की के पास

गुलसुन्दरी की दोनों ऑखें आयीं उसने गुलसुन्दरी को बॉध दिया और टोकरी में रख कर एक पहाड़ के ऊपर ले गयी और वहॉ छोड़ दिया।

स्त्री अब अपनी बेटी को ले कर महल पहुॅची और उसे शानदार शाही जोड़े में सजा कर उसे शहज़ादे के सामने ले कर गयी कि लो यह आपकी दुलहिन है।

दोनों की शादी बड़ी धूमधाम से मनायी गयी पर जब शाहज़ादे ने अपनी दुलहिन का घूॅघट उठाया तो उसने देखा कि यह वह लड़की नहीं थी जो उसने अपने सपने में देखी थी। पर क्योंकि उसकी शक्ल उसकी अपनी सपने वाली दुलहिन की शक्ल से मिलती जुलती थी सो वह कुछ शान्त सा हो गया।

शाहज़ादे को मालूम था कि उसकी पत्नी हॅसती थी तो गुलाब खिलते थे रोती थी तो मोती गिरते थे और उसके हर कदम की जगह घास उगती थी। पर इस लड़की के हॅसने पर न तो गुलाब खिलते थे रोने पर न मोती गिरते थे और न ही चलने पर घास उगती थी।

उसे पता चल गया कि उसे धोखा दिया गया है पर उसने भी सोच लिया कि वह इस बात का भेद जान कर ही रहेगा। उसने यह बात किसी से भी नहीं कही।

उधर बेचारी गुलसुन्दरी पहाड़ पर पड़ी पड़ी रोती रही। उसकी अन्धी ऑखों से उसके गालों पर मोती गिर गिर कर लुढ़कते रहे। वे

सब मोती गिर गिर कर टोकरी में इकट्ठे होते रहे यहॉ तक कि अब वे टोकरी के बाहर भी निकलने वाले हो रहे थे।

एक सड़क साफ करने वाला उधर से गुजर रहा था कि उसने लड़की की रोने की आवाज सुनी तो डर के मारे चिल्लाया — "कौन है वहॉ कोई आत्मा या फिर कोई परी?"

लड़की बोली — "न तो कोई आत्मा न ही कोई परी बल्कि केवल एक इन्सान तुम्हारी तरह।"

सड़क साफ करने वाले ने एक बार फिर पक्का किया और फिर टोकरी की ओर चल दिया। उसने जा कर टोकरी खोली तो देखा कि उसमें तो एक अन्धी लड़की चारों तरफ से मोतियों से घिरी बैठी हुई है।

वह उसे अपने घर ले गया अपनी एक टूटी फूटी झोंपड़ी में। वह दुनियॉ में अकेला था सो उसने उसे अपनी बेटी बना कर रख लिया।

पर वह लड़की अपनी ऑखों के लिये बराबर रोती ही रहती सो उसके पास बहुत सारे मोती इकट्ठे हो गये थे। सफाई करने वाला उन्हें इकट्ठा कर लेता था और उन्हें जा कर बेच आता था।

समय गुजरता रहा। महल में खूब आनन्द मनता रहा और सफाई करने वाले की झोंपड़ी में दर्द और दुख।

एक दिन गुलसुन्दरी घर के दरवाजे पर बैठी हुई थी तो उसे कुछ अच्छे पल याद आ गये तो वह उन्हें याद कर के मुस्कुरा उठी। इससे उसके सामने एक बहुत सुन्दर गुलाब खिल गया।

लड़की ने सफाई करने वाले से कहा — "पिता जी। मेरे सामने एक गुलाब खिला है। आप इसे शाहज़ादे के पास ले जाइये और उनसे कहिये कि आपके पास एक बहुत ही अनमोल किस्म का गुलाब है और आप उसे बेचना चाहते हैं।

जब वह आपसे उसकी कीमत पूछें तो आप उनसे कहियेगा कि उसे पैसों से नहीं खरीदा जा सकता। उसकी कीमत आदमी की एक ऑख है।"

आदमी उस गुलाब को ले कर महल चला गया और चिल्लाना शुरू कर दिया — "एक गुलाब है बेचने के लिये। एक गुलाब है बेचने के लिये। यह दुनियॉ का अपने किस्म का अकेला गुलाब है।"

अब वह गुलाबों का मौसम तो नहीं था तो महल की स्त्री ने जब यह आवाज सुनी तो वह अपनी बेटी को वह गुलाब देने के लिये गुलाब खरीदने की इच्छा से भागी भागी दरवाजे पर गयी। उसने सोचा कि जब शाहज़ादा उसकी बेटी के पास यह गुलाब देखेगा तो उसका शक दूर हो जायेगा।

उस गरीब आदमी को उसने एक तरफ बुलाया और उससे गुलाब की कीमत पूछी।

आदमी बोला — "इसे पैसे से नहीं खरीदा जा सकता पर अगर आपके पास आदमी की एक ऑख हो तो उसके बदले में मैं इसे आपको दे सकता हूॅ।

यह सुन कर वह तुरन्त ही गुलसुन्दरी की एक ऑख निकाल लायी और उसे दे कर वह फूल खरीद लिया। फूल ले कर वह तुरन्त ही अपने बेटी के पास गयी और जा कर उसे उसके बालों में लगा दिया।

जब शाहज़ादे ने वह फूल देखा तो उसे लगा कि शायद यह वही लड़की होगी जिसे परियों ने उसे सपने में दिखाया था हालॉकि उसे अभी भी इस बात का पूरा यकीन नहीं था। उसने अपने आपको बस यह सोच कर शान्त कर लिया कि जल्दी ही वह राज़ को खोल कर रहेगा।

सफाई करने वाले ने ऑख ली और ले जा कर गुलसुन्दरी को दे दी। अल्लाह का धन्यवाद करते हुए उसने वह ऑख अपनी ऑख में लगा ली। उस ऑख से अब वह पहले की तरह से देख सकती थी। वह बहुत खुश हुई।

इस नयी खुशी में वह इतना मुस्कुरायी कि इससे उसने कई फूल पैदा किये। उसने एक और फूल ले कर अपने पिता को फिर से महल भेजा और अपनी दूसरी ऑख भी लाने के लिये तो कहा।

जब वह महल पहुँचा तो उस स्त्री ने उसे देखा तो वह बहुत खुश हुई कि अब अल्लाह उसकी बेटी की तरफ है। अब तो शाहज़ादा भी मेरी बेटी को पसन्द करने लगा है।

मैं इस गुलाब को खरीद लेती हूँ उसके बाद तो वह उसे और बहुत ज़्यादा प्यार करने लगेगा और हो सकता है कि फिर वह लकड़हारे की बेटी को भूल भी जाये। सो उसने गुलाब वाले को बुलाया और उससे वह फूल मॉगा।

तो उसने उससे कहा यह फूल भी मैं अपनी पुरानी शर्त पर ही दूँगा। वह तुरन्त ही गुलसुन्दरी की दूसरी ऑख ले आयी और उस गुलाब को खरीद लिया। गुलाब को ले कर वह तुरन्त ही अपनी बेटी के पास चली गयी और वह आदमी अपना इनाम ले कर घर चला गया।

गुलसुन्दरी के पास अब उसकी दोनों ऑखें थीं। अब वह और भी सुन्दर हो गयी थी। अब जब वह मुस्कुरा मुस्कुरा कर चलती तो गुलाब खिलते जाते और पहाड़ की बंजर जमीन घास से हरी भरी होती जाती। अब वह जगह तो ईडन का बाग बन गया था।

एक दिन गुलसुन्दरी महल के आसपास घूम रही थी कि महल की स्त्री ने उसे देखा तो वह बहुत दुखी हुई। वह सोचने लगी कि अगर सच का पता चल गया तो मेरी बेटी का क्या होगा।

उसने सड़क साफ करने वाले के घर का पता मालूम किया जल्दी जल्दी उसके घर गयी और उसे धमकाया कि उसने अपने घर

में एक जादूगरनी पाल रखी है। यह सुन कर वह बहुत डर गया उसने स्त्री से पूछा कि अब वह क्या करे।

स्त्री ने सलाह दी कि वह उससे उसका "तलिस्मान" मॉगे और उसे ला कर दे तो वह सब मामला ठीक कर देगी। सो जैसे ही उसकी बेटी घर लौटी तो उसके पिता ने उससे पूछा कि एक इन्सान होते हुए वह इतना जादू कैसे कर सकती थी।

गुलसुन्दरी ने इस बात को बताने में अपना कोई नुकसान नहीं देखा तो उसने उसे बताया कि उसके जन्म के समय परियों ने उसे एक तलिस्मान दिया था जिससे जब तक वह उसके पास था तब तक वह यह सब कर सकती थी – वह मोती गिरा सकती थी वह गुला खिला सकती थी और वह घास उगा सकती थी।

पिता ने पूछा — "तुम्हारा तलिस्मान क्या है?"

गुलसुन्दरी बोली — "पहाड़ पर बारहसिंगे का एक बच्चा रहता है। जब वह मरेगा तब मैं भी मर जाऊॅगी।"

अगले दिन महल वाली स्त्री छिप कर सफाई करने वाले के घर आयी और उससे तलिस्मान के बारे में जाना। अब यह तो उसके लिये बहुत ही कीमती जानकारी थी।

तुरन्त ही वह खुशी खुशी घर लौटी और यह जानकारी अपनी बेटी को दी और उससे कहा कि वह जल्दी से जल्दी शाहज़ादे से उस बारहसिंगे के बच्चे को लाने के लिये कहे।

लड़की ने तुरन्त ही शाहज़ादे से अपनी बीमारी का बहाना किया और उससे पहाड़ पर रह रहे बारहसिंगे के बच्चे को पकड़ कर लाने के लिये कहा ताकि वह उसका दिल खा कर जल्दी ठीक हो सके।

शाहज़ादे ने तुरन्त ही अपने शिकारियों को उस बच्चे को लाने के लिये भेज दिया। वे उसको पकड़ लाये उसे काट दिया गया और उसका दिल निकाल कर लड़की को खिला दिया गया।

जैसे ही जानवर मरा वैसे ही गुलसुन्दरी भी मर गयी। सफाई करने वाले ने उसे दफ़न कर दिया। वह उसके लिये सचमुच बहुत दुखी हुआ।

बारहसिंगे के दिल में एक लाल रंग का मूँगा था जो सबकी ऑखों से बच गया तो जब शाहज़ादे की पत्नी उस दिल को खा रही थी तो वह नीचे गिर गया और सीढ़ियों के नीचे की तरफ लुढ़क गया।

एक साल के बाद शाहज़ादे के एक बेटी पैदा हुई जो मोतियों से रोती थी मुस्कुराती थी तो गुलाब खिलते थे और उसके पैरों के नीचे घास उगती थी। जब शाहज़ादे ने यह देखा तो अब उसे विश्वास हो गया कि उसकी वर्तमान पत्नी ही उसकी सही पत्नी थी।

लेकिन एक रात गुलसुन्दरी उसके सपने में आयी और बोली — "ओ मेरे शाहज़ादे। ओ मेरे दुलहे। मेरी आत्मा महल की सीढ़ियों के नीचे पड़ी है। तुम्हारी बेटी मेरी बेटी है, मेरा तलिस्मान, मेरा छोटा मूँगा।"

शाहज़ादा यह सपना देख कर जाग गया। वह महल की सीढ़ियों की तरफ भागा और वहॉ से मूँगा ले आया। वह उसे अपने कमरे में ले आया और ला कर उसे अपनी मेज पर रख दिया।

जब उसकी छोटी सी बेटी उसके पास आयी तो उसने वह मूँगा उठा लिया। जैसे ही उसने उसे छुआ तो दोनों ही गायब हो गये। तीनों परियों ने बच्ची को ले जा कर उसकी मॉ को सौंप दिया था। जैसे ही मूँगा मॉ के मुँह में गया तो वह ज़िन्दा हो गयी।

शाहज़ादा यह सब देख कर बहुत दुखी था। अपनी इस दुखी हालत में वह कब्रिस्तान गया तो लो वहॉ तो उसके सपनों की गुलसुन्दरी उसके बच्चे को गोद में लिये थी।

उन्होंने एक दूसरे को प्यार से गले लगाया। मॉ और बेटी दोनों की ऑखों से ऑसू बहिने लगे जो मोती बनते जा रहे थे। फिर वे दोनों मुस्कुराये तो चारों तरफ गुलाब महक गये। जब वे वहॉ से चले तो उनके पैरों के नीचे घास उगती गयी।

महल की स्त्री और उसकी बेटी को कड़ी सजा दी गयी। सड़क साफ करने वाले को बुलाया गया और उसको गुलसुन्दरी के साथ रहने के लिये बुला लिया गया। अपने मिलने की खुशी में एक बहुत बड़ी दावत दी गयी और फिर सब खुश खुश रहे।

6 चुप राजकुमारी[12]

एक बार की बात है कि एक बादशाह था जिसके एक बेटा था। उस बेटे के पास सोने की एक गेंद थी जिससे वह खेलते नहीं थकता था। एक दिन वह अपने महल में बैठा हुआ अपने प्रिय खिलौने से खेल रहा था कि एक बुढ़िया वहॉ महल के सामने वाले स्रोत से पानी भरने के लिये आयी।

शाहज़ादे ने हॅसी हॅसी में अपनी गेंद उस स्त्री के जग की ओर फेंक कर मारी जिससे उसका जग टूट गया। बिन कुछ कहे वह स्त्री दूसरा जग ले आयी और पानी भरने के लिये फिर से उसी स्रोत पर आ गयी। शाहज़ादे फिर एक बार अपनी गेंद उसके जग में मारी और उस जग को भी तोड़ दिया।

अबकी बार बुढ़िया कुछ गुस्सा थी पर बादशाह के डर के कारण कुछ कह नहीं सकी। सो वह तीसरी बार एक जग ले आयी। वह यह जग अबकी बार किराये पर ले कर आयी थी क्योंकि उसके पास पैसे नहीं थे।

तीसरी बार वह पानी भरने के लिये वह स्रोत पर लौटी और अपना पानी भर ही रही थी कि छोटे शाहज़ादे ने फिर से अपनी गेंद उसके जग में मारी और तीसरी बार उसका जग तोड़ दिया।

[12] The Silent Princess. Tale No 6

अबकी बार बुढ़िया अपने गुस्से को न रोक सकी वह शाहज़ादे की ओर देखते हुए बोली — "अल्लाह करे कि तुम चुप राजकुमारी के प्रेम में पड़ जाओ।" यह कह कर वह अपने रास्ते चली गयी।

शाहज़ादा काफी देर तक उस बुढ़िया के कहे हुए पर विचार करता रहा और सोचता रहा कि उसका क्या मतलब हो सकता था। जितना ही वह उन शब्दों के बारे में सोचता था वे उतना ही वे उसके दिमाग में बैठते जा रहे थे।

यहॉ तक कि अब उसकी तबियत भी खराब रहने लगी। वह पतला और पीला होता चला गया। उसकी भूख प्यास भी बन्द हो गयी। कुछ ही दिनों में वह इतना बीमार पड़ गया कि अब वह बस बिस्तर में ही लेटा रहता था।

बादशाह की समझ में बेटे की बीमारी नहीं आ रही थी। कई डाक्टर और होजा बुलाये गये पर वह किसी से उसका कोई भला नहीं हुआ। एक दिन बादशाह ने अपने बेटे से पूछा कि क्या वह अपनी इस अजीब सी बीमारी के बारे में कुछ बता सकता था जो उसे लग गयी थी।

तब शाहज़ादे ने अपने पिता को बताया कि किस प्रकार उसने एक बुढ़िया वहॉ सामने के स्रोत से पानी लेने के लिये आयी थी और फिर कैसे उसने उसका जग तीन बार अपनी सोने की गेंद से तोड़ा और फिर कैसे उसने गुस्से में उससे क्या कहा कि अब कोई डाक्टर या होजा उसका इलाज नहीं कर पा रहा है।

फिर शाहज़ादे ने अपने पिता बादशाह से उस चुप राजकुमारी की खोज में जाने की इजाज़त मॉगी क्योंकि उसको लगा कि इस बीमारी से छूटने का अब बस वही एक तरीका है।

बादशाह को भी यही लगा कि इस तरह से उसका बेटा ज़्यादा नहीं जी पायेगा जब तक उसकी यह अजीब बीमारी ठीक न हो जाये। सो उसने उसे चुप राजकुमारी की खोज में जाने की इजाज़त दे दी। इस लम्बी यात्रा पर जाने के लिये उसने अपने लाला यानी वज़ीर को उसके साथ कर दिया।

शाम को वे घर से चल दिये और क्योंकि उन्होंने अपनी शक्लों का कोई ध्यान नहीं रखा इसलिये छह महीनों में ही वे शाहज़ादा और लाला कम और जंगली ज़्यादा लगने लगे। वे आराम और नींद बिल्कुल भूल चुके थे। उनको खाने पीने की भी अब कोई परवाह नहीं थी।

आखिर वे एक पहाड़ की चोटी पर आ पहुॅचे। यहॉ आ कर उन्होंने देखा कि चट्टानें और जमीन सोने जैसी चमक रही है और एक बूढ़ा उनकी ओर चला आ रहा है। उसने उनको बताया कि वे चुप राजकुमारी के पहाड़ पर खड़े हुए हैं।

राजकुमारी खुद सात परदे में थी पर इस बात को न समझते हुए जो असाधारण चमक वे देख रहे थे वह उसकी शक्ल से आ रही थी। यात्रियों ने बूढ़े से पूछा कि चुप राजकुमारी कहॉ रहती थी तो बूढ़े ने बताया कि अगर वे छह महीनों तक सीधे चलें तो वे उसके

महल पहुॅच जायेंगे। बहुत सारे लोगों ने उससे केवल बात करने के लिये अपनी जान तक गॅवा दी थी।

इस खबर से शाहज़ादा निराश नहीं हुआ बल्कि वह अपने लाला के साथ सीधा चल दिया। काफी चलने के बाद वे एक दूसरे पहाड़ पर पहुॅच गये जहॉ पहुॅच कर उन्होंने देखा कि वह तो सब ओर से लाल रंग का है।

आगे बढ़े तो वे एक गॉव में पहुॅच गये। यहॉ शाहज़ादे ने लाला से कहा कि वह बहुत थक गया है। यहॉ थोड़ा आराम कर लिया जाये और पूछताछ भी कर लें।

सो वे एक कौफ़ी की दूकान में घुस गये। जब लोगों को इस बात का पता चला कि दूर देश में रहने वाले कुछ विदेशी उनके बीच में थे तो वे एक एक कर के उनको सलाम करने आये।

शाहज़ादे ने उनसे पूछा कि वह सारा पहाड़ लाल क्यों है तो उन्होंने बताया कि वहॉ से तीन महीने की दूरी पर चुप राजकुमारी रहती है जिसके लाल होठों के रंग से यह पहाड़ लाल चमकता है। वह सात परदों में रहती है एक शब्द भी नहीं बोलती और ऐसा कहा जाता है कि उसके कारण बहुत सारे आदमियों ने अपनी जान गॅवायी है।

यह सुन कर नौजवान ने अपनी किस्मत आजमाने की सोची सो वह और लाला फिर से अपनी यात्रा पर चल दिये।

काफी दिनों बाद उनको कुछ दूरी पर एक और बड़ा पहाड़ दिखायी दिया जिसके लिये उन्होंने सोचा कि शायद यही चुप राजकुमारी के रहने की जगह होगी। चलते चलते वे उस पहाड़ की तलहटी में आ गये और फिर वहॉ से पहाड़ चढ़ने लगे।

पहाड़ के ऊपर एक बहुत ऊॅचा किला खड़ा था। जब वे और ऊपर पहुॅचे तो उन्होंने देखा कि वह तो पूरा का पूरा आदमियों की खोपड़ियों का बना हुआ था।

शाहज़ादे ने लाला से कहा — "ये सब उन आदमियों की खोपड़ियॉ हैं जिन्होंने राजकुमारी को बुलवाने की कोशिश में अपनी जान गॅवा दी। अब या तो हम अपना उद्देश्य प्राप्त करने में सफल होंगे या फिर हमारी खोपड़ी भी इसी काम आयेगी।"

किले में घुसने से पहले वे लोग कुछ दिनों के लिये एक हान[13] में रुक गये। इन सब दिनों में उन्होंने केवल रोने और आहें भरने की आवाजें सुनी और कोई आवाज नहीं – "ओह मेरे भाई।" "ओह मेरे बेटे।"

जब उन्होंने इस रोने और आहें भरने की आवाज के बारे में जानने की कोशिश की तो उन्हें जवाब मिला — "तुम यह क्यों पूछते हो? ऐसा लगता है कि तुम भी यहॉ मरने के लिये आये हो।

यह शहर चुप राजकुमारी के पिता का है। जो भी राजकुमारी से बुलवाने की कोशिश करना चाहता है तो उसे उससे पहले

[13] Han – maybe some kind of inn

बादशाह के पास जाना पड़ता है जो अगर उसको भेजना चाहे तो वह उस हीरो को अपने एक आदमी के साथ ही राजकुमारी के पास भेजता है।"

नौजवान ने जब यह सुना तो उसने लाला से कहा — "लगता है कि बस अब हमारी यात्रा खत्म हो चुकी। हम यहॉ कुछ दिन और रुकते हैं और फिर देखते हैं कि हमारी किस्मत में क्या लिखा है।" सो वे उसी हान में कुछ दिन और रुके रहे और रोज बाजार में घूमते रहे।

एक दिन जब शाहज़ादा इसी तरह बाजार में घूम रहा था तो उसे एक आदमी मिल गया जो पिंजरे में बन्द एक बुलबुल बेच रहा था। वह चिड़िया उसे इतनी अच्छी लगी कि उसने उसे खरीदने का निश्चय कर लिया।

लाला ने उसे मना भी किया और उसे याद दिलाया कि उनके पास इससे अधिक महत्वपूर्ण काम अभी बाकी है पर शाहज़ादा नहीं माना और उसने उस चिड़िया को **1000** पियास्टर दे कर खरीद लिया। वह उसे अपने घर ले गया और उस पिंजरे को अपने कमरे में टॉग लिया।

एक दिन जब शाहज़ादा अपने कमरे में अकेला बैठा बैठा यह सोच रहा कि राजकुमारी को कैसे बुलवाया जाये और अगर इस काम में सफलता न मिली तो मौत निश्चित है। और मौत का विचार ही उसको दुखी कर गया।

तभी बुलबुल कुछ बोल पड़ी जिसे सुन कर शाहज़ादा चौंक गया। उसने कहा — "शाहज़ादे तुम दुखी क्यों हो? तुम्हें क्या परेशानी है?"

शाहज़ादा यह सुन कर कॉप गया क्योंकि उसको यही पता नहीं चला कि यह बात उससे चिड़िया ने कही थी या फिर कोई आत्मा थी जो उससे यह पूछ रही थी। धीरे धीरे वह शान्त हुआ तो उसने सोचा कि लगता है कि अल्लाह ने उस पर कोई कृपा की है सो उसने अपनी प्रेम कहानी बुलबुल को सुना दी।

साथ में उसने उससे यह भी कहा कि वह उससे कैसे बुलवाये इस बारे में उसकी बुद्धि जवाब दे चुकी थी।

बुलबुल बोली — "इसमें तुम्हें बहुत चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। यह काम तो बहुत आसान है। आज शाम को तुम महल जाओ और साथ में मुझे भी लेते जाओ। सुलताना सात परदों में रहती है। आज तक किसी ने उसका चेहरा नहीं देखा है। वह भी किसी को नहीं देखती है।

तुम मेरा पिंजरा लैम्प के डंडे के नीचे रख देना और फिर सुलताना से पूछना कि वह कैसी है। अब उसने तो न बोलने की कसम खा रखी है सो वह तो कुछ बोलेगी नहीं। तो तुम उससे कहना कि "ठीक है अगर तुम मुझसे नहीं बोलतीं तो में लैम्प के डंडे से ही बात कर लेता हूॅ। फिर तुम मुझसे बात करना शुरू करना और मैं तुम्हारी बातों को जवाब दूॅगी।"

शाहज़ादे ने उसकी सलाह मानी और सीधा बादशाह के महल पहुॅचा। जब बादशाह को यह बताया गया कि नया आने वाला उसकी बेटी के पास जाना चाहता है तो उसने शाहज़ादे का प्रेम से स्वागत किया और उसे उसके इरादे से टालने की कोशिश की।

उसने उससे कहा कि हजारों लोग उसको बुलवाने की कोशिश में उसके पीछे अपनी जान दे चुके हैं। फिर भी उसने यही प्रतिज्ञा कर रखी है कि वह उसकी शादी उसी से करेगा जो उससे एक शब्द भी बुलवाने में सफल हो जायेगा। दूसरी ओर अगर कोई इस काम में सफल नहीं हो पाया तो उसका सिर काट दिया जायेगा।

जैसा कि शहज़ादा देख सकता है कि उसका पूरा किला आदमियों की खोपड़ियों से ही बना हुआ है।"

वह सख्त नौजवान किसी डर से डराया नहीं जा सका। वह अपने इरादे से हिल कर नहीं दिया। बल्कि वह बादशाह के पैरों पर गिर पड़ा और उससे कहा कि या तो वह अपने उद्देश्य को प्राप्त कर के रहेगा या फिर अपनी जान दे देगा।

सो अब कुछ नहीं कहना था। बादशाह ने शाहज़ादे को राजकुमारी के पास जाने की इजाज़त दे दी।

जब वह राजकुमारी के महल में पहुॅचा तो शाम हो रही थी। उसने अपना पिंजरा लैम्प के डंडे के नीचे रख दिया और राजकुमारी के सामने बहुत नीचे तक सिर झुकाया और उससे उसके स्वास्थ्य के बारे में पूछा और कुछ इधर उधर की बातें कीं।

अब उनका कोई जवाब तो उसको मिलना ही नहीं था सो शाहज़ादे ने राजकुमारी से कहा — "काफी देर हो रही है और तुमने मेरे ऊपर एक शब्द भी बोलने की कृपा नहीं की है तो फिर मैं अब लैम्प के डंडे से ही बात कर लेता हूॅ। हालॉकि उसके अन्दर आत्मा तो नहीं है पर शायद उसमें भावनाऐं अधिक हैं।"

यह कह कर वह लैम्प के डंडे की ओर घूमा और उससे पूछा — "तुम कैसे हो?"

लैम्प के डंडे ने तुरन्त ही जवाब दिया — "मैं अच्छा हूॅ। हालॉकि बहुत साल हो गये हैं जब किसी ने मुझसे बातें की हैं। अल्लाह ने तुम्हें मेरे पास भेजा है। आज मैं इतना खुश हूॅ कि मुझे लगता है जैसे आज मुझे सारी दुनियॉ मिल गयी हो। क्या मैं तुम्हें एक कहानी सुना कर तुम्हारा दिल बहलाऊॅ।"

शाहज़ादे ने मुस्कुरा कर हॉ में सिर हिलाया तो लैम्प के डंडे ने आगे कहना शुरू किया —

"एक बार की बात है कि एक बादशाह था जिसके एक बेटी थी। उससे तीन राजकुमार शादी करना चाहते थे। बादशाह ने उन तीनों राजकुमारों से कहा — "तुम लोगों में जो कोई भी साहस में सबसे आगे रहेगा वही मेरी बेटी से शादी करेगा।"

तीनों राजकुमार वहॉ से एक साथ चल दिये। चलते चलते वे एक सोते पर आये तो वहॉ से उन्होंने निश्चय कि वे तीन दिशाओं में जायेंगे ताकि उनके उद्देश्यों में किसी तरह का झगड़ा न हो।

उन्होंने यह भी निश्चय किया कि वे अपनी अपनी अँगूठियॉ वहॉ एक पत्थर के नीचे दबा जाते हैं। जब वे वापस लौटेंगे तब वे वहॉ से अपनी अपनी अँगूठी निकाल लेंगे। इससे उनको यह भी पता चल जायेगा कि कौन लौटा है कौन नहीं। इसके अलावा कौन सबसे बाद में लौटा है।

उनमें से पहले ने यह सीखा कि छह महीनों की यात्रा को एक घंटे में कैसे पूरा किया जा सकता है। दूसरे ने यह सीखा कि अपने आपको अदृश्य कैसे करना है। तीसरे ने यह सीखा कि किसी भी मरे हुए में जान कैसे डालनी है। तीनों लगभग एक साथ ही स्रोत पर वापस लौट आये।

जिसने यह सीखा था कि वह अपने आपको अदृश्य कैसे कर सकता था वह बोला कि बादशाह की बेटी बहुत बीमार है और वह दो घंटे में मर जायेगी। तीसरे ने कहा कि उसके पास एक ऐसी दवा है जो मरे को भी ज़िन्दा कर सकती है। पहला बोला कि वह जल्दी जल्दी उसे वह दवा दे आयेगा।

बहुत जल्दी ही वह राजकुमारी के महल में था जहॉ वह मरी जैसी लेटी हुई थी। उसने तुरन्त ही उसे दवा पिला दी। जैसे ही दवा उसके होठों से छुई वह तो ऐसे उठ कर बैठी हो गयी जैसे कभी बीमार ही नहीं थी। इस बीच दूसरे दोनों राजकुमार भी वहॉ आ गये।

बादशाह ने तीनों से अपना अपना अनुभव सुनाने के लिये कहा।"

यहॉ आ कर बुलबुल कुछ पल के लिये रुकी फिर बोली — "ओ मेरे शाहज़ादे। अब इनमें से तुम किसको राजकुमारी के योग्य समझते हो।"

शाहज़ादा बोला — "मेरे विचार से जिसने वह दवा तैयार की।"

बुलबुल ने उसका विरोध करते हुए कहा — "नहीं। जिसने दूसरों को राजकुमारी की हालत की जानकारी दी।"

दोनों में गर्मागर्म बहस होने लगी। चुप राजकुमारी सोचने लगी कि "ये लोग उसको तो भूल ही रहे हैं जो छह महीनों की यात्रा को एक घंटे में पूरा कर सका।"

क्योंकि झगड़ा अभी चल ही रहा था वह उसको और नहीं सह सकी सो उसने अपने सात परदे हटाये और ज़ोर से बोली — "ओ बेवकूफों। मैं तो राजकुमारी को उसको दूँगी जो दवा उसके पास ले कर आया था क्योंकि उसके बिना तो राजकुमारी मरी हुई ही रहती।"

बादशाह को तुरन्त ही यह सूचना दी गयी कि राजकुमारी बोल पड़ी पर राजकुमारी ने अपने इस बोलने का विरोध किया। उसने कहा कि उसको धोखा दिया गया है इसलिये शाहज़ादे को इस काम

में सफल नहीं मानना चाहिये जब तक कि वह उसे तीन बार न बुलवाले।

सो बादशाह ने शाहज़ादे से कहा कि वह उसे दो बार और बुलवाये और फिर राजकुमारी उसकी।

शाहज़ादे ने राजकुमारी का महल छोड़ दिया और अपने घर चला गया। वह फिर से इस मामले पर विचार करने लगा। जब वह गहरी सोच में डूबा था तो बुलबुल फिर बोली — "सुलताना अपनी चुप टूटने पर बहुत गुस्सा है। उसने लैम्प का डंडा तोड़ दिया है। सो अबकी बार तुम मुझे दूसरी ओर दीवार के सहारे रखे डंडे पर रख देना।"

अगले दिन शाम को शाहज़ादा फिर से अपनी बुलबुल के साथ महल के लिये चला। राजकुमारी के महल में घुस कर उसने बुलबुल का पिंजरा दीवार के सहारे वाले डंडे पर रख दिया और राजकुमारी को सलाम किया। पर राजकुमारी कुछ नहीं बोली।

राजकुमारी के कुछ न बोलने पर शाहज़ादे ने बुलबुल से कहा — "राजकुमारी तो बोलने से मना करती है इसलिये मैं तुमसे ही बात करता हॅू। तुम कैसी हो?"

बुलबुल बोली — "मैं बिल्कुल ठीक हॅू। मुझे बहुत खुशी है कि राजकुमारी नहीं बोल रही है क्योंकि अगर वह बोल रही होती तो तुम मुझसे नहीं बोल रहे होते। कोई बात नहीं अगर तुम सुनना चाहो तो मैं तुम्हें एक कहानी सुना सकती हॅू।"

शाहज़ादा बोला — "खुशी से। मैं जरूर सुनूँगा।"

सो बुलबुल ने कहना शुरू किया —

"एक बार एक शहर में एक स्त्री रहती थी। उससे तीन आदमी प्यार करते थे – शहद बनाने वाले का बेटा बालजी ओग्लू, मोम बनाने वाले का बेटा जगजी ओग्लू और खाल रंगने वाले का बेटा तीरजी ओग्लू।[14] उनमें से हर एक उस स्त्री के पास ऐसे समय में जाता था कि दूसरे को यह पता नहीं था उसके पास कोई और भी आता है।

एक दिन वह स्त्री अपने बाल सँवार रही थी कि उसने अपने बालों में एक सफेद बाल देखा तो उसने सोचा "अब तो मैं बूढ़ी हो रही हूँ। वह समय जल्दी ही आने वाला है जब मेरे दोस्त मुझसे थक जायेंगे सो अब मुझे शादी कर लेनी चाहिये।"

सो अगले दिन उसने अपने तीनों प्रेमियों को अलग अलग समयों पर बुलाया। सबसे पहले जगजी आया तो उसने देखा कि उसकी प्रेमिका तो रो रही है।

उसने उसके रोने का कारण पूछा तो स्त्री ने कहा — "मेरे पिता मर गये हैं और मैंने उन्हें बागीचे में दफ़ना दिया है पर ऐसा लगता है कि उनकी आत्मा मुझे तंग कर रही है। अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो तुम अपने आपको एक चादर में लपेट कर उनकी कब्र में तीन

[14] Baldji-Oglu the Honey. maker's Son, Jagdji-Oglu the Tallowmaker's Son, and Tiredji-Oglu the Tanner's Son.

घंटे के लिये लेट जाओ इससे मेरे पिता की आत्मा मुझे फिर कभी तंग नहीं करेगी।"

यह कह कर वह उसे एक खुली हुई कब्र के पास ले गयी जो उसने पहले से ही बना रखी थी। और क्योंकि जगजी तो उसके लिये डूब जाने के लिये भी तैयार था सो उसने चादर ओढ़ी और उस कब्र में लेट गया।

यह कर के वह फिर रोने बैठ गयी। इस बीच बालजी आ गया तो उसने भी पूछा कि वह क्यों रो रही थी। उसने अपने पिता की मौत की पुरानी कहानी उसको भी सुना दी। फिर उसे उसने एक बड़ा सा पत्थर दिया और कहा कि जब उसके पिता का भूत वहॉ आये तो वह उसे उस पत्थर से मार दे।

जैसे ही बालजी वहॉ से गया तो वह फिर रोने बैठ गयी। जल्दी ही तीरजी भी वहॉ आ गया। उसको रोता देख कर उसने भी उससे सहानुभूति दिखायी और उसके रोने का कारण पूछा तो उसने उससे कहा — "मैं कैसे न रोऊॅ जबकि मेरे पिता मर चुके हैं और मैंने उन्हें बागीचे में दफ़ना दिया है।

उनका एक दुश्मन है जो जादूगर है। वह उनके शरीर को ले जाने के लिये इन्तजार कर रहा है। जैसा कि तुम देख सकते हो कि उसने कब्र खोद ली है। अगर तुम उनके शरीर को उससे बचा कर ला सको तो सब ठीक हो जायेगा और अगर तुम नहीं ला पाये तो मैं तो गयी।"

जैसे ही स्त्री ने यह कहा तो वह तो कब्र की ओर जगजी को उसके सामने लाने के लिये भाग गया पर बालजी को लगा कि वहॉ एक की जगह दो भूत हैं तो उसने उस पत्थर से दोनों को मारने की कोशिश की। इस बीच जगजी को लगा कि भूत ने उसे मारा तो वह कब्र में से निकला अपनी लपेटी हुई चादर निकाल कर फेंक दी।

तीनों ने एक दूसरे को पहचान लिया और वे आपस में एक दूसरे से पूछने चले कि यह सब क्या मामला था।"

यह सुना कर बुलबुल बोली — "अब मेरे शाहज़ादे तुम मुझे यह बताओ कि उन तीनों में से कौन सा प्रेमी उस स्त्री के लिये सबसे अधिक उचित था। मेरे विचार से तीरजी सबसे अधिक उचित था जो उसके पिता का शरीर लाने के लिये तुरन्त ही भाग गया था।"

पर शाहज़ादा का कहना था कि वह बालजी था जिसने अपने आपको इतनी मुश्किलों में डाला कि उसे उसके लिये भूत को पत्थर से मारना पड़ा।

दोनों में फिर बहस शुरू हो गयी। अपनी बहस में उन्होंने जगजी का नाम कहीं नहीं आने दिया। राजकुमारी को जो बैठी बैठी यह बहस सुन रही थी यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि दोनों में से जगजी के साहस का नाम कोई नहीं ले रहा था। तब उसने बड़ी नर्मी से अपनी राय प्रगट की।

यह खबर कि राजकुमारी दोबारा भी बोल पड़ी बादशाह को उसके महल में पहुॅचायी गयी।

पर अभी तो उसको एक बार और बुलवाना था। जब शाहज़ादा अपने कमरे में बैठा हुआ था तो बुलबुल ने उससे कहा — "राजकुमारी अबकी बार तो हमारे इस धोखा दिये जाने पर इतनी गुस्सा है कि उसने दीवार में लगे हुए डंडे के टुकड़े टुकड़े करवा दिये हैं। इसलिये अगले दिन तुम मेरा पिंजरा दरवाजे के पीछे रख देना।"

अगले दिन राजकुमारी के साथ तीसरा और अन्तिम सामना पहले दो सामनों में से कोई अधिक सुखद नहीं था। आज उसने सोच रखा था कि आज तो वह शाहज़ादे की दरवाजे से बात करने की कला पर अपना मुँह बिल्कुल नहीं खोलेगी। पर?

दरवाजे ने अपनी कहानी शुरू की —

"एक बार की बात है कि एक बढ़ई एक दर्जी और एक सोफ्ता[15] तीनों एक साथ यात्रा कर रहे थे। घूमते घूमते वे तीनों एक शहर में आ पहुँचे। वहॉ उन्होंने एक घर किराये पर ले लिया और अपना बिज़नैस शुरू कर दिया।

एक रात जब दूसरे दोनों सोये हुए थे तो बढ़ई उठा उसने कौफ़ी पी अपनी चिलम जलायी और अपने कमरे में पड़े हुए लकड़ी के टुकड़ों से एक बहुत सुन्दर लड़की की मूर्ति बनायी। उसे खत्म कर के वह सो गया। कुछ समय बाद दर्जी उठा। एक सुन्दर लड़की

[15] Softa – a Turkish word which means "Muslim religious man"

की मूर्ति देख कर उसने उसके योग्य कपड़े बना दिये। उनको उसे पहनाये और वह भी जा कर सो गया।

सुबह होने के लगभग सोफ्ता उठा। उसने उस सुन्दर लड़की को देखा तो अल्लाह से प्रार्थना की कि वह उसमें जान डाल दे। अल्लाह ने उसकी प्रार्थना सुनी और वह ज़िन्दा हो गयी। उसने अपनी ऑखें ऐसे खोलीं जैसे कोई सपना देख कर जागी हो।

सुबह हो गयी थी सो बढ़ई और दर्जी भी उठ गये। अब तीनों में झगड़ा होने लगा कि वह सुन्दर लड़की किसकी थी। बढ़ई का कहना था कि वह उसकी थी क्योंकि उसने उसे गढ़ा है।

दर्जी का दावा था कि वह लड़की उसकी थी क्योंकि उसने लड़की को ठीक से देखने के योग्य बनाया था और सोफ्ता का कहना था कि बिना आत्मा के वह मूर्ति और कपड़े बेकार थे अगर उसने उस मूर्ति में जान न डाली होती।

तो अब न्यायपूर्वक इस बात का फैसला करो कि वह लड़की किसको मिलनी चाहिये थी। मेरे विचार से वह लड़की बढ़ई को मिलनी चाहिये।"

यहॉ आ कर बुलबुल रुक गयी। शाहज़ादे का विचार था कि लड़की दर्जी को मिलनी चाहिये थी। पहले की तरह इस बार भी दोनों की बहस ज़ोर पकड़ गयी।

राजकुमारी सोफ्ता के पक्ष में थी और ये लोग उस पर ध्यान ही नहीं दे रहे थे सो वह चुप नहीं रह सकी। वह बोली — "अरे

बेवकूफो। यह लड़की सोफ्ता की थी। उसने उसे ज़िन्दगी दी थी इसलिये वह उसी की थी किसी और की नहीं।"

जैसे ही उसने अपना बोलना खत्म किया तो बादशाह को यह खबर पहुॅचा दी गयी कि राजकुमारी तीसरी बार भी बोल पड़ी।

शाहज़ादे ने अब चुप राजकुमारी को कानूनन जीत लिया था। अब वह चुप राजकुमारी बिल्कुल नहीं रह गयी थी। सारे शहर में खुशियॉ मनायी जाने लगीं और शादी की तैयारियॉ शुरू हो गयीं।

शाहज़ादे की इच्छा थी कि उसकी शादी उसके पिता के घर में हो सो जब वह अपने घर पहुॅचा तो उसका बहुत ज़ोर शोर से स्वागत हुआ और वहॉ भी खूब खुशियॉ मनायी गयीं। यह आनन्द **40** दिन और **40** रात तक मनाया गया।

वह बुढ़िया जिसका जग शाहज़ादे ने तीन बार तोड़ा था उसे महल में दादी की जगह दे दी गयी। वह उस पद पर अपने जीवन के अन्तिम क्षणों तक बनी रही।

7 हीरो करा मुस्तफा[16]

एक बार की बात है कि एक स्त्री थी जिसका पति इतना शर्मीला था कि वह बाहर कभी अकेला नहीं जा सकता था। एक बार उस स्त्री को किसी दावत में जाना था तो हर बार की तरह से उसके पति ने उससे विनती की कि वह घर जल्दी आ जाये नहीं तो उसके वापस आने तक वह घर में ही बॅधा बैठा रहेगा।

उसने अपने पति से जल्दी लौट कर आने का वायदा किया और चली गयी। वह अभी अपनी सहेली के घर आधा ही घंटा बैठी थी कि वह वहॉ से आने के लिये उठ खड़ी हुई।

उसकी मेजबानों ने पूछा कि वह इतनी जल्दी क्यों जाना चाहती है तो उसने कहा कि उसका पति घर में बैठा हुआ उसका इन्तजार कर रहा होगा। उन्होंने पूछा कि वह उसका इन्तजार क्यों कर रहा होगा।

स्त्री ने जवाब दिया कि "क्योंकि वह मेरे बिना बाहर जाने से डरता है।"

वे बोलीं "यह तो बड़ी अजीब बात है।" और जिद कर के उसे थोड़ी देर के लिये और बिठा लिया। उन्होंने उसे सलाह दी कि अगली बार जब वह उसे ले कर बाहर जाये तो अॅधेरा होने के बाद जाये। फिर वह उसको अकेला छोड़ दे इससे वह ठीक हो जायेगा।

[16] Kara Mustafa the Hero. Tale No 7

स्त्री ने उनकी सलाह मानी और जैसे ही उसको पहला मौका मिला उसने उसे अँधेरे में अकेला छोड़ दिया। अब वह आदमी तो डर के मारे बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। वह वहीं इन्तजार करते करते सो गया। जब सुबह हुई तो वह उठा और गुस्से में भर कर घर पहुँचा।

उसके घर में उसका कहने के लिये उसके पिता का दिया हुआ एक जंग लगा चाकू था। उसने उसे उठाया और उसे साफ करते समय यह सोचा कि अब वह अपनी पत्नी के साथ नहीं रहेगा।

सो वह घर से चल दिया और एक ऐसी जगह आया जहॉ शहद बिखरा हुआ था और जिस पर काफी सारी मख्खियॉ भिनभिना रही थीं। उसने अपना चाकू निकाला और उससे उस चिकने पदार्थ को काट दिया। उसने देखा कि उसने तो **60** मक्खियों को मार दिया था। उसने उसे दोबारा काटा तो फिर गिना तो वे **70** थीं।

वह तुरन्त ही एक खोदने वाले के पास गया और उससे अपने चाकू पर यह खोदने के लिये कहा "बड़े हीरो करा मुस्तफा ने चाकू के एक ही बार में **60** मारीं और दूसरी बार में **70** मारीं।" यह उस चाकू पर लिख कर चाकू उसके मालिक को वापस दे दिया गया। मुस्तफा उसे ले कर वहॉ से चला गया।

चलते चलते वह एक सुनसान जंगल में आया और जब रात हुई तो वह अपना चाकू जमीन में गाड़ कर वहीं सो गया। अब इस जगह **40** देव रहते थे। उनमें से एक देव ऐसा था जो रोज सुबह

जल्दी ही घूमने जाया करता था। उसने जंगल में एक आदमी सोता हुआ देखा और उसके पास में गड़ा हुआ चाकू देखा। उसने चाकू निकाल कर उस पर लिखा हुआ पढ़ा तो वह तो डर के मारे वहीं जम सा गया।

उसी समय मुस्तफा की ऑख खुल गयी उसको जागते देख कर देव ने उसे खुश करने के इरादे से उससे कहा कि वह उसके भाइयों के साथ शामिल हो जाये।

हमारे हीरो ने पूछा "तुम कौन हो?"

देव बोला "हम लोग **40** देव हैं और अगर तुम हममें शामिल हो जाओगे तो हम लोग **41** हो जायेंगे।"

मुस्तफा बोला — "जा कर उनसे बोल दो कि मैं तैयार हूॅ।"

यह सुन कर देव तुरन्त ही अपने भाइयों के पास लौटा और उनसे कहा — "मेरे भाइयो। एक बहुत बड़ा हीरो हमारे झुंड में मिलने के लिये तैयार है। उसकी ताकत के बारे में उसके चाकू पर लिखे हुए से जाना जा सकता है – "बड़े हीरो करा मुस्तफा ने चाकू के एक ही बार में **60** मारीं और दूसरी बार में **70** मारीं।" हमको यह जगह ठीक कर लेनी चाहिये क्योंकि वह यहॉ कभी भी आने वाला होगा।

सब देव मुस्तफा से मिलने के लिये बेचैन थे पर जब मुस्तफा ने देवों को देखा तो उसको अपनी हिम्मत डूबती हुई नजर आयी। वह बोला — "अल्लाह तुम्हें सलाम कहता है।"

देवों ने बड़ी शराफत से उसके सलाम का जवाब दिया। उन्होंने उसको एक अच्छी सी बैठने की जगह दी। धीरे धीरे उसने उनसे पूछा कि "क्या तुममें से कोई मेरे जैसा है?"

देवों ने कहा — "नहीं जनाब।"

मुस्तफा ने सन्तुष्ट हो कर कहा — "क्योंकि अगर ऐसा है तो वह मेरे सामने आये और अपनी ताकत मेरे साथ आजमाये।"

देव बोले कि उसके जैसा ताकतवर उन्हें कोई कहॉ मिलेगा और फिर वे अपने घर की ओर चले गये।

देवों को अपना पानी बहुत दूर से लाना पड़ता था और यह काम बारी बारी से हर देव करता था। अब क्योंकि वे साइज़ में भी खूब बड़े थे और ताकत में भी खूब ज़्यादा थे इसलिये एक दुनियॉ के आदमी के मुकाबले में एक बार में वे बहुत सारा पानी ला सकते थे। अब यह काम मुस्तफा तो नहीं कर सकता था।

अगले दिन एक देव ने मुस्तफा से कहा "आज पानी लाने की बारी तुम्हारी है और हमें यह कहते हुए बहुत दुख है कि पानी का कुॅआ यहॉ से बहुत दूर है।" क्योंकि देव मुस्तफा की ताकत से डरते थे इसलिये वे उससे बड़ी विनम्रता से बात किया करते थे।

पहले तो मुस्तफा कुछ सोचता रहा फिर उसने उनसे एक रस्सी मॉगी। एक रस्सी उसे दे दी गयी और वह उसे ले कर कुॅए की ओर चल पड़ा।

देवों को यह जानने की उत्सुकता हुई कि वह रस्सी का क्या करेगा सो यह देखने के लिये वे उसे कुछ दूरी से देखने लगे। उन्होंने देखा कि मुस्तफा ने उस रस्सी से कुँए के चारों ओर जो पत्थर की दीवार लगी थी उसको बॉध दिया।

यह देख कर वे अपने आपको रोक न सके और जा कर उससे आश्चर्य से पूछा कि वह यह क्या कर रहा था। उसने कहा — "ओह कुछ नहीं। बस मैं इस कुँए को इस रस्सी से बॉध कर अपनी पीठ पर रख रहा था ताकि मैं इसे तुम लोगों के पास ले जा सकूँ जिससे तुम लोगों को पानी की फिर से दिक्कत न हो सके।"

यह सुन कर उन्होंने उससे विनती कि अल्लाह के नाम पर वह यह सब न करे। उसने भी तुरन्त ही यह वादा इस शर्त पर किया कि वे लोग उसे पानी लाने के लिये फिर से तंग नहीं करेंगे।

कुछ दिन बाद जंगल से लकड़ी लाने की बारी मुस्तफा की आयी तो उसने फिर से एक रस्सी मॉगी जिससे वह लकड़ी ला सके और वह लकड़ी लाने चला गया।

पर देवों को फिर से आश्चर्य हुआ कि वह लकड़ी लाने के लिये उस रस्सी का इस्तेमाल कैसे करेगा सो देव एक बार फिर पीछे छिप गये ताकि वे छिप कर इस बात का पता चला पायें।

उन्होंने देखा कि उसने अपनी रस्सी को जमीन में एक खूँटी गाड़ कर उसमें बॉध दिया और उसे खींचने लगा। इत्तफाक से उसी समय बड़े ज़ोर से हवा चली और सारे पेड़ हिल गये। देवों को फिर

आश्चर्य हुआ सो उन्होंने मुस्तफा से फिर पूछा — "मुस्तफा यह तुम क्या कर रहे हो?"

मुस्तफा फिर बोला — "मैं यह जंगल घर ले चल रहा हूँ ताकि फिर तुम्हें कभी लकड़ी लाने की तकलीफ न उठानी पड़े।"

सारे देव चिल्लाये — "इस तरह से तो तुम सारे जंगल को नष्ट कर दोगे। हम लकड़ी अपने आप ही ले आयेंगे।"

अब तो देव मुस्तफा से बहुत ही ज़्यादा डरे हुए थे सो उन्होंने एक मीटिंग बुलायी जिसमें वे अपने इस नये साथी से छुटकारा पाने की कोई तरकीब ढूँढ सकें। सो यह निश्चय किया गया कि जब यह रात को सो रहा हो तो इसके ऊपर गर्म पानी फेंक दिया जाये और इस तरह से उसे मार दिया जाये।

अपनी खुशकिस्मती से मुस्तफा ने यह सुन लिया और वह इसके लिये तैयारी कर के बैठ गया। जब रात हुई तो वह रोज की तरह से सोने के लिये चला गया। देवों ने पानी गर्म किया और उसे उसकी झोंपड़ी के ऊपर छत पर से नीचे फेंक दिया।

पर मुस्तफा ने अपने बिस्तर में एक गोल तकिया रख कर उसे चादर से ढक दिया था और खुद एक कोने में जा कर बैठ गया था जहॉ वह सुबह होने तक आराम से सोता रहा।

जब सुबह हुई और देव इस विश्वास के साथ मुस्तफा के घर आये कि मुस्तफा तो अब तक मर गया होगा पर जब उन्होंने दरवाजा खटखटाया तो मुस्तफा बोला "कौन है?"

देवों ने आश्चर्यचकित हो कर कहा — "उठो उठो। अब तो दोपहर हो गयी।"

वह बोला — "कल रात बहुत गर्म था। मैं तो पसीने में नहा गया था।"

देवों को इस बात से बहुत आश्चर्य हुआ कि उतने गर्म पानी का उस पर केवल इतना ही असर हुआ कि वह बस पसीने में ही नहा सका।

उसके बाद देवों ने जब वह सो रहा हो तब मुस्तफा के ऊपर 40 लोहे की गेंदें फेंकने का निश्चय किया कि तब तो मुस्तफा अवश्य ही मर जायेगा। हमारे हीरो ने उनका यह प्लान भी सुन लिया।

सो रात को जब वह सोने गया तो उसने फिर से तकियों को बिस्तर पर सजा कर रख कर उनको चादर से ढक दिया और खुद यह देखने के लिये एक कोने में बैठ गया कि देखें अब आगे क्या होता है।

आधी रात के समय देव उसके घर की छत पर चढ़ गये और वहॉ की कुछ टाइल्स हटा कर नीचे देखने लगे। उन्होंने देखा कि उनका साथी तो वहॉ सो रहा था। वे आपस में फुसफुसाये "देख वह उसका सिर है। वह उसकी छाती है।" और फिर एक एक कर के उन्होंने उसके ऊपर चालीसों गेंदें फेंक दीं।

अगली सुबह देव मुस्तफा के घर गये और उसका दरवाजा खटखटाया तो इस बार अन्दर से कोई जवाब नहीं आया। उनको यह विश्वास हो गया कि आज मुस्तफा निश्चित रूप से मर गया और अब उन्हें कोई परेशान नहीं करेगा। पर पक्का करने के लिये उन्होंने दरवाजा दोबारा खटखटाया और ज़ोर ज़ोर से चिल्लाये।

तब उनको पता चला कि वे तो बहुत जल्दी ही खुश होने लगे थे क्योंकि तभी मुस्तफा की आवाज आयी — "उफ़। कल रात को मैं सारी रात सो ही नहीं सका सारी रात मेरे ऊपर चूहे दौड़ते रहे। मेहरबानी कर के मुझे थोड़ी देर और सोने दो।"

यह सुन कर तो देव कुछ पागल से हो गये। वे सोचने लगे "यह किस प्रकार का आदमी है जिसे उतनी भारी भारी गेंदें भी चूहे जैसी लग रही थीं।"

कुछ दिन बाद देवों ने मुस्तफा से कहा — "बराबर के देश में हमारा एक भाई रहता है। क्या तुम उसके साथ द्वन्द्व युद्ध लड़ोगे?"

मुस्तफा ने पूछा कि क्या वह एक अच्छा ताकतवर देव है। वे बोले "हॉ।" मुस्तफा बोला "तो ठीक है मैं उससे जरूर लड़ूँगा।" जब मुस्तफा यह बात कह रहा था तो डर के मारे उसकी जान निकली जा रही थी।

जब वह बहुत बड़ा देव लड़ने के लिये मैदान में आया उसने कहा कि द्वन्द्व युद्ध लड़ने से पहले एक कुश्ती हो जाये। देव राजी हो गया और दोनों कुश्ती के मैदान में पहुँचे।

देव ने पहली ही बार में मुस्तफा को गले से इतनी ज़ोर से पकड़ लिया कि मुस्तफा की तो ऑखें ही बाहर निकल आयीं। देव ने उसकी गर्दन को थोड़ा सा ढीला छोड़ते हुए पूछा "यह तुम मुझे ऐसे क्या घूर रहे हो?"

मुस्तफा बोला — "मैं देख रहा था कि मैं तुम्हें कितना ऊॅचा फेंकूॅ कि जब तुम नीचे गिरो तो तुम्हारे सारे अंग टूट जायें।"

यह सुन कर सारे देव मुस्तफा के पैरों पर गिर पड़े और उससे विनती की कि वह उनके भाई को ज़िन्दा छोड़ दे। मुस्तफा ने बड़ी शान के साथ अपने विरोधी को छोड़ दिया और देवों ने एक बार फिर से उसे बहुत सारे सोने की मुहरें इनाम में दीं। उसने खुशी से उनका वह पैसा ले लिया और उनसे जाने की आज्ञा मॉगी।

प्यार से उन सबसे विदा लेते हुए वह एक देव के साथ वहॉ से चल दिया। देवों ने उस देव को उसे घर तक छोड़ आने के लिये उसके साथ भेज दिया था।

जब वह अपने घर के पास आ पहुॅचा तो उसने देखा कि उसकी पत्नी खिड़की से बाहर देख रही थी। जैसे ही उसकी नजर मुस्तफा पर पड़ी वह बोली — "देखो मेरा कायर पति एक देव के साथ आ रहा है।"

मुस्तफा ने देव की पीठ के पीछे से अपनी पत्नी को इशारा किया कि वह कुछ न बोले और अपने घर की ओर भागना शुरू कर दिया।

देव ने पूछा — "तुम इतनी जल्दी जल्दी कहॉ भागे जा रहे हो?"

मुस्तफा बोला — "घर में से तीर कमान लाने के लिये ताकि मैं तुम्हें मार सकूँ।"

यह सुन कर देव उलटे पैरों वहॉ से भाग कर अपने भाइयों के पास चला गया। अभी मुस्तफा ने अपने अपने घर में कुछ ही देर आराम किया था कि एक खबर मिली कि शहर में एक भालू ने बहुत आतंक मचाया हुआ था।

वहॉ के रहने वाले अपने वाली यानी सरदार के पास गये कि वह मुस्तफा को हुक्म दे कि वह उस भालू से उनकी जान बचाये। उन्होंने कहा कि उसने तो पहले ही **40** देवों का सामना किया है। यह बड़ी शर्म की बात है कि केवल एक भालू की वजह से इतने सारे भोलेभाले लोगों की जान जानी चाहिये।

वाली ने मुस्तफा को बुलवाया और उससे कहा कि यह कोई अच्छी बात नहीं कि उसके रहते हुए एक भालू इतने सारे लोगों को तंग करे।

मुस्तफा बोला — "आप मुझे वह जगह दिखायें जहॉ वह भालू रहता है और **40** घुड़सवार मेरे साथ कर दें।"

उसकी विनती स्वीकार कर ली गयी। मुस्तफा अस्तबल में गया और वहॉ पहुँच कर उसने थोड़े से छोटे छोटे पत्थर उठाये और उन्हें

घोड़ों के सामने उछाल दिया। सिवाय एक घोड़े के सारे घोड़े पीछे हट गये। यह एक घोड़ा मुस्तफा ने खुद ने ले लिया।

घुड़सवारों ने जब यह तमाशा देखा तो वाली से जा कर कहा कि यह मुस्तफा तो कुछ पागल सा लगता है और वे भालू को मारने में उसकी कोई सहायता करने के लिये तैयार नहीं थे।

वाली ने उन्हें सलाह दी कि उनको मुस्तफा के साथ जाना ही चाहिये पर वे यह कर सकते हैं कि जैसे ही वे भालू के आने की आवाज सुनें तो वे उसे अकेला छोड़ कर भाग जायें और वह उसके साथ जैसा चाहे वैसा करने के लिये उसे अकेला ही छोड़ दें।

सो वे सब भालू के रहने की जगह के लिये चल दिये। जैसे ही वे भालू के छिपने की जगह आये तो चालीसों घुड़सवार मुस्तफा को वहॉ अकेला छोड़ कर वापस भाग गये।

मुस्तफा ने अपने घोड़े को आगे बढ़ाने की कोशिश की पर उसका घोड़ा भी आगे बढ़ कर नहीं दिया। उधर भालू लम्बे लम्बे कदम रखता हुआ मुस्तफा की ओर बढ़ता चला आ रहा था।

और कोई चारा न देख कर मुस्तफा फिर से अपने घोड़े की पीठ पर चढ़ा और वहीं पास के एक पेड़ की शाख से लटक गया और फिर अपने आपको ऊपर खींच लिया।

भालू पेड़ के नीचे आया और उस पर चढ़ने वाला हो रहा था कि मुस्तफा ने शाख पर से अपनी पकड़ छोड़ दी और भालू की पीठ पर कूद गया। फिर उसने उसके कान इतनी ज़ोर से मरोड़े कि वह

भी जिस दिशा में घुड़सवार भागे गये थे उसी दिशा में भागा चला गया।

जब वे घुड़सवार उसे दिखायी देने लगे तो वह चिल्लाया — "हीरो करा मुस्तफा आ रहा है।"

यह सुन कर उन्होंने पीछे मुड़ कर देखा तो स्थिति को समझ कर उन्होंने अपने अपने भालों से भालू को छेद डाला।

बस इसके बाद तो करा मुस्तफा की प्रसिद्धि चारों ओर दूर दूर तक फैल गयी। वाली ने उसको बहुत सारे इनाम और सम्मान दिये। उसने अपने पड़ोसियों के सम्मान का भी जीवन भर तक आनन्द लिया।

8 जादूगर दरवेश[17]

बहुत दिनों की बात है कि एक बादशाह था जिसके कोई बेटा नहीं था। एक दिन वह अपने लाला यानी वज़ीर के साथ घूम रहा था कि घूमते घूमते वह एक कुँए को पास पहुँचा जहॉ वे अपनी इच्छा पूरी करने के लिये प्रार्थना करने के लिये रुके।

कि तभी अचानक एक दरवेश वहॉ प्रगट हुआ और बोला — "तुम्हारी जय हो बादशाह।"

यह सुन कर बादशाह बोला — "अगर आप यह जानते हैं कि मैं बादशाह हूँ तब आपको मेरे दुख का कारण भी मालूम होगा।"

दरवेश ने अपनी छाती में से एक सेब निकाला और उसे बादशाह को देते हुए कहा कि "तुम्हारा दुख यह है कि तुम्हारे कोई बेटा नहीं है। लो यह सेब लो। इसमें से आधा सेब तुम खा लेना और दूसरा आधा अपनी पत्नी को दे देना। ठीक समय पर तुम्हारे बेटा हो जायेगा। बीस साल तक वह बेटा तुम्हारा रहेगा फिर बाद में वह मेरा हो जायेगा।"

यह कह कर वह गायब हो गया। बादशाह अपने महल वापस चला गया। उसने सेब के दो टुकड़े किये उसमें से एक टुकड़ा खुद खा लिया और दूसरा टुकड़ा अपनी पत्नी को दे दिया। कुछ समय बाद जैसा कि जादूगर दरवेश ने कहा था उनके एक बेटा हुआ।

[17] The Wizard Dervish. Tale No 8

बादशाह ने इस खुशी को मौके को अपने राज्य भर में मनाने की घोषणा कर दी। जब बेटा पॉच साल का हुआ तो उसको पढ़ना लिखना सिखने के लिये एक गुरू का इन्तजाम कर दिया गया। अपने तेरहवें साल में वह अब बाहर घूमने जाने लगा था और फिर जल्दी ही बाद वह शिकार करने भी जाने लगा।

जब वह अपनी बीसवें साल के आसपास आया तो उसके पिता ने उसके लिये एक दुलहिन ढूँढनी शुरू कर दी। उसके लिये एक ठीक लड़की देख ली गयी और दोनों की शादी पक्की कर दी गयी।

पर जिस दिन उनकी शादी होने वाली थी उस दिन घर में सारे मेहमान शादी की रस्म के लिये इकट्ठे थे। दरवेश आया और दुलहे को पकड़ कर एक पहाड़ की तलहटी में ले गया। वहॉ उसने राजकुमार से कहा — "अब तुम यहॉ शान्ति से रहो।" और यह कह कर वह वहॉ से चला गया।

नौजवान राजकुमार बेचारा डर गया और इधर उधर देखने लगा। उसे इससे ज़्यादा आश्चर्यजनक चीज़ और कोई दिखायी नहीं दी कि तीन सफेद फाख्ता उसी नदी की ओर उड़ कर आ रही थीं जिस नदी के किनारे वह बैठा हुआ था।

जब वे वहॉ आ कर बैठ गयी तो वे तीन सुन्दर लड़कियों में बदल गयीं और नहाने के लिये पानी में घुस गयीं। नहाने के बाद उनमें से दो लड़कियॉ बाहर निकल आयीं और फिर से फाख्ता बन गयीं।

पर तीसरी लड़की जब पानी से बाहर निकली तो उसकी निगाह राजकुमार पर पड़ी। वह उसके वहॉ होने से बहुत आश्चर्यचकित हुई और उससे पूछा कि वह वहॉ कैसे आया। उसने कहा कि एक दरवेश उसे वहॉ ले कर आया।

लड़की बोली — "वह दरवेश मेरे पिता हैं। जब वह आयेंगे तब वह तुम्हें बालों से पकड़ेंगे और तुम्हें इस पेड़ से टॉग देंगे। फिर वह तुम्हें कोड़े से मारेंगे। वह तुमसे पूछेंगे "क्या तू जानता है?" तो इस सवाल का जवाब तुम देना कि "मैं नहीं जानता।"

यह सलाह दे कर वह लड़की फाख्ता में बदल कर वहॉ से उड़ कर चली गयी।

इसी समय राजकुमार ने दरवेश को हाथ में कोड़ा ले कर अपने पास आते हुए देखा। उसने राजकुमार को उसके बालों से पकड़ पेड़ की एक शाख से लटका दिया और कोड़े से खूब मारा। फिर उससे पूछा "क्या तू जानता है?"

राजकुमार ने जवाब दिया कि "मैं नहीं जानता।"

इस तरह से वह वहॉ तीन दिन तक तब तक पीटा गया जब तक उसके शरीर पर नील के निशान नहीं पड़ गये। पर जब दरवेश ने यह समझ लिया कि राजकुमार कुछ नहीं समझा तो उसने उसे छोड़ दिया।

एक दिन जब राजकुमार बाहर टहल रहा था तो एक फाख्ता उसके पास आयी और उससे कहा "लो यह चिड़िया लो और इसे

छिपा लो। जब मेरे पिता तुमसे यह पूछें कि तुम्हें कौन सी लड़की चाहिये तो तुम मेरी ओर इशारा कर देना। और अगर तुम मुझे न पहचान पाओ तो तुम यह चिड़िया निकालना और कहना कि तुम उस लड़की को चाहते हो जिसके पास यह उड़ कर जाये।"

अगले दिन दरवेश अपने साथ तीन लड़कियॉ ले कर आया और राजकुमार से पूछा कि उन सबमें से उसे सबसे अच्छी कौन सी लड़की लगती थी।

राजकुमार ने फाख्ता के कहे अनुसार अपने पास वाली चिड़िया छोड़ कर कहा "यह चिड़िया जिस किसी पर भी बैठ जायेगी मुझे वही लड़की पसन्द होगी।" वह चिड़िया उसी लड़की पर जा कर बैठ गयी जिसने उसे वह चिड़िया दी थी।

उस लड़की से उसकी शादी हो गयी पर इसके लिये लड़की की मॉ की इजाज़त नहीं ली गयी थी। वह एक जादूगरनी थी।

एक दिन वह लड़की और राजकुमार एक साथ टहल रहे थे कि उन्होंने देखा कि लड़की की मॉ उनके पीछे पीछे आ रही थी। लड़की ने राजकुमार को एक हल्का सा धक्का मारा और उसे एक बड़े से बागीचे में बदल दिया। खुद वह एक माली में बदल गयी।

लड़की की मॉ उधर आयी और माली से पूछा — "क्या एक लड़की और एक नौजवान यहॉ से गये हैं?"

माली बोला — "मेरे लाल शलगम अभी पके नहीं हैं। वे अभी भी बहुत छोटे हैं।"

जादूगरनी ने थोड़ा गुस्से से कहा — "माली। मैं तुम्हारे लाल शलगमों के बारे में नहीं पूछ रही बल्कि मैं एक लड़की और एक नौजवान के बारे में पूछ रही हूँ।"

माली इसके जवाब में बोला — "ओह पालक? पालक तो मैंने अभी तक बोया ही नहीं है। उसे तो मैं एक या दो महीने बाद ही बोऊँगा।"

यह देख कर कि माली की कुछ समझ में नहीं आ रहा वह वहॉ से चली गयी। जब लड़की की मॉ चली गयी तो उसने बागीचे को फिर से धीरे से धक्का दिया तो वह फिर से नौजवान के रूप में आ गया। उसने अपने आपको भी एक हल्का सा धक्का दिया तो वह खुद भी लड़की के रूप में आ गयी। वे दोनों फिर से वहॉ से चल दिये।

लड़की की मॉ ने फिर पीछे मुड़ कर देखा और उनको साथ चलते देखा तो वह फिर से उनके पास चली। लड़की ने भी पीछे मुड़ कर देखा तो अपनी मॉ को अपना पीछा करते पाया।

उसने तुरन्त ही नौजवान को एक हल्का सा धक्का दिया और उसे ओवन में बदल दिया। और खुद को एक हल्का सा धक्का दिया तो वह एक बेकर में बदल गयी।

मॉ वहॉ आयी और बेकर से पूछा कि क्या उसने किसी लड़की और एक नौजवान को वहॉ से जाते हुए देखा है। बेकार बोला — "अभी डबलरोटी बनी नहीं है। मैंने उसे ओवन में अभी रखा है।"

मॉ ने फिर कहा — "मैं तुम्हारी डबलरोटी के बार में नहीं पूछ रही मैं तो एक लड़की और एक नौजवान के बारे में पूछ रही हूॅ कि क्या तुमने उन्हें यहॉ से जाते देखा है?"

बेकर ने फिर कहा — "मैंने कहा न कि डबलरोटी अभी तैयार नहीं है जब वह तैयार हो जायेगी तब हम उसे खायेंगे।"

जब स्त्री ने यह देखा कि इस बेकर की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा तो वह वहॉ से भी चल दी। जब स्त्री ऑख से ओझल हो गयी तो लड़की ने ओवन को एक हल्का सा धक्का दिया तो वह राजकुमार बन गया और फिर अपने आपको एक हल्का सा धक्का दिया तो वह लड़की बन गयी। वे फिर आगे चले।

स्त्री ने पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि एक लड़की और एक नौजवान चले आ रहे हैं। उसे समझ में आ गया कि वह ओवन और बेकर वह नौजवान और उसकी बेटी थे।

वह फिर उनके पीछे दौड़ी। जब लड़की ने देखा कि उसकी मॉ उसके पीछे पीछे आ रही है तो अबकी बार उसने धक्का दे कर नौजवान को एक तालाब में बदल दिया और खुद को धक्का मार कर एक बतख में बदल लिया और तालाब में तैरने लगी।

जब मॉ उस तालाब के पास आयी तो वह उस तालाब के आगे पीछे भागने लगी जिससे कि वह तालाब के दूसरे किनारे पर जा सके पर फिर भी वह बतख को पकड़ नहीं पायी सो निराश हो कर वह अपने घर चली गयी।

जब खतरा टल गया तब वे दोनों फिर से लड़की और नौजवान में बदले और फिर अपनी यात्रा पर निकल पड़े।

घूमते घामते वे राजकुमार के देश आ गये जहॉ वे एक सराय में चले गये। वहॉ पहुॅच कर राजकुमार ने लड़की से कहा कि तुम यहीं रुको मैं तुम्हारे लिये शाही गाड़ी का इन्तजाम कर के लाता हूॅ ताकि मैं तुम्हें घर ले जा सकूॅ।"

जब वह अपने महल जा रहा था तो रास्ते में उसे दरवेश मिल गया। उसने उसे पकड़ लिया और तुरन्त ही उसके पिता के महल में पहुॅचा दिया और उसे उस बड़े कमरे में ले जा कर खड़ा कर दिया जहॉ उसकी शादी में आये मेहमान अभी भी उसका इन्तजार कर रहे थे।

राजकुमार ने उन सबकी ओर देखा और अपनी ऑखें मलीं। उसने सोचा कि क्या वह अभी तक सपना देख रहा था। यह सब क्या था।

इस बीच लड़की ने देखा कि नौजवान तो अभी तक लौटा ही नहीं। यह सोच कर उसने अपने मन में कहा "ओह यह बेवफा तो अभी तक लौटा ही नहीं। क्या इसने मुझे छोड़ दिया?"

सो उसने अपने आपको एक फाख्ता में बदला और उस बड़े कमरे की एक खिड़की से हो कर वह राजकुमार के कन्धे पर जा कर बैठ गयी। उसने उसका अपमान करते हुए कहा "ओ बेवफा। तुम

मुझे सराय में अकेला छोड़ आये और यहॉ आ कर खुशियॉ मना रहे हो।" यह कह कर वह तुरन्त ही सराय में वापस लौट गयी।

तब राजकुमार ने महसूस किया कि यह कोई सपना नहीं था बल्कि सच था। सो उसने एक गाड़ी ली और तुरन्त ही सराय जा पहुॅचा। लड़की को गाड़ी में बिठाया और अपने महल ले कर चल दिया।

इस समय तक उसकी पहली पत्नी ऐसे अजीब से दुलहे का इन्तजार करते करते थक गयी थी सो वह अपने घर चली गयी। इस प्रकार राजकुमार की शादी दरवेश की लड़की से हो गयी। और इस मौके की खुशियॉ **40** दिन और **40** रातों तक मनायी गयीं।

9 मछली परी[18]

एक बार की बात है कि एक मछियारा था जिसका नाम मुहम्मद था जो अपनी रोजी रोटी मछलियॉ पकड़ कर और उन्हें बेच कर ही कमाता था।

एक दिन वह बहुत बीमार पड़ गया और उसकी ज़िन्दगी की कोई आशा न रही तो उसने अपनी पत्नी से विनती की कि उसको उनके बेटे को यह बात कभी नहीं बतानी चाहिये कि उसका पिता मछली पकड़ कर और उन्हें बेच कर अपनी रोजी रोटी कमाता था।

उसके बाद मछियारा मर गया। समय गुजरता गया। मछियारे का बेटा अब इतना बड़ा हो गया था कि वह अब यह सोचने लायक हो गया था कि उसे अब रोटी कमाने के लिये कौन सा काम करना चाहिये।

उसने कई काम करने की कोशिश की पर वह किसी में सफल नहीं हो सका। फिर जल्दी ही उसकी मॉ भी मर गयी। अब लड़का इस दुनियॉ मे अकेला और छोड़ा हुआ सा रह गया। न उसके पास खाना था और न ही कोई पैसा था।

एक दिन वह अपने घर में ऊपर चला गया लकड़ी के कमरे में ताकि अगर उसे वहॉ कोई बेचने लायक चीज़ मिल जाये तो वह उसे बेच ले।

[18] The Fish Peri. Tale No 9

इस ढूँढने के बीच में उसे अपने पिता का म्छली पकड़ने का जाल मिल गया। जैसे ही उसने उसे दखा तो वह जान गया कि उसका पिता मछलियॉ पकड़ा करता था।

सो उसने वह जाल उठाया और उसे समुद्र ले गया। वहॉ उसे अपनी पहली कोशिश में थोड़ी सफलता मिली। उसने वहॉ दो मछलियॉ पकड़ीं जिनमें से एक को उसने बेच दिया जिसके पैसे से उसने रोटी और कोयला खरीद लिया।

बची हुई मछली उसने उन कोयलों पर पका ली जो उसने खरीदे थे और खा ली। फिर उसने सोचा कि वह मछियारे का काम ही अपना लेगा।

अब एक दिन क्या हुआ कि उसने एक मछली पकड़ी जो इतनी सुन्दर थी कि उसे उसे बेचने में या खाने में बहुत दर्द हुआ सो वह उसे घर ले गया। वहॉ उसने एक बड़ा सा गड्ढा खोद कर उसमें पानी भर कर उसे उसमें रख दिया। उस दिन वह बिना खाना खाये ही सो गया।

अगले दिन वह उठा तो बहुत भूखा था सो वह तुरन्त ही और मछली पकड़ने चला गया। जब वह शाम को मछली पकड़ कर लौट कर आया तो उसे यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि उसकी अनुपस्थिति में उसका सारा घर साफ हो चुका है और उसकी सब चीज़ें अपनी अपनी जगह रखी हुई थीं।

उसने सोचा कि यह सब काम उसके पड़ोसी ने किया होगा तो वह मन ही मन उसकी मेहरबानी के लिये बड़ा कृतज्ञ हुआ उसके लिये प्रार्थना की और अल्लाह से भी उनके ऊपर अपना आशीर्वाद बरसाने के लिये कहा।

अगली सुबह वह वैसे ही उठा जैसे वह रोज उठता था। अपने गड्ढे की मछली को देख कर बहुत खुश हुआ और फिर अपने काम पर चला गया।

दो चार दिन तक ऐसा ही होता रहा कि जब वह सुबह बाहर काम के लिये चला जाता और शाम को घर आता तो अपना घर साफ सुथरा पाता। कुछ दिनों तक उसे इस खेल में आनन्द आता रहा। वह अपनी मछली को भी देख देख कर खुश होता रहा।

एक दिन वह एक कौफी हाउस में जा कर बैठ गया और सोचने लगा कि उसके घर का यह काम कौन करता है। उसका एक साथी वहीं बैठा हुआ था जिसने उसे इस दशा में देख लिया।

वह उसके पास गया औए उससे पूछा कि वह क्या सोच रहा है तो उसने उसे सारी कहानी बता दी तो उसने उससे पूछा कि वह अपनी चाभी कहॉ रखता है और उसकी अनुपस्थिति में वहॉ कौन रहता है।

उसने कहा — "चाभी तो जब मैं सुबह काम पर जाता हूॅ तब अपने साथ ले जाता हूॅ और मेरे जाने के बाद घर में ज़िन्दा प्राणियों में केवल मछली ही वहॉ रहती है।"

उसके साथी ने तब उससे कहा कि वह अगले दिन घर पर ही रहे और छिप कर अपने घर पर नजर रखे। सो उस लड़के ने ऐसा ही किया। वह अपने काम पर बाहर नहीं गया और घर में छिप कर अपने घर पर नजर रखता रहा।

उसने जाने के लिये अपने घर का दरवाजा खोला और बजाय बाहर जाने के अन्दर से ही बन्द कर दिया और छिप गया। जल्दी ही उसने देखा कि मछली पानी में से बाहर कूदी इधर उधर हिली और लो वह तो एक सुन्दर लड़की बन गयी।

वह लड़की तो काम करने चली गयी और इधर लड़के ने उसकी मछली वाली खाल उठा ली जो उसने अभी अभी उतारी थी और उसे आग में फेंक दिया।

लड़की बोली — "तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिये था पर अब तो ऐसा हो गया है तो अब कुछ नहीं किया जा सकता।"

अब वह लड़की मछली बनने से आजाद हो गयी थी तो वह लड़के से शादी करने के लिये तैयार हो गयी। शादी की तैयारियॉ होने लगीं। जिसने भी लड़की को देखा वही उसकी सुन्दरता देख कर मोहित हो गया और कहा कि यह तो किसी बादशाह की रानी होने के लायक है।

यह खबर बादशाह के पास पहुॅची तो उसने उस लड़की को अपने पास बुलाया। जब उसने लड़की को देखा तो वह उससे प्रेम करने लगा और उससे शादी करने का इरादा किया।

उसने लड़के को बुलाया और उससे कहा कि अगर वह उसके तीन इम्तिहानों में पास हो जायेगा तभी वह उस लड़की से शादी कर सकेगा। अगर वह ऐसा नहीं कर पाया तो वह लड़की उसकी हो जायेगी।

उसकी पहली शर्त यह थी कि अगर वह उसके लिये **40** दिनों के अन्दर अन्दर समुद्र के बीच में सोने और हीरे का एक महल बना देगा तो वह उससे यह लड़की नहीं लेगा और अगर वह नहीं बना सका तो वह उसे ले लेगा। लड़का बेचारा बड़े दुखी मन से घर लौटा और रोने लगा।

लड़की ने पूछा — "तुम क्यों रोते हो?"

लड़के ने उसे वह सब बता दिया जो बादशाह ने उससे कहा था पर वह हॅस कर बोली — "तुम चिन्ता न करो हम सब सॅभाल लेंगे। तुम उसी जगह पर जाओ जहॉ तुमने मुझे पकड़ा था और वहॉ जा कर एक पत्थर फेंको। वहॉ एक अरब[19] प्रगट होगा और तुमसे पूछेगा कि तुम उससे क्या चाहते हो।

तुम उससे कहना कि मैम तुमको अपना सलाम भेजती हैं और एक गद्दी मॅगवाती हैं। वह तुमको एक गद्दी देगा तो वह तुम उससे ले लेना और उसे ले कर समुद्र में उस जगह फेंक देना जहॉ बादशाह अपना सोने और हीरे का महल बनवाना चाहते हों। उसके बाद घर आ जाना।"

[19] Arab and Dev words are similar.

लड़के ने उस लड़की ने जो कुछ भी कहा था वह सब मान लिया और अगले दिन जब उन्होंने उस जगह की तरफ देखा जहॉ वह गद्दी फेंकी गयी थी तो वहॉ तो सोने हीरों का एक ऐसा महल खड़ा था जो राजा ने जैसा महल चाहा था उससे भी अच्छा था। वे तुरन्त ही बादशाह को इस बात की खबर देने गये।

बादशाह समझ रहा था कि उस लड़के से ऐसा हो नहीं पायेगा तो वह लड़की उससे ले लेगा। पर अब तो यह काम हो गया था सो अब उसे उससे लड़की लेने की दूसरी शर्त रखनी थी।

उसने लड़के को फिर से बुलाया और उससे एक क्रिस्टल का पुल बनाने को कहा। लड़का दुखी मन से घर पहुॅचा और फिर रोने लगा तो लड़की ने उससे फिर पूछा कि वह क्यों रो रहा था।

लड़के ने फिर उसे सब बताया कि बादशाह ने उससे क्या कहा था। लड़की फिर हॅस कर बोली — "तुम फिर से उसी अरब के पास जाओ और मेरा सलाम कह कर उससे एक गोल तकिया मॉगना। उसे समुद्र में महल के पास फेंक देना। वह क्रिस्टल का पुल बन जायेगा।"

लड़के ने वैसा ही किया जैसा उस लड़की ने उससे करने के लिये कहा। कुछ ही पल में जब उसने अपने चारों तरफ देखा तो महल से लगा हुआ एक क्रिस्टल का पुल बन गया था। वह वहीं से बादशाह के पास उसे यह बताने के लिये चला गया कि उसके कहे अनुसार क्रिस्टल का पुल बनाया जा चुका है।

अब तीसरी शर्त पूरी करने की बारी थी। बादशाह ने कहा कि उसे एक ऐसी दावत का इन्तजाम करना चाहिये जिसमें उसके देश का हर आदमी खा ले और फिर भी कुछ बच रहे।

लड़का फिर दुखी हो कर घर पहुॅचा और रोने लगा। लड़की ने पूछा "क्यों रोते हो?" लड़के ने बादशाह की कही हुई बात दोहरा दी।

यह नयी शर्त सुन कर उसने कहा — "तुम चिन्ता न करो। तुम फिर से उसी अरब के पास जाओ और उसे मेरा सलाम दे कर उससे कौफी पीसने की चक्की मॉगना। वह तुम्हें वह चक्की दे देगा पर ध्यान रखना कि उसे रास्ते में ही मत चलाने लग जाना।"

लड़के ने बिना किसी कठिनाई के अरब से कौफी पीसने की चक्की ली और घर चल दिया। पर रास्ते में उससे उसके बिना जाने ही वह चक्की घूम गयी। जैसे ही वह ज़रा सी घूमी वैसे ही उसमें से खाने की सात आठ थालियॉ बाहर निकल कर गिर पड़ीं। उनको उठा कर वह फिर से घर की तरफ चल पड़ा।

जिस दिन यह दावत होनी थी बादशाह के बुलाने पर देश का हर आदमी लड़के के घर खाना खाने आया। हर मेहमान ने पेट भर कर पूरा पूरा खाना खाया फिर भी आखीर में बहुत सारा खाना बच रहा।

बादशाह को अभी भी तसल्ली नहीं थी। लड़की उसके हाथ से जा रही थी क्योंकि लड़के ने उसकी तीनों शर्तें पूरी कर दी थीं।

सो उसने अब एक और शर्त रख दी कि वह एक अंडे में से एक खच्चर पैदा करे। लड़के ने अपने इस नये काम के बारे में लड़की को बताया तो लड़की ने उससे अरब से तीन अंडे लाने के लिये कहा। उसने कहा कि वह वे अंडे रास्ते में बिना तोड़े घर ले कर आये।

अब उसने अरब से तीन अंडे तो ले लिये पर रास्ते में आते समय उससे एक अंडा नीचे गिर गया और टूट गया। उसमें से एक बहुत बड़ा गधा निकल पड़ा। वह उसे पकड़ने दौड़ा। उसके आगे पीछे भागने में वह गधा समुद्र में कूद पड़ा और गायब हो गया।

लड़का बचे हुए दो अंडों के साथ सुरक्षित घर लौट आया। पर लड़की ने पूछा — "तीसरा अंडा कहॉ है।"

तब उसने बताया कि तीसरा अंडा तो उससे गिर गया और उसमें से एक गधा निकल कर भाग गया। लड़की ने कहा — "खैर अब जो हो गया सो हो गया पर तुमको भविष्य में ज़्यादा सावधान रहना चाहिये।"

लड़का बचे हुए अंडों को ले कर बादशाह के पास पहुॅचा और उससे एक बैन्च पर खड़े होने की इजाज़त मॉगी। बादशाह ने उसे यह इजाज़त दे दी।

सो वह एक बैन्च पर खड़ा हो गया और उसने एक अंडा दूर फेंक दिया। उसमें से एक गधा निकला और बादशाह के ऊपर चढ़ गया। बादशाह ने वहॉ से भागना चाहा पर भाग नहीं सका। लड़के

ने बादशाह को खतरे से बचाया और वह गधा भी भाग कर समुद्र में कूद गया।

बादशाह यह देख कर बहुत निराश हो गया। वह अब उसके लिये कोई और कठिन काम नहीं ढूँढ सका। फिर भी उसने उसके लिये एक और काम ढूँढ ही लिया। उसने कहा कि उसे एक दिन का बच्चा चाहिये जो चल भी सके और बोल भी सके।

अभी भी लड़की बहुत निडर थी। उसने लड़के से फिर कहा कि वह फिर से उसी अरब के पास जाये और उसको सलाम दे कर उससे कहे कि मैम को उनका भतीजा देखना है।

ऐसा ही किया गया़ लड़का वहॉ गया और लड़की का सन्देश अरब को दिया तो अरब बोला — "वह तो अभी एक घंटे का ही है। अभी तो उसकी मॉ उसे छोड़ना नहीं चाहेगी। फिर भी आप कुछ पल इन्तजार करें मैं कोशिश कर के देखता हूँ।"

कह कर अरब चला गया और जल्दी ही एक नये जन्मे बच्चे को ले कर प्रगट हुआ। जैसे ही उसने मछियारे को देखा तो वह उसके पास भागा और बोला — "हम अपनी बुआ के पास जा रहे हैं हैं न?"

लड़का उसे अपने घर ले गया तो बच्चा चिल्लाया — "बुआ बुआ।" और जा कर उसके गले लग गया। इसके बाद लड़का उसे बादशाह के पास ले गया।

जब बच्चा बादशाह के पास लाया गया तो वह बादशाह के पास गया और उसके चेहरे पर एक चॉटा मारा और बोला — "चालीस दिन में सोने और हीरों का एक महल कैसे बनाया जा सकता है? उसी तरह चालीस दिन में क्रिस्टल का पुल कैसे खड़ा किया जा सकता है?

उसी तरह एक आदमी देश भर के लोगों को अकेला खाना कैसे खिला सकता है? क्या एक अंडे से एक गधा पैदा किया जा सकता है?"

हर वाक्य को कहने के बाद वह बादशाह के गाल पर एक चॉटा मारता यहॉ तक कि बादशाह को लड़के से चिल्ला कर कहना पड़ा — "तुम लड़की को अपने पास रख सकते हो बस तुम मुझे इस बच्चे से बचाओ।"

तब लड़का उस बच्चे को घर ले गया। फिर लड़के ने लड़की से शादी कर ली और 40 दिन और 40 रात तक आनन्द मनाया।

तीन सेब आसमान से गिरे। उनमें से एक सेब मेरा था एक सेब हुस्नी का था और तीसरा सेब कहानी सुनाने वाले का था। बताओ इनमें से कौन सा सेब मेरा था?

10 घोड़ा देव और जादूगरनी[20]

एक बार की बात है कि एक बादशाह के तीन बेटियॉ थीं। एक बार बादशाह को कहीं बाहर जाना पड़ा तो जाने से पहले उसने अपनी तीनों बेटियों को बुलाया और उनसे कहा कि वे उसके अपने घोड़े को ठीक से खिलायें पिलायें उसका ठीक से ध्यान रखें और अपना काम किसी दूसरे को न सौंपें। क्योंकि वह नहीं चाहता था कि कोई अजनबी उसके घोड़े के पास भी आये।

यह आदेश दे कर बादशाह चला गया। अब बादशाह की सबसे बड़ी बेटी उस घोड़े के लिये खाना ले कर अस्तबल गयी पर घोड़ा उाको अपने पास ही नहीं आने दे रहा था। सो उसके बाद फिर दूसरी बेटी उसे खाना खिलाने गयी पर वह भी उसे खाना नहीं खिला पायी।

अबकी बार सबसे छोटी बेटी उसे खाना देने गयी तो घोड़ा चुपचाप खड़ा रहा और उसे अपने पास आने दिया। उसने उसके हाथ से खाना भी खाया पानी भी पिया। इस प्रकार दोनों बड़ी बहिनें अपने इस गन्दे काम से मुक्त हो गयी थीं।

जब बादशाह वापस लौटे तो सबसे पहले उन्होंने यही पूछा कि उनकी अनुपस्थिति में उनके घोड़े की ठीक से देखभाल की गयी या नहीं। तो दोनों बड़ी बहिनों ने कहा — "पिता जी उसने हमें तो

[20] The Horse-dew and the Witch.

अपने पास तक नहीं आने दिया। पर हॉ हमारी छोटी बहिन उसको खाना खिलाने और पानी पिलाने में सफल हो गयी।"

यह सुन कर राजा बोला कि फिर तो उसे घोड़े की पत्नी बन जाना चाहिये। उसकी दोनों बड़ी बेटियों की शादी उसके वज़ीर और शेखुलइस्लाम[21] से कर दी गयी।

तीनों शादियों का उत्सव **40** दिनों तक चला। राजा की दोनों बड़ी बेटिया तो अपने अपने महलों को चली गयीं और राजा की सबसे छोटी बेटी अपने पति घोड़े के साथ अपनी ससुराल अस्तबल चली गयी।

केवल दिन में ही छोटी बहिन घोड़े को अपने पति के रूप में और अस्तबल को अपने रहने की जगह के रूप में पाती। रात को वही जगह एक गुलाब के फूलों का बागीचा बन जाती और घोड़ा उसके लिये एक सुन्दर नौजवान के रूप में बदल जाता। इस तरह वे लोग आपस में खुशी खुशी रहते रहे। उनके इस रहस्य का उनके अलावा और किसी को पता नहीं चला।

अब एक दिन ऐसा हुआ कि बादशाह ने अपने महल के ऑगन में एक मुकाबले का इन्तजाम किया। और उन सब सिपाहियों ने जिन्होंने इस मुकाबले में भाग लिया था सबसे बहादुरों में बादशाह की दोनों बड़ी बेटियों के पति आये।

[21] Shiek-ul-Islam

इस पर दोनों बड़ी बहिनों ने अपनी छोटी बहिनों से कहा — "देखा हमारे पति तो शेर जैसे हैं कितनी सुन्दरता से उन्होंने भाला फेंका था। तुम्हारा घोड़ा पति कहॉ है।"

यह सुन कर घोड़ा हिला और एक सुन्दर नौजवान में बदल गया। फिर वह एक घोड़े पर चढ़ा और अपनी पत्नी से यह कह कर कि वह उसकी पहचान न खोले मैदान में उतर गया।

उसने जितने भी मुकाबले में हिस्सा लेने वाले थे सबको हरा दिया अपने साडुओं को घोड़े से नीचे गिरा दिया और वहॉ से ऐसे गायब हो गया जैसे वह वहॉ था ही नहीं।

यह मुकाबला अगले दिन भी चला और उस दिन भी बड़ी बहिनों ने अपनी छोटी बहिन को बुरा कहा पर एक बार फिर से हीरो वहॉ प्रगट हुआ अपने सभी साथियों को हराया और गायब हो गया।

तीसरे घोड़े वाले सिपाही ने अपनी पत्नी से कहा — "अगर किसी भी समय में तुम मुझे खतरे में देखो और या तुम्हें कोई सहायता चाहिये तो लो तुम मेरे ये तीन बाल लो और इन्हें जला देना तो मैं जहॉ कहीं भी होऊॅगा में तुरन्त ही तुम्हारे पास आ जाऊॅगा।"

कह कर वह फिर से अपने साडुओं के साथ मुकाबले के मैदान में चला गया। सब लोग उसकी ताकत की प्रशंसा कर रहे थे। यहॉ तक कि उसकी सालियॉ भी उसकी प्रशंसा किये बिना न रह सकीं। पर अपने बुरे स्वभाव के अनुसार उन्होंने अपनी छोटी बहिन से कहा

— "देखो ये सब सिपाही किस तरह से इस मुकाबले को समझ रहे हैं। ये तुम्हारे घोड़े पति जैसे नहीं हैं।"

बेचारी छोटी बहिन इस बात को सह नहीं सकी कि वह इतना सुन्दर नौजवान उसी का तो पति था सो वह उसकी तरफ इशारा करने के लिये घूमी कि लो वह तो गायब ही हो गया। इससे उसे याद आया कि उसने इसे मना किया था कि वह उनका भेद कभी न खोले।

दुख से परेशान हो कर वह अस्तबल में उसके लौटने का इन्तजार करने लगी। पर व्यर्थ न तो घोड़ा ही आया और न उसका पति ही आया। न वह जगह उस रात गुलाब के बागीचे में ही बदली।

वह बोली — "मुझे धिक्कार है। मैंने अपने पति को धोखा दिया है। मैंने अपना वायदा तोड़ा है। मुझे इसी की सजा मिली है।" वह सारी रात सो नहीं सकी बल्कि सुबह तक रोती ही रही।

जब सुबह हुई तो वह उठ कर अपने पिता बादशाह के पास गयी और रोते हुए उसे सब बताया जो उसके साथ हुआ था। फिर उसने कसम खायी कि वह अपने पति की खोज में अवश्य जायेगी चाहे उसे जमीन के छोर तक ही क्यों न जाना पड़े।

उसके पिता ने उसे व्यर्थ ही में रोकने की कोशिश की। उसने उसे समझाया कि उसका पति एक देव था इसलिये उसका मिलना असम्भव था पर वह नहीं मानी।

बहुत दुखी हो कर वह अपनी खोज में निकल पड़ी। वह इतनी दूर तक चली गयी कि एक पहाड़ी की तलहटी तक पहुॅचते पहुॅचते थक गयी और वहॉ बैठ गयी। वहॉ बैठ कर उसे घोड़े के दिये हुए तीन बाल याद आये तो उसने उनमें से एक बाल जला दिया।

बस अगले ही पल वह उसे अपनी बॉहों में घेरे खड़ा था। दोनों के ही मुॅह से खुशी के मारे एक भी शब्द नहीं निकला।

नौजवान ने उससे हॅसते हुए कहा — "क्या मैंने तुमसे अपना रहस्य किसी को न बताने के लिये नहीं कहा था। अगर मेरी मॉ इस समय मुझे तुम्हारे साथ देख ले तो वह अवश्य ही मुझे तुमसे अलग कर देगी। हम इसी पहाड़ में रहते हैं। मेरी मॉ यहॉ कभी भी आती होगी और अगर वह हमको ऐसे यहॉ देख लेगी तो बहुत नाराज होगी।"

बेचारी लड़की तो यह सुन कर बहुत ही डर गयी और दुखी भी हो गयी कि इतनी देर में तो उसने अपने पति को पाया था और अभी वह उसे बिछड़ने भी वाली थी।

देव का बेटा यह देख कर बहुत दुखी हुआ। उसे उस पर दया आ गयी। उसने उसको एक हल्की सी फूॅक मारी और उसे एक सेब में बदल दिया। उस सेब को उसने एक आलमारी में रख दिया।

चीख मारते हुए जादूगरनी पहाड़ से नीचे की ओर उड़ी। वह कह रही थी कि उसे किसी आदमी की खुशबू आ रही थी और वह उसे खाना चाहती थी। लड़के ने उसे कई बार समझाया कि वहॉ

कुछ भी नहीं था पर वह नहीं मानी। उसने कहा कि उसे तो उसकी खुशबू आ रही थी।

नौजवान बोला — "अगर आप अंडे की कसम खायें कि आप उसे कोई नुकसान नहीं पहुॅचायेंगी तो मैं आपको वह दिखा सकता हूॅ जिसे मैंने छिपाया है।"

जादूगरनी ने अंडे पर कसम खायी कि वह उसे कोई नुकसान नहीं पहुॅचायेगी तब नौजवान ने अंडे को हल्का सा छुआ और उसमें से एक लड़की निकल आयी। वह बोला — "देखिये यह मेरी पत्नी है।"

बुढ़िया ने कहा तो कुछ नहीं पर उसने अपनी बहू के लिये कुछ छोटे मोटे काम सौंप दिये और अपने काम पर चली गयी। कुछ दिन तो पति पत्नी के दिन सुख से बीते पर वह बुढ़िया उस मौके का इन्तजार करने लगी जब उसका बेटा किसी काम से बाहर जायेगा ताकि तब वह बहू से अपना बदला ले सके।

अन्त में उसको ऐसा एक मौका मिल ही गया। उसने बहू से कहा — "झाड़ू लगाओ और झाड़ू मत लगाओ।" और वहॉ से चली गयी।

वह लड़की बेचारी परेशानी में पड़ गयी कि "क्या झाड़ू लगाओ।" और "क्या झाड़ू मत लगाओ।" फिर उसे घोड़े के दिये हुए बालों की याद आयी तो उसने बचे हुए बालों में से एक बाल जला दिया।

उसका पति तुरन्त ही उसके पास प्रगट हो गया तो लड़की ने उसे अपनी परेशानी बतायी। तब उसके पति ने कहा कि उसे कमरे में झाड़ू लगानी चाहिये और ऑगन में झाड़ू नहीं लगानी चाहिये। लड़की ने वैसा ही किया।

शाम को जब जादूगरनी घर वापस आयी तो उससे पूछा कि उसने अपना काम खत्म कर लिया या नहीं। बहू बोली — "मैंने झाड़ू लगा दी है और झाड़ू नहीं लगायी है।"

बुढ़िया चिल्ला कर बोली — "ओ धोखेबाज। तूने खुद तो नहीं सोचा होगा यह। अवश्य ही मेरे बेटे ने तुझे बताया होगा।"

अगले दिन वह बुढ़िया फिर उसके पास आयी और उसे तीन कटोरे दे कर बोली कि वह उन तीनों कटोरों को अपने ऑसुओं से भर दे। लड़की बेचारी रोती रही रोती रही रोती रही पर वह तो एक कटोरा भी नहीं भर सकी।

इस परेशानी में उसने घोड़े का दिया हुआ तीसरा बाल भी जला दिया। उसका पति फिर उसके सामने प्रगट हुआ और उससे कहा — "तुम्हें रोने की बिल्कुल जरूरत नहीं है। तुम इन कटोरों को पानी से भरो और उनमें थोड़ा थोड़ा नमक मिला दो।"

लड़की ने ऐसा ही किया। शाम को जब बुढ़िया आयी तो उसने उससे पूछा कि क्या उसने ऑसुओं से वे तीनों कटोरे भर लिये। लड़की ने तुरन्त ही उन तीनों कटोरों को अपनी सास को दिखा दिया।

बुढ़िया फिर नाराज हो कर बोली — "ओ चालाक लड़की। यह तेरा अपना काम नहीं है पर अबकी बार तू और मेरा बेटा मुझे धोखा नहीं दे पायेंगे।"

अगले दिन उसने अपनी बहू से एक चीला बनाने के लिये कहा लड़की ने सारी जगह ढूँढा पर उसे चीला बनाने का कोई भी सामान कहीं भी नहीं मिला। इस बार वह अपने पति से किसी प्रकार की सहायता की आशा नहीं रख सकती थी क्योंकि उसका पति दूर था और उसने उसके तीनों जादू के बाल पहले से ही जला लिये थे।

पर नौजवान को मालूम था कि उसकी मॉ उसकी पत्नी को अवश्य ही तंग करेगी सो वह वहॉ से जल्दी ही वापस आ गया। जब उसने अपनी पत्नी को इस मुश्किल में पड़े देखा तो उसे सलाह दी कि वे वहॉ से भाग चलते हैं।

उसने कहा — "मेरी मॉ तुम्हें चैन नहीं लेने देगी जब तक कि वह तुमको बिल्कुल बरबाद नहीं कर लेगी इसलिये उसके आने से पहले हम यहॉ से भाग चलते हैं।" सो वे लोग वहॉ से दुनियॉ में भाग गये।

शाम को जादूगरनी घर वापस आयी तो देखा कि उसका बेटा और बहू दोनों ही घर पर नहीं हैं। "ओह ये दोनों नीच मुझे छोड़ कर भाग गये हैं।" उसने अपनी जादूगरनी बहिन को बुलाया और उससे कहा कि वह उन दोनों भगोड़ों को ढूँढ कर उसके पास ले कर आये।

वह दूसरी जादूगरनी तुरन्त ही अपने कटोरे में बैठी और सॉपों के चाबुक से उसे हॉकती हुई बिजली की सी तेज़ी से चल दी। पर देव के बेटे ने दूर से ही अपनी मौसी को आते देख लिया था सो उसने लड़की के ऊपर एक हल्की सी फूॅक मारी और उसे एक तैरने वाले नहानघर में बदल दिया और खुद को उसके पहरेदार के रूप में बदल कर उसके दरवाजे पर जा कर खड़ा हो गया।

जादूगरनी वहॉ आयी और पहरेदार से पूछा कि क्या उसने किसी लड़की और एक नौजवान को देखा है। उस नौजवान पहरेदार ने जवाब दिया कि वह तो वहॉ केवल नहाने के लिये पानी गर्म कर रहा था। अभी वहॉ कोई नहीं है। अगर तुम्हें विश्वास नहीं है तो अन्दर जा कर देख लो।

जादूगरनी को लगा कि वह इस आदमी से कोई काम नहीं ले सकती सो वह अपने कटोरे में फिर से बैठी अपनी बहिन के पास पहुॅची और उसे बताया कि वह उन्हें नहीं ढूॅढ सकी।

सास जादूगरनी ने अपनी बहिन से पूछा कि क्या उसे रास्ते में कोई मिला था तो उसने कहा कि हॉ मिला था और उसने उसे एक तैरने वाले नहानघर के नौजवान पहरेदार के मिलने की बात बता दी।

उसने उसे यह भी बताया कि वह पहरेदार या तो बेवकूफ था या फिर बहरा था क्योंकि वह उससे अपनी किसी भी बात का जवाब नहीं निकलवा सकी।

सास जादूगरनी ने उसे डाँटा — "तू उससे ज़्यादा बेवकूफ है जो तू उन्हें नहीं पहचान सकी। वह नहानघर और पहरेदार मेरा बेटा और बहू थे।" फिर उसने अपनी दूसरी बहिन को बुलाया और उसे उन भगोड़ों को पकड़ने के लिये भेजा।

देव के बेटे ने फिर से अपनी दूसरी मौसी को अपने पीछे आते देख लिया तो उसने एक बार फिर अपनी पत्नी को हल्का सा छुआ और उसे एक स्रोत में बदल दिया और खुद वहाँ खड़े हो कर उसमें से पानी भरने लगा।

जादूगरनी वहाँ आयी और उस पानी भरने वाले से पूछा कि उसने किसी लड़की और नौजवान को देखा है। नौजवान बड़े सीधेपन से बोला — "इस स्रोत का पानी तो बहुत ही मीठा है।"

स्त्री ने सोचा कि यह तो उसका सवाल समझने के लिये भी बहुत बेवकूफ है सो वह भी अपनी बहिन के पास यह बताने के लिये वापस दौड़ गयी कि उसे भी वे दोनों कहीं नहीं मिले।

सास जादूगरनी ने उससे पूछा कि क्या उसने किसी को रास्ते में देखा था तो उसने बताया कि एक नौजवान एक स्रोत के पास खड़ा हुआ उसमें से पानी भर रहा था। इस पर सास चिल्ला कर बोली — "अरे बेवकूफ। वह लड़का मेरा बेटा था और वह स्रोत मेरी बहू थी। मुझे लगता है कि अब मुझे ही उसे ढूँढने जाना पड़ेगा।"

सो वह अपने कटोरे में बैठी और साँपों का कोड़ा बना कर वहाँ से अपने बेटे को ढूँढने चल दी।

देव के बेटे ने देखा कि इस बार तो उसकी मॉ खुद ही आ रही है तो उसने तुरन्त ही लड़की को हल्का सा छू कर उसे एक पेड़ बना दिया और वह खुद एक सॉप बन कर उस पेड़ के चारों तरफ लिपट गया।

जादूगरनी उन्हें पहचान गयी अगर वह पेड़ को बिना अपने बेटे को कोई नुकसान पहुॅचाये काट सकती तो वह उस पेड़ को काट देती पर वह ऐसा नहीं कर सकती थी।

सो उसने सॉप से कहा — "बेटे कम से कम तुम मुझे उस लड़की की सबसे छोटी उंगली दिखा दो तो मैं तुम्हें शान्ति से रहने के लिये छोड़ जाऊॅगी।"

बेटे ने भी देखा कि अगर शान्ति से रहना है तो जो मॉ ने कहा है वही करना चाहिये सो उसने लड़की की एक सबसे छोटी उॅगली दिखा दी। मॉ ने भी उसे तुरन्त ही काट ली और वहॉ से गायब हो गयी।

मॉ के जाने के बाद देव के बेटे ने पेड़ को हल्के से छुआ और उसे लड़की में बदल दिया। फिर वे दोनों लड़की के पिता बादशाह के घर चले गये।

अब देव के बेटे का तलिस्मान यानी जादू टूट गया था और अब वह इस दुनियॉ का आदमी बन गया था। अब वह देव का बेटा भी नहीं था न ही अब जादूगरनी की किसी ताकत के अन्दर था।

बादशाह उन दोनों को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुआ। उसने उन दोनों की शादी फिर से बहुत धूमधाम से की। जब बादशाह मर गया तब उसका यह दामाद ही राजगद्दी पर बैठा।

11 सीधा सादा[22]

यह उस समय की बात है जब अल्लाह के पास बहुत सारे नौकर हुआ करते थे और मानव जाति बहुत दुख में थी। उस समय एक बहुत ही गरीब स्त्री रहती थी। उसके तीन बेटे थे और एक बेटी थी। उसका सबसे छोटा बेटा बहुत ही सीधा था और सारा दिन अंगीठी के पास लेटा रहता था।

एक दिन उसके दोनों बड़े भाई खेतों में काम करने गये तो अपनी मॉ से कह गये कि वह उनका खाना बना कर उनकी छोटी बहिन के हाथों खेत पर भिजवा दें।

अब ऐसा हुआ कि एक तीन सिर वाले देव ने पड़ोस में ही अपना घर बनवा लिया था पर भाइयों ने अपनी बहिन को पहले से ही एक दूसरा रास्ता बता दिया था जिससे उसे देव का सामना न करना पड़े।

जब खाना तैयार हो गया और उनकी बहिन वह खाना ले कर अपने भाइयों के पास चली तो वह रास्ता भूल गयी। वह देव के घर की तरफ वाले रास्ते पर चली गयी। वह अभी कुछ ही दूर चली थी कि उस देव की पत्नी उसके सामने आ खड़ी हुई और उससे पूछा कि उसका उधर आना कैसे हुआ।

[22] The Simpleton. Tale No 11.

लड़की बेचारी उसे देख कर कॉप गयी पर वह भी उस कॉपती हुई लड़की से तब तक बात करती रही जब तक वह उसे अपने घर तक नहीं ले गयी कि वह उसे अपने पति से छिपा कर रखेगी। पर वह तीन सिर वाला देव तो उनका वहीं इन्तजार कर रहा था।

जैसे ही देव की पत्नी घर में घुसी वह बोली "मैं अभी खाना तैयार करती हूँ। मैं आटा मलती हूँ और तुम मेरी बेटी आग जला लो।" जैसे ही लड़की ने आग जलायी कि देव अन्दर आ गया और वह जैसी बैठी थी वैसी की वैसी ही उसे निगल गया।

उधर दोनों भाई अपनी बहिन के खाना लाने का इन्तजार करते रहे। न तो उनका खाना आया और न उनकी बहिन ही आयी। शाम हो गयी तो वे घर लौटे तो उन्हें पता चला कि उनकी बहिन तो दोपहर से पहले ही उनका खाना ले कर चली गयी थी।

उन्होंने यह भॉप लिया कि उसके साथ क्या हुआ होगा। वह अवश्य ही देव के घर के रास्ते पर चली गयी होगी। बड़े भाई ने कुछ सोचा और फिर देव के घर गया और उससे अपनी बहिन मॉगी।

चलते चलते अपनी चिलम पीते हुए फूलों की खुशबू सूँघते हुए वह एक ओवन के पास आया। ओवन के पास ही एक दाढ़ी वाला आदमी खड़ा था उसने उसे पूछा कि वह कहॉ जा रहा था। भाई ने उसे अपने दुर्भाग्य के बारे में बता दिया कि लगता है उसने ही

उसकी बहिन को खा लिया है और अब वह उस तीन सिर वाले देव को ढूँढ रहा है ताकि वह उसे मार सके।

बूढ़ा बोला — "जब तक तुम इस ओवन की रोटी नहीं खाओगे तुम उसे नहीं मार सकते।"

नौजवान ने सोचा कि इसमें क्या बड़ी बात है। सो उसने ओवन में से एक रोटी निकाली और उसे काटा। फिर वह वहॉ से भाग लिया जब तक कि वह बूढ़ा, ओवन और रोटी पीछे नहीं छूट गये।

कुछ दूर भाग कर वह सॉस लेने के लिये रुका तो उसने देखा कि वहॉ एक आदमी शराब का बर्तन लिये जा रहा है। भाई ने इस आदमी को अपना काम बताया तो वह भी बोला "तुम देव का कुछ नहीं बिगाड़ सकते जब तक तुम थोड़ी सी शराब नहीं पी लेते।"

भाई ने थोड़ी सी शराब पीने की कोशिश की पर अपना पेट पकड़ कर वह चिल्लाते हुए वहॉ से भागा "ओह मेरा पेट। ओह मेरा पेट।"

और वहीं जा कर रुका जहॉ दो पुल थे – एक लकड़ी का और एक लोहे का। उनके दूसरी और दो सेब के पेड़ लगे हुए थे – एक खट्टे सेब का दूसरा मीठे सेब का।

उन पुलों के पार खड़ा हुआ देव यह सोच रहा था कि भाई कौन सा पुल लेता है लकड़ी वाला या लोहे वाला और फिर कौन सा सेब खायेगा खट्टा वाला या मीठा वाला।

इस डर से कि लकड़ी वाला पुल कहीं टूट न जाये भाई ने लोहे का पुल लिया और उस पार जा कर देखा तो खट्टे सेब पके नहीं थे उसने मीठे सेब तोड़ लिये।

देव ने अब तक बहुत कुछ सीख लिया था सो उसने अपनी पत्नी को उस नौजवान से मिलने के लिये भेजा। वह गयी और उसको घर ले आयी। बहुत जल्दी ही देव ने उसको भी निगल लिया और वह भी अपनी बहिन के पास पहुॅच गया।

जब बड़ा भाई वापस नहीं आया तो उसका छोटा भाई अपनी बहिन को ढूॅढने चला। वह भी रोटी नहीं काट पाया उसके शराब से पेट में दर्द हो गया उसने भी लोहे का पुल लिया उसने भी मीठे सेब खाये और वह भी देव के पेट में पहुॅच गया।

अब हम अपना ध्यान सबसे छोटे वाले बेटे पर लगाते हैं। जब दोनों भाई बहिन को ढूॅढ कर वापस नहीं लौटे तो सीधा वाला भाई उठा। मॉ ने जब उसको उठते हुए देखा तो उससे विनती कि वह उसे इस बुढ़ापे में छोड़ कर न जाये। दो तो पहले ही चले गये कम से कम वह तो घर में रहे।

पर सीधा नहीं माना बोला — "जब तक मैं अपने दोनों भाई और बहिन को वापस नहीं ले आता और देव को नहीं मार देता मैं चैन से नहीं बैठ सकता।"

वह अपने कोने में से उठा अपने शरीर पर लगी राख झाड़ी। उसी पल इतनी ज़ोर का तूफान आया कि सारे किसानों ने अपने

अपने हल अपने खेतों में छोड़े और घर लौट आये। सीधे ने वे सब हल बटोरे और उनको एक लोहार के पास ले गया और उनसे उससे एक ऐसा भाला बनाने के लिये कहा जिसे अगर वह हवा में उछाले तो वह उसकी छोटी उॅगली पर बिना टूटे ही आ कर गिरे।

लोहार ने जब वैसा भाला बना लिया तो सीधे ने उसे हवा में उछाला और जब उसे अपनी छोटी उॅगली पर सॅभाला तो वह भाला तो टूट गया।

सीधे ने राख झाड़ने के लिये फिर से अपने शरीर को हिलाया तो फिर से एक तूफान आया जिससे खेत में काम करने वाले सारे मजदूर अपने अपने घर भाग गये। सीधे ने फिर से हल समेटे और उन्हें लोहार के पास ले गया। एक दूसरा भाला बना पर यह भी टूट गया।

सीधे ने फिर एक बार तूफान उठाया और उसके बाद उसने फिर से बचे हुए हल इकट्ठे किये और उनका भाला बनवाया। इस बार जब वह उसकी उॅगली पर गिरा तो वह नहीं टूटा। सीधे ने कहा "यह काम करेगा।" और उसे ले कर अपने रास्ते चला गया।

जल्दी ही वह ओवन के पास पहुॅच गया तो बेकर ने यह जान कर कि वह देव के पास उसे मारने जा रहा है उससे कहा कि बिना उसके ओवन की रोटी खाये और बिना वह शराब पिये जो अभी उसे आगे मिलने वाली है वह अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सकता।

सीधे ने उसकी यह चुनौती स्वीकार की और उसके ओवन की सारी रोटी खा ली। आगे चल कर शराब वाले की सारी शराब भी पी ली। आगे चला तो अब वह दो पुलों के पास आ गया – एक लकड़ी का पुल दूसरा लोहे का पुल और उनके उस पार खट्टे मीठे सेबों के दो पेड़।

देव बड़ी उत्सुकता से उसे देख रहा था। उसके काम देख कर उसका दिल डूबने लगा।

सीधे ने सोचा कि "लोहे के पुल पर से तो बच्चा भी जा सकता है सो मैं लकड़ी का पुल चुनता हूँ।" लकड़ी का पुल पार कर के जब वह सेब के पेड़ों के पास आया तो उसने सोचा कि मीठे सेबों को खाने में क्या बड़ी बात है सो उसने खट्टे सेब तोड़ लिये।

डरे हुए देव ने सोचा कि इस नौजवान से तो अलग ही तरीके से बर्तना पड़ेगा। सो उसने अपनी पत्नी से कहा — "मेरा भाला सँभाल कर रखो इस आदमी से हमें लड़ना ही पड़ेगा।"

सीधे ने देव को दूर से ही देख लिया था। वह सीधा उसी के पास चला गया और बड़ी तमीज़ से उसे सलाम किया। देव बोला — "अगर तूने मुझे सलाम नहीं किया होता तो मैंने तुझे निगल लिया होता।"

सीधा गुस्से से बोला — "अगर तूने मेरे सलाम का जवाब नहीं दिया होता तो मैंने तुझे अपने भाले से मार दिया होता।"

देव बोला — "अगर तू इतना ही ताकतवर है तो अपना भाला उठा।" और देव ने अपने हाथ में लिया भाला सीधे के ऊपर अपने पूरी ताकत लगा कर फेंका तो सीधे ने उसे अपनी छोटी उॅगली पर थाम लिया जहॉ पहुॅच कर उसका भाला टुकड़े टुकड़े हो गया।

सीधा बोला "अब मेरी बारी है।" कह कर उसने अपना भाला इतनी ज़ोर से फेंका कि जैसे ही वह देव को लगा तो उसकी नाक के रास्ते उसके प्राण पखेरू ही उड़ गये।

देव ने अपनी आखिरी सॉस लेते हुए कहा — "अगर तू इतना ही ताकतवर है तो अपना भाला एक बार और फेंक।"

पर सीधे ने कहा "नहीं कभी नहीं।" और देव ने अपनी आखिरी सॉस ली।

सीधे ने देव की पत्नी को ढूॅढा। जब उन्होंने देव का पेट खोला तो तीनों को वहॉ ज़िन्दा पाया। सीधे के दोनों भाई और बहिन देव के पेट से निकल कर सीधे के साथ अपने घर की तरफ चल दिये।

जब ये तीनों देव के पेट में थे तबसे ये बहुत प्यासे थे। एक कुॅए के पास आ कर उन्होंने अपने छोटे भाई से सहायता मॉगी कि वह कुॅए में से उनकी पानी निकालने में उनकी सहायता करे। सबने अपनी अपनी कमर की पेटियॉ निकालीं और उनको जोड़ कर उसकी सहायता से अपने बड़े भाई को कुॅए में उतारा।

अभी वह केवल आधे रास्ते ही गया था कि वह डर के मारे चिल्लाने लगा — "मैं जल रहा हूॅ मुझे बाहर निकालो।"

सो उसे तुरन्त ही बाहर निकाल लिया गया फिर दूसरे भाई को उतारा गया तो उसके साथ भी वही हुआ। सीधा बोला "अब मेरी बारी है पर ध्यान रहे मैं तुमसे कितनी भी विनती करूँ कि तुम मुझे ऊपर खींच लो पर किसी भी हालत में तुम लोग मुझे ऊपर मत खींचना।"

उन्जेंने उसे नीचे उतार दिया। बाद में उनको लगा कि उन्होंने उसका डर से चिल्लाना सुना पर उन्होंने उस पर ध्यान नहीं दिया और उसे कुँए की तली तक नीचे उतार दिया। वहॉ सीधे को एक कमरा मिला जिसमें घुसने पर उसे वहॉ पूर्णमासी के चॉद जैसी सुन्दर तीन लड़कियॉ दिखायी दीं।

वे नौजवान को वहॉ देख कर डर गयीं और उससे देव की गुफा से जाने के लिये कहने लगीं पर उसने उनकी एक नहीं सुनी। संक्षेप में उसने देव को मार डाला और उन तीनों लड़कियों को वहॉ से छुड़ाया जिनको जादूगर ने उनके पिता सुलतान से सात साल पहले छीन कर यहॉ बन्द कर दिया था।

सीधे ने दो बड़ी लड़कियों से अपने दोनो भाइयों की और तीसरी से खुद शादी करने का इरादा किया। फिर उसने अपना पानी बर्तन भरा और उन लड़कियों को वहॉ लाया जहॉ रस्सी अभी भी लटकी हुई थी।

सबसे बड़ी लड़की को सबसे पहले खींचा गया तो सीधे के कहने पर सबसे बड़े भाई ने सॅभाल लिया। उसके बाद दूसरी लड़की

चढ़ी जिसे दूसरे भाई ने सॅभाल लिया। अन्त मैं तीसरी लड़की को चढ़ाया गया तो उसने सीधे से कहा कि उससे पहले वह चढ़े फिर वह उसे बाद में चढ़ा ले।"

उसने कहा भी कि उसके भाई गुस्सा होंगे कि उनके छोटे भाई ने सबसे सुन्दर लड़की अपने लिये रख ली है सो इस जलन की वजह से वह फिर तुम्हें बाहर नहीं खींचेंगे।

सीधा बोला — "तुम चिन्ता न करो अगर ऐसा होगा तो उसे मालूम है कि कुॅए से बाहर कैसे आना है।"

यह सुन कर वह उसको अपनी बात नहीं मनवा सकी फिर भी उसने उसे एक डिब्बा दिया और कहा — "जब भी तुम्हें लगे कि तुम खतरे में हो तो इस डिब्बे को खोलना। इसके अन्दर एक पत्थर है जब तुम इस पत्थर को एक बार मारोगे तो उसमें से एक अरब निकलेगा जो तुम्हारे हर हुक्म का पालन करेगा।

अगर तुम्हारे भाई तुमको इस कुॅए में छोड़ जाते हैं तो तुम देव के महल चले जाना और वहॉ के तालाब के किनारे खड़े हो जाना। वहॉ दो भेड़ें रोज आती हैं – एक काली और एक सफेद।

अगर तुम सफेद वाली भेड़ की खाल पकड़ लो तो तुम धरती के ऊपर आ जाओगे पर अगर तुम काली भेड़ की खाल पकड़ लोगे तो तुम धरती के नीचे वाली दुनियॉ में चले जाओगे।"

इसके बाद वह ऊपर खींच ली गयी। जैसे ही भाइयों ने उसे देखा तो दोनों को उससे प्यार हो गया। और फिर जैसा उस लड़की

ने कहा था वैसा ही हुआ। उन्होंने सीधे को कुॅए में ही छोड़ा और वे तीनों लड़कियों को ले कर घर चले गये।

अब सीधा क्या करे। सो जैसा उस लड़की ने उससे कहा था वह देव के महल गया और तालाब के पास जा कर खड़ा हो गया। अब वह वहॉ भेड़ों के आने का इन्तजार कर रहा था। तभी थोड़ी देर में वहॉ दो भेड़ें प्रगट हुईं – एक काली और एक सफेद।

सीधे ने सफेद भेड़ की बजाय काली भेड़ की खाल पकड़ ली। एक पल में उसने अपने आपको पाताल लोक में पाया। उसने सोचा कि "चलो यह क्षेत्र भी अब मैं ज़रा घूम कर आता हूॅ।" और वह वहॉ घूमने चल दिया।

वह दिन रात चलता रहा। पहाड़ों के ऊपर और घाटियों में नीचे। जब वह आगे जाने के लिये बहुत थक गया तो वह एक लम्बे से पेड़ के नीचे खड़ा हो गया।

तभी उसने देखा कि एक लम्बा सॉप पेड़ के ऊपर चढ़ रहा है। उसने घोंसले में रह रहे बच्चों को खा लिया होता अगर सीधे ने उन्हें न बचा लिया होता। अपने भाले को अपने हाथ में कस कर पकड़े हुए उसने उससे सॉप के दो टुकड़े कर दिये। फिर वह पेड़ के नीच आ गया और थक कर लेट गया और सो गया।

इस बीच घोंसले में रह रहे छोटे बच्चों की मॉ चिड़िया आ गयी जो पन्ने की अंका[23] थी और परियों की रानी थी। उसने सीधे को

[23] Emerald Anka

पेड़ के नीचे सोते देखा तो उसने सोचा कि यह उसका वही दुश्मन है जो हर साल उसके बच्चों को मारता रहा है। उसने उसको मार दिया होता अगर उसके बच्चे चिल्ला कर उसे ऐसा करने से न रोक देते।

उन्होंने अपनी मॉ से कहा कि उसने तो उनके दुश्मन सॉप को मार कर उनकी जान बचायी है। तब अंका ने नीचे देखा तो उसे एक सॉप के दो टुकड़े पड़े हैं और सीधे के चहरे पर धूप पड़ रही है। उसने अपने पंखों से उस धूप को रोक दिया।

जब उसकी ऑख खुली तो उसने देखा कि उसके ऊपर तो किसी चिड़िया के पंखों का एक तम्बू सा लगा हुआ है। अंका ने उससे कहा कि वह इस अच्छे काम के लिये उसको कुछ इनाम देना चाहती है और उससे पूछा कि उसे क्या चाहिये।

उसने बस इतना कहा कि वह उसे धरती पर भेज दे। पन्ने की चिड़िया ने उससे कहा कि वह उसे धरती पर ले जा सकती है अगर उसके पास **40** किलो भेड़ का मॉस और **40** बोतल पानी हो।

"तुम उनको मेरी पीठ पर रख दो और तैयार हो जाओ। जब मैं तुमसे "गिक" कहूँ तो तुम मुझे मॉस खिला देना और जब मैं "गैक" कहूँ तो तुम मुझे पानी पिला देना।"

तब सीधे को राजकुमारी का दिया हुआ का डिब्बा याद आया। उसने उसे खोला और उसमें रखे पत्थर को मारा तो तुरन्त ही उसमें से एक बहुत मोटे होठों वाला अरब निकल आया और बोला — "क्या हुक्म है मेरे मालिक?"

सीधा बोला — "मुझे **40** किलो भेड़ का मॉस चाहिये और **40** बोतल पानी चाहिये।"

कुछ मिनटों में ही **40** किलो भेड़ का मॉस और **40** बोतल पानी चिड़िया की पीठ पर था। सीधा भी उसकी पीठ पर चढ़ गया और चिड़िया चल दी। अब जब चिड़िया उससे "गिक" कहती तो वह उसे मॉस खिला देता और जब वह "गैक" कहती तो वह उसे पानी पिला देता।

चिड़िया दो उड़ान में ही धरती के ऊपर पहुॅच गयी। वहॉ पहुॅच कर सीधा नीचे उतर गया। चिड़िया ने उससे इन्तजार करने का वायदा किया जब तक वह वापस नहीं आ जाता।

ऊपर पहुॅच कर सीधे ने फिर से राजकुमारी का दिया हुआ डिब्बा निकाला और फिर से उसमें रखा हुआ पत्थर मारा तो फिर से वह अरब उसमें से बाहर आ गया और बोला — "हुक्म मेरे सुलतान।"

उसने उससे तीनों राजकुमारियों का पता लगाने के लिये कहा तो वह अरब उन तीनों राजकुमारियों को ही वहॉ ले आया। अब वे सब उस चिड़िया की पीठ पर बैठ गये और चिड़िया फिर से उड़ चली – इस बार राजकुमारियों के नगर।

रास्ते में चिड़िया चिल्लायी "गिक" तो उसे मॉस दे दिया गया और जब वह कहती "गैक" तो उसे पानी दे दिया जाता। पर अब क्योंकि चार आदमियों का खाना भी चाहिये था पर वह काफी नहीं

था और अब कहीं से उसे मॅगवाया भी नहीं जा सकता था। सो अबकी बार जब चिड़िया "गिक" बोली तो सीधे ने तलवार से अपनी टॉग में से थोड़ा सा मॉस काट कर उसे दे दिया।

अंका को पता चल गया कि वह आदमी का मॉस था सो उसने उसे नहीं खाया वह उसे अपनी चोंच में ही दबाये रही। जब वे तीनों बहिनों के देश पहुॅच गये तो उसने सीधे से कहा कि वह अब इससे आगे नहीं जा सकती थी।

उधर सीधे की टॉग में भी बहुत दर्द था। वह भी एक कदम और आगे नहीं चल सकता था। उसने चिड़िया से कहा — "ठीक है तुम जाओ मैं यहॉ थोड़ी देर आराम करूॅगा।"

अंका बोली — "ओ बेवकूफ।" और यह कह कर उसने अपनी चोंच में उसका मॉस निकाल कर उसके घाव पर लगा दिया। उसकी टॉग तुरन्त ही ठीक हो गयी।

सुलतान की बेटियों का इतने साल बाद घर वापस आ जाने से सब बहुत आश्चर्य में पड़ गये। बूढ़े बादशाह को तो विश्वास ही नहीं हुआ। उसने उन्हें गले लगाया चूमा उनकी कहानी सुनी और फिर सीधे को अपनी सबसे छोटी बेटी और राज्य दे दिया।

सीधे ने अपनी शादी में अपनी मॉ और बहिन को भी बुलाया। उसकी बहिन को राजा के वज़ीर के बेटे को दे दिया गया। यह सब खुशियॉ **40** दिन और **40** रात तक चलीं पर खुशी उनकी ज़िन्दगी भर रही।

12 जादू की पगड़ी जादू का कोड़ा और जादू का कालीन[24]

एक बार की बात है कि दो भाई थे जिनके माता पिता की मृत्यु हो गयी थी। बड़े भाई को जो उसके पिता की जायदाद में से हिस्सा मिला उससे उसने एक दूकान खोल ली थी पर छोटे भाई ने अपने हिस्से को बेवकूफी की खुशियों में उड़ा दिया था।

एक दिन ऐसा भी आया जब छोटे भाई के पास एक पैसा भी नहीं रहा सो वह अपने बड़े भाई के पास गया और उससे कुछ पैसे मॉगे। बड़े भाई ने उसे कुछ पैसे दे दिये। कुछ दिन बाद वे पैसे खत्म हो गये तो वह फिर से अपने बड़े भाई के पास गया और फिर से उससे कुछ पैसे मॉगे। बड़े भाई ने फिर उसे कुछ पैसे दे दिये।

यह सब कुछ समय तक चलता रहा जब तक बड़े भाई को यह समझ नहीं आ गया कि अगर उसे अपना कुछ बचाना है तो उसे अपनी दूकान बेच देनी चाहिये और मिश्र चले जाना चाहिये।

छोटे भाई को इस बात का पता चल गया कि उसका बड़ा भाई यह जगह छोड़ कर जाने वाला है। इससे पहले कि जहाज़ किनारा छोड़े छोटा भाई भी बिना उसे बताये उसी जहाज़ पर चढ़ गया और छिप गया।

[24] The Magic Turban the Magic Whip and the Magic Carpet. Tale No 12

उधर बड़े भाई को भी पता था कि अगर उसके भाई को उसके इरादे पता चल गये तो वह छिप कर उसके पीछे जरूर आयेगा इसलिये वह डैक पर ही नहीं गया। जैसे ही जहाज़ चला तो दोनों ही जहाज़ के डैक पर निकले। बड़े भाई ने देखा कि उसकी तरकीब तो बेकार हो गयी और उसका छोटा भाई अभी भी बोझे की तरह उसकी गर्दन से लटका हुआ है।

बड़ा भाई बहुत गुस्सा हुआ पर गुस्से से तो काम नहीं बनता था। जहाज़ दोनों को ही मिश्र ले गया। जब वे दोनों जहाज़ से उतर गये तो बड़े भाई ने छोटे भाई से कहा — "तुम यहीं रुको मैं तब तक खच्चरों का इन्तजाम कर के आता हूँ जो हमको यहॉ से आगे ले कर जायेंगे।"

सो छोटा भाई अपने बड़े भाई के लौटने तक इन्तजार करने के लिये वहीं समुद्र के किनारे बैठ गया पर जब काफी देर इन्तजार करने के बाद भी बड़ा भाई लौट कर नहीं आया तो छोटे भाई ने सोचा कि वह उसे ढूँढ कर लाता है और वह भी वहॉ से उठ कर चल दिया।

वह लम्बे लम्बे डग भरता हुआ छह महीने तक घूमता रहा पर एक बार उसने पीछे मुड़ कर देखा तो देखा कि उसने तो अभी तक केवल बहुत थोड़ी सी ही दूरी पार की है। तब उसने और लम्बे लम्बे डग भरे और फिर छह महीनों तक चला पर अबकी बार वह रास्ते में से वॉयलैट के फूल इकट्ठा करते हुए चला।

अबकी बार वह एक पहाड़ की तलहटी में आ गया। वहॉ उसे तीन लोग आपस में झगड़ते हुए मिल गये। वह उनके पास गया और उनसे पूछा कि वे आपस में क्यों झगड़ रहे थे।

उन्होंने कहा — "हम तीनों सगे भाई हैं। हमारे पिता कुछ दिन पहले ही मर गये हैं। वह हमारे लिये एक पगड़ी एक कोड़ा और एक प्रार्थना करने वाला कालीन छोड़ गये हैं। जो भी अपने सिर पर यह पगड़ी रखेगा वह अदृश्य हो जायेगा और जो भी इस कालीन पर बैठ कर इसे कोड़ा मारेगा वह एक चिड़िया की तरह उड़ जायेगा।

अब समस्या यह है कि कौन पगड़ी ले और कौन कालीन ले और कौन कोड़ा ले। यही कारण है कि हम लोग आपस में लड़ रहे हैं। और ये तीनों चीज़ें हममें से एक को चाहिये।"

एक बोला — "मैं सबसे बड़ा हूॅ इसलिये ये तीनों चीज़ें मेरी हैं।"

दूसरा बोला — "नहीं ये मेरी हैं।"

तीसरा बोला — "नहीं क्योंकि मैं सबसे छोटा हूॅ इसलिये ये सब चीज़ें मेरी हैं।"

वे डंडियों और बोली से दोनों से लड़ रहे थे। छोटे भाई को उन तीनों को अलग अलग करने में बहुत परेशानी हो रही थी। सो वह बोला — "ऐसे नहीं। ऐसे नहीं। देखो मैं इस लकड़ी के टुकड़े

से एक तीर बनाता हूँ फिर इसे फेंकूँगा तब जो कोई भी इसे सबसे पहले ला कर देगा वही इन तीनों का मालिक होगा।"

उसने तीर बनाया और फेंक दिया। तीर अपनी गति से चल दिया और उसके पीछे दौड़ पड़े तीनों भाई। जब वे तीनों दौड़ गये तो छोटे भाई ने सोचा "अब मुझे बस यह पगड़ी पहननी है इस कालीन पर बैठ कर इसे कोड़ा मारना है और पलक झपकते ही मैं अपने भाई के पास पहुँच जाऊँगा।"

जैसे ही उसने यह सोचा वैसे ही उसने इसे कर दिया। इससे पहले कि वह यह महसूस करे कि वह वहॉ से चल रहा है वह एक बड़े शहर के दरवाजे पर पहुँच चुका था।

जब वह शहर में पहुँचा तो बादशाह के किसी आदमी ने उसे बताया कि बादशाह की बेटी हर रात गायब हो जाती थी। जो भी बादशाह को यह बतायेगा कि उसका क्या होता था बादशाह अपनी बेटी की शादी उससे कर देगा और उसको अपना आधा राज्य दे देगा।

छोटे भाई ने उससे कहा कि वह यह रहस्य मालूम कर देगा वह उसे बादशाह के पास ले चले। और अगर मैं नहीं कर सका तो फिर मेरा यह सिर हाजिर है।

सो वह आदमी उसे बादशाह के पास ले गया। बादशाह ने रात को उसे राजकुमारी के सोने के कमरे के दरवाजे पर तैनात कर दिया

और उससे कहा कि वह अपनी एक ऑख खोल कर यह देखता रहे कि वहॉ क्या हो रहा है।

राजकुमारी इन्तजार करती रही कि वह कब सोयेगा। इस बीच वह दरवाजे में से झॉक झॉक कर देखती रही। एक बार उसे लगा कि लड़का गहरी नींद सो रहा है पर यह पक्का करने के लिये क्या वह सचमुच गहरी नींद सो रहा था उसने उसके पैरों के तले में एक पिन घुसायी।

पर जब वह बिल्कुल नहीं हिला तो उसने एक मोमबत्ती उठायी और चुपचाप बराबर वाले दरवाजे से बाहर निकल गयी। उसने भी तुरन्त ही अपनी पगड़ी पहनी और राजकुमारी के पीछे पीछे चल दिया।

जब वह बाहर आया तो उसने अपने सामने एक अरब को देखा जिसके सिर पर एक सोने का बहुत बड़ा बेसिन रखा था और इस बेसिन में राजकुमारी बैठी थी।

वह खुद भी कूद कर उसी बेसिन में बैठ गया। उसके ऐसे बैठने से वह बेसिन थोड़ा हिल गया। अरब यह देख कर चौंक गया कि उसका बेसिन हिल गया था। उसने राजकुमारी से पूछा कि वह यह क्या कर रही थी क्योंकि इससे वह नीचे गिर जाने वाली थी।

राजकुमारी बोली — "पर मैंने तो एक उॅगली भी नहीं हिलायी। मैं तो बेसिन में वैसे ही बैठी हूॅ जैसे तुमने मुझे बिठाया था।"

पर जब अरब उस बेसिन को ले कर कुछ पग चला तो उसे लगा कि बेसिन तो असाधारण रूप से भारी है। अरब ने फिर पूछा — "आज आपको क्या हो गया है ओ राजकुमारी जी। आज तो आप इतनी भारी हो गयी हैं कि मुझे कुचले ही डाल रही हैं।"

राजकुमारी बोली — "नहीं लाला ऐसा तो कुछ भी नहीं है। मैं न तो भारी ही हुई हूॅ और न हल्की ही।"

कुछ अविश्वास के साथ सिर हिलाते हुए अरब आगे चल दिया और जल्दी ही एक बागीचे में आ पहुॅचा जिसके पेड़ हीरे जड़े चॉदी के थे। भाई ने उसमें से एक शाख तोड़ कर अपनी जेब में रख ली। उसके ऐसा करते ही पेड़ ने एक लम्बी सॉस ले कर कहा — "धरती के किसी आदमी ने हमें नुकसान पहुॅचाया है।"

अरब और राजकुमारी यह सुनते ही हक्का बक्का रह गये। उन्हें पता ही नहीं था कि वे इस बारे में क्या सोचें। खैर वे आगे बढ़ते रहे और फिर एक दूसरे बागीचे में आ पहुॅचे। इस बागीचे के पेड़ कीमती जवाहरात जड़े सोने के थे। इस बागीचे में से भी भाई ने एक शाख तोड़ कर जेब में रख ली।

पर यहॉ जैसे ही भाई ने शाख तोड़ी तो बागीचे के सारे के सारे पेड़ बहुत ज़ोर से चीखे "धरती के किसी आदमी ने हमें नुकसान पहुॅचाया है। धरती के किसी आदमी ने हमें नुकसान पहुॅचाया है।"

अरब तो यह सुन कर आश्चर्य के कारण कुछ बोल ही नहीं पाया।

अब वे एक पुल के पास पहुॅच चुके थे। उसको पार कर के वे एक महल में आ गये जहॉ बहुत सारे दास राजकुमारी का इन्तजार कर रहे थे। अपनी अपनी छाती पर हाथ बॉधे सबने राजकुमारी को नीचे तक झुक कर सलाम किया।

राजकुमारी अरब के शरीर पर पैर रखते हुए बेसिन में से नीचे जमीन पर उतरी। तभी दास उसके लिये रत्नजटित जूते ले आये। भाई ने उसमें से एक जूता उठा कर अपनी जेब में रख लिया। राजकुमारी ने एक जूता पहना और फिर दूसरे जूते को ढूॅढने लगी पर वह तो बिल्कुल ही गायब हो चुका था।

राजकुमारी को बहुत गुस्सा आया पर किसी तरह वह महल में घुसी। भाई भी अपने सिर पर पगड़ी रखे और कोड़ा और कालीन हाथ में लिये हुए किले में घुसा।

राजकुमारी एक कमरे में घुसी जिसमें एक अरब ने जिसके होठ आसमान और धरती को छू रहे थे उससे पूछा कि उसने आने में इतनी देर क्यों कर दी। तब उसने उस आदमी के बारे में बताया जिसे उसके पिता ने उसके ऊपर पहरा देने के लिये तैनात किया

था। देव ने उसे तसल्ली दी कि उससे उसे डरने की कोई जरूरत नहीं थी।

फिर वे दोनों बैठ गये और एक दास हीरे जड़े प्यालों में शर्बत ले आया। जैसे ही राजकुमारी ने एक प्याला उठाने के लिये अपना हाथ बढ़ाया भाई ने दास की बॉह को हल्का सा धक्का दे दिया जिससे प्याला नीचे गिर पड़ा फर्श पर गिरते ही टूट गया। भाई ने उस प्याले का एक टुकड़ा अपनी जेब में रख लिया।

राजकुमारी बोली — "क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि आज कुछ भी ठीक नहीं हो रहा। मैं अब कोई शर्बत नहीं पियूँगी और मैं अब कुछ भी नहीं लूँगी। मैं अब घर जाऊँगी।"

देव ने उसे शान्त किया और एक दूसरे दास को उसके लिये खाना लाने के लिये बोला। मेज लगायी गयी और उस पर बहुत सारे तरीके के खाने लगाये गये। पर जब वे लोग खाना खा रहे थे तो भाई भी भूखा था उसने भी कुछ खाना उसमें से ले लिया।

यह देख कर देव और उसका मेहमान तो डर के मारे बिल्कुल ही बेहोश से हो गये। उनको लगा कि वहॉ कोई तीसरा अदृश्य आदमी मौजूद था और क्योंकि वहॉ से काफी खाना गायब हो चुका था इसलिये देव अब बहुत परेशान था।

फिर उसने खुद ने राजकुमारी से सामान्य समय से पहले ही घर लौट जाने के लिये कहा। वह राजकुमारी को जाते समय चूमने वाला ही था कि उस अदृश्य आदमी ने उन दोनों को अलग कर दिया।

यह देख कर दोनों पीले पड़ गये। उन्होंने लाला को बुलाया और राजकुमारी ने बेसिन में बैठ कर उसे जल्दी ही घर वापस चलने का हुक्म दिया।

भाई ने तुरन्त ही दीवार पर से एक तलवार ले ली और उससे देव का सिर धड़ से अलग कर दिया।

जैसे ही उसका सिर नीचे गिरा तो जमीन आसमान दोनों हिल गये और सिसकियों और रोने की आवाजें आने लगीं — "हमको धिक्कार है एक धरती के आदमी ने हमारे राजा को मार डाला।"

यह सुन कर तो भाई भी डर गया। उसको तो पता ही नहीं था कि वह कहॉ था सो तुरन्त ही उसने अपना कालीन बिछाया और उस पर बैठ कर उस पर कोड़ा मारा तो वह तुरन्त ही वहॉ से चला गया। जब राजकुमारी अपने कमरे में पहुॅची तो लो वह लड़का तो दरवाजे पर अभी भी खर्राटे मारता हुआ गहरी नींद सोया पड़ा था।

राजकुमारी गुस्से से बड़बड़ायी "हमारे बीच में आने वाला सूअर।"

अगली सुबह भाई को बुलवाया गया और उससे पूछा गया कि क्या वह राजकुमारी के हर रात गायब रहने के रहस्य को सुलझा सका। अगर नहीं तो उसका सिर कटवा दिया जायेगा।

भाई बोला — "जी मैंने उसे सुलझा लिया है पर मैं तुम्हें नहीं बताऊॅगा। उसके लिये तुम मुझे बादशाह को पास ले चलो।"

सो वह उसे बादशाह के पास ले गया तो उसने कहा कि वह यह बात सारे दरबार और शहर के सामने बतायेगा। क्योंकि उसने सोचा कि इस तरह से वह अपने भाई को ढूँढ पायेगा।

सो सारे लोग शहर के चौराहे पर इकट्ठा हुए। बादशाह और राजकुमारी भी एक मंच पर बैठे। उनके पास ही भाई खड़ा हुआ था जिसने शुरू से ले कर पूरा हाल वहॉ बता दिया।

राजकुमारी बोली — "पिता जी। आप इस पर विश्वास मत कीजिये। यह सच नहीं है।"

पर तब भाई ने अपनी जेब से चॉदी के पेड़ की एक शाख सोने के पेड़ की एक शाख एक मणिजटित जूता और प्याले का टूटा हुआ टुकड़ा निकाल कर दिखाये। पर जैसे ही वह देव की मौत का हाल वर्णन करने जा रहा था कि भीड़ में उसने अपने भाई को देखा।

बस उसने न कुछ और सुना और न कुछ और देखा और अपने भाई से मिलने दौड़ गया। उसने उसे पकड़ ही लिया। जब वे दोनों वापस लौटे तो उसने बादशाह से विनती की कि राजकुमारी और आधा राज्य वह उसके भाई को दे दे।

उसके अपने लिये वह पगड़ी कोड़ा और कालीन ही काफी थे। वह उन्हीं से अपनी जीविका चला सकता था। उसकी इच्छा तो बस अपने भाई के पास रहने की ही थी।

राजकुमारी ने जब यह सुना कि देवों का राजा मर गया तो वह बहुत खुश हुई क्योंकि उसने उसके ऊपर टोना कर रखा था। अब वह टोना उसके ऊपर से हट चुका था तो वह उसे एक राक्षस के रूप में ही देखने लगी थी।

इस खुशी में उसने भाई के बड़े भाई से शादी करने की अनुमति दे दी थी। शादी की खुशियॉ **40** दिन और **40** रातों तक चलीं।

मैं भी वहॉ था। जब मैंने खाने के लिये पुलाव मॉगा तो रसोइये ने मेरे हाथ पर इतनी ज़ोर से मारा कि तबसे उसमें ताकत ही नहीं रह गयी है।

13 गंजा मुहम्मद[25]

यह तब की बात है जब ऊँट सन्देश ले जाया करता था जब मेंढक आसमान में उड़ा करते थे और जब मैं पहाड़ियों पर चढ़ा करता था और घाटियों में उतरा करता था।

उस समय दो भाई साथ साथ रहा करते थे। साथ में उनकी मॉ और गरीबी और बहुत थोड़े से जानवर रहते थे जो उन्हें अपने पिता से विरासत में मिले थे।

एक दिन उनमें से छोटा भाई जो गंजा था उसके दिमाग में आया कि उसके पिता जो यह थोड़ी सी सम्पत्ति छोड़ गये थे वह उसे अपने बड़े भाई से बॉट ले।

सो वह अपने बड़े भाई के पास गया और बोला — "क्या तुम ये दो बाड़े देख रहे हो? इनमें से एक नया है और एक पुराना। हम अपनी गायों को खोल देते हैं। वे जब लौटेंगी तो जो नये बाड़े में घुसेंगी वे मेरी होंगी और जो पुराने बाड़े में घुसेंगी वे तुम्हारी होंगी।"

बड़ा भाई बोला — "नहीं मुहम्मद। जो पुराने बाड़े में लौटेंगी वे तुम्हारी होंगी।"

मुहम्मद बोला — "ठीक है।"

गायों को छोड़ दिया गया और जब वे लौटीं तो वे सब नये बाड़े में लौटीं सिवाय एक अन्धी सी गाय के।

---

[25] Mahomet, the Bald-Headed. Tale No 13

मुहम्मद शिकायत या असन्तोष का एक शब्द भी नहीं बोला। वह अपनी अन्धी गाय को रोज़ घास के मैदान में चराने के लिये ले जाता और नियमित रूप से शाम को घर ले आता।

एक दिन मुहम्द सड़क के किनारे बैठा हुआ था कि बहुत तेज़ हवा चल पड़ी और उसने पेड़ों की डालियों को झुका दिया और चटका दिया तो मुहम्मद ने पेड़ से कहा — "ओ चटकने वाले। क्या तुमने मेरे भाई को देखा है।"

पेड़ ने उसकी यह बात नहीं सुनी बल्कि वह और ज़ोर से चटक गया। मुहम्मद ने फिर अपना सवाल दोहराया पर पहले की तरह से पेड़ ने फिर से कोई जवाब नहीं दिया बल्कि और ज़ोर से चटक गया।

क्योंकि पेड़ ने गंजे मुहम्मद के सवाल का कोई जवाब नहीं दिया था सो वह बहुत गुस्सा हो गया। उसने अपनी कुल्हाड़ी उठायी और उसे काटने के लिये उठा और उसने उसके तने में एक कुहाड़ी मारी तो लो यह क्या हुआ। उस पेड़ के तने की चीर से जो उसके कुल्हाड़ी मारने से बनी थी बहुत सारे सोने के सिक्के बरस पड़े।

जो कुछ थोड़ी बहुत बुद्धि उसमें थी उसका इस्तेमाल करते हुए वह अपने बड़े भाई के पास गया और उससे एक बैल उधार मॉगा उसे एक गाड़ी में जोता कुछ थैले लिये उनको मिट्टी से भरा और उसके साथ पेड़ के पास पहुॅचा। वहॉ पहुॅच कर उसने थैलों में से मिट्टी निकाल दी और उनको सोने से भर लिया।

जब वह घर लौट रहा था तो उसके भाई को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि उसका भाई कितनी सारा धन ले कर लौट रहा था।

छोटे भाई को उसकी इच्छा ने एक बार फिर अपनी सम्पत्ति को बॉटने के लिये पकड़ लिया। उसने सोचा "हमें अबकी बार भी सम्पत्ति को बॉटने में कोई ऐतराज नहीं होना चाहिये।"

सो उसने एक तराजू पड़ोस से उधार ली। पड़ोसी ने उसे तराजू दे तो दी पर पड़ोसी ने सोचा यह बेवकूफ क्या चीज़ तौल रहा है सो उत्सुकतावश उसने थोड़ा सा गोंद तराजू के एक पलड़े के नीचे लगा दिया सो जब उसने उसकी तराजू लौटायी तो उसमें एक सोने का सिक्का चिपक गया।

पड़ोसी ने अपनी यह खोज दूसरे को बतायी दूसरे ने तीसरे को और तीसरे ने चौथे को। और कुछ ही दिनों में मुहम्मद की अमीरी के चर्चे सारे गॉव में फैल गये।

इतने सारा सोना रखने से दोनों भाई अब बहुत परेशान हो गये। उन्हें नहीं मालूम था कि वे उसका क्या करें। कुछ सोचने के बाद उन्होंने एक फावड़ा लिया और एक गड्ढा खोदा और उसमें अपने सिक्के गाड़ दिये और अपना घर छोड़ने के लिये तैयार हो गये।

जब वे वे वहॉ से चल चुके तो बड़े भाई को याद आया कि उसने घर का दरवाजे पर ताला तो लगाया ही नहीं है सो उसने

अपने छोटे भाई को देखने के लिये भेजा कि वह यह देख कर आये कि घर का ताला लगा है या नहीं।

घर पहुँच कर उसे ध्यान आया कि उसे अपनी मॉ को शान्त कर देना चाहिये सो उसने जल्दी जल्दी पानी उबाला और उसमें अपनी मॉ को डाल दिया और वहॉ तब तक इन्तजार किया जब तक कि वह और आवाज नहीं निकाल सकी।

फिर उसने उसे पानी से बाहर निकाला और उसे दीवार के सहारे एक झाड़ू के साथ बिठा दिया। फिर उसने दरवाजे की किवाड़ निकाल कर अपनी पीठ पर रखी और अपने बड़े भाई के पास चल दिया।

जब बड़े भाई ने छोटे भाई को दरवाजे की किवाड़ लाते देखा तो वह तुरन्त ही समझ गया कि उनकी मॉ का क्या हुआ होगा। वह मुहम्मद से बहुत नाराज हुआ जो यह सोच सोच कर बहुत खुश हो रहा था जैसे घर के दरवाजे की किवाड़ ला कर उसने कोई बड़ा असाधारण काम कर दिया हो क्योंकि न वहॉ कोई दरवाजा होगा और न उसे अब कोई खोल नहीं पायेगा। गुस्से में भर कर बड़े भाई ने उसे गर्दन से पकड़ा और उसे बहुत ज़ोर से हिलाया।

अभी वे यह सोच ही रहे थे कि उन्हें क्या करना चाहिये कि उन्हें तीन घुड़सवार उधर आते दिखायी दिये। दोनों भाई उन्हें देख कर डर गये।

उन्हें लगा कि वे शायद उनका पीछा करते आ रहे हों सो उनसे बचने के लिये वे दोनों पेड़ पर चढ़ गये। साथ में किवाड़ भी ले गये। अँधेरा सा हो गया था सो वे उनको दिखायी नहीं दिये।

मुहम्मद बोला कि वे किस्मत वाले थे जो बच गये और उनकी ज़िन्दगी बच गयी। और मुहम्मद इस बात से खास कर बहुत खुश था सो इस खुशी में उसके हाथ से किवाड़ गिर गयी और वह एक घुड़सवार के सिर पर जा गिरी जो इत्तफाक से उस समय उसके नीचे से जा रहा था।

वह घुड़सवार जिसके सिर पर यह किवाड़ गिरी थी उसने तुरन्त ही अपने घोड़े को एड़ लगायी और यह कहते हुए वहॉ से भाग लिया "अल्लाह दया करो। लगता है दुनियॉ खत्म होने वाली है।"

इन घटनाओं के बाद बड़े भाई ने मुहम्मद की कई उल्टी सीधी बातों को सहन किया फिर चुपके से उसे उसके हाल पर छोड़ दिया। अब मुहम्मद क्या करे। वह दुनियॉ में अकेला रह गया था। वह थका हुआ और भूखा चारों तरफ अकेला ही घूमता रहा।

आखिर वह एक गॉव में पहुँच गया। वहॉ वह एक जामी[26] के दरवाजे पर बैठ गया और आने जाने वालों से पैसे और खाना मॉगने लगा।

[26] Djami – it seems it means Masjid

तभी जामी में से पतली दाढ़ी रखे हुए एक छोटा सा आदमी निकल कर बाहर आया तो दरवाजे पर मुहम्मद को देख कर उससे पूछा कि क्या वह उसके घर में काम करना चाहेगा।"

मुहम्मद बोला कि वह जरूर ही उसका नौकर बनना चाहेगा पर इस शर्त पर कि वह उससे कभी गुस्सा नहीं होगा चाहे कुछ भी हो जाये और अगर वह कभी उससे गुस्सा हुआ तो वह उसे मार देगा। और अगर मैं आपसे कभी गुस्सा होऊॅगा तो आपको मुझे मारने का पूरा अधिकार है।"

अब क्योंकि नौकरों का मिलना बहुत मुश्किल था सो आदमी राजी हो गया। उसने उसकी शर्त स्वीकार कर ली और उसे अपने यहॉ नौकर रख लिया।

मुहम्मद ने अपना काम वहॉ मालिक की बतखों और भेड़ों को मार कर शुरू किया और फिर पूछा — "क्या आप मुझसे गुस्सा हैं।"

वह आदमी तो यह देख कर बहुत डर गया उसने जवाब दिया — "नहीं नहीं मैं भला तुमसे गुस्सा क्यों होऊॅगा।" उसके बाद मुहम्मद का काम केवल घर में बैठना ही रह गया।

मालिक की पत्नी यह सब देख कर बहुत डर गयी थी। उसको लगा कि मुर्गियों और बतखों के बाद अब उसकी बारी आने वाली है सो उस पागल आदमी से बचने के लिये उसने अपने पति से कहा कि वह उसे ले कर छिप कर रात में ही कहीं भाग चले।

पर मुहम्मद को उनका इरादा सुनायी पड़ गया तो वह उनके सामान के अन्दर छिप कर बैठ गया और जब उन्होंने दूसरे गॉव में जा कर अपना सामान खोला तो वह उसमें से निकल आया।

पति पत्नी ने आपस में सलाह की कि सुरक्षा के लिये उन सबको वह रात समुद्र के किनारे सो कर बितानी चाहिये।

मुहम्मद को भी उनके साथ ही जाना चाहिये और जब रात होगी तब मौका पड़ने पर वे उसे समुद्र में फेंक कर डुबो कर मार देंगे। पर मुहम्मद तो बहुत चालाक था उसने मालिक की पत्नी को ही उठा कर समुद्र में फेंक दिया और वह उसमें डूब गयी।

उसने फिर पूछा — "मालिक क्या आप मुझसे नाराज हैं।"

आदमी बोला — "ओ अभागे। मैं तुझसे नाराज क्यों नहीं होऊॅगा। तूने न मेरी चीज़ों को केवल बर्बाद किया है बल्कि मुझे भीख मॉगने के लिये सड़क पर खड़ा कर दिया है। और अब तो तूने मेरी पत्नी को भी मार दिया है।"

यह सुन कर मुहम्मद ने उसे पकड़ लिया और उसे उसकी नौकरी की शर्त की याद दिलायी और उसको भी पकड़ कर समुद्र में फेंक दिया।

मुहम्मद एक बार फिर दुनियॉ में अकेला हो गया। कौफी पीता हुआ और अपना पाइप पीता हुआ वह इधर उधर घूमता फिरा। एक दिन उसे कहीं से पॉच पैसे का एक सिक्का मिल गया तो उसने उसकी लैबलैबी यानी भुना हुआ काबुली चना खरीद लिया।

जब वह उन्हें खा रहा था तो गलती से उसका एक चना कुॅए में गिर गया। अब मुहम्मद बैठ कर रोने लगा "अब मुझे अपना चने का दाना चाहिये। अब मुझे अपना चने का दाना चाहिये।"

उसका यह जोर जोर से चिल्लाना सुन कर कुॅए में से एक अरब निकला जिसके दोनों होठ इतने बड़े थे कि उसका ऊपर वाला होठ तो आसमान को छू रहा था और नीचे वाला होठ जमीन को छू रहा था। उसने मुहम्मद से पूछा "तुमको क्या चाहिये?"

मुहम्मद रोते रोते बोला — "मुझे मेरी लैबलैबी चाहिये।"

अरब कुॅए में गायब हो गया और तुरन्त ही एक छोटी सी मेज अपने हाथों में ले कर निकल आया। वह मेज वह गंजे को देते हुए बोला — "जब भी तुम्हें भूख लगे तो तुम इस मेज को रख कर कहना कि "मेज लग जा।" तो इस मेज पर बहुत सारा खाना लग जायेगा। और जब तुम खा चुको तो कहना "मेज बस काफी है।"

मुहम्मद ने वह मेज ली और एक गॉव में पहुॅचा। अब जब वह भूखा होता तो उसे केवल यही कहना होता "मेज लग जा।" और उस पर बहुत बढ़िया बढ़िया खाना लग जाता। वह सारा खाना इतना स्वादिष्ट होता कि उसकी समझ में यही नहीं आता कि वह पहले क्या खाये।

अपनी इस खुशी में उसने सोचा कि वह गॉव वालों को बुला कर इसे दिखाये। सो उसने सारे गॉव को खाने पर बुलाया। जब

गॉव वाले उसके पास आये तो उन्होंने देखा कि उसके पास न तो कोई खाना था और न ही कोई आग जल रही थी।

उनको लगा कि उनका मेजबान उनके साथ हॅसी कर रहा था। पर जब वह अपनी छोटी सी मेज निकाल कर लाया और बोला "मेज लग जा।" तो दावत तो पल भर में तैयार थी। सबने खूब पेट भर कर खाना खाया और अपने अपने घर चले गये।

पर वे इस दावत को भूले नहीं। वे सब मुहम्मद से उसकी मेज लेने की कोई तरकीब सोचने लगे। आखिरकार यह तय किया गया उन सबमें से एक किसी तरह से मुहम्मद जब अपने घर में न हो तो उसके घर में घुस जाये और वह उसका छोटा सा फर्नीचर चुरा लाये। और उन्होंने ऐसा ही किया।

अब ऐसा हुआ कि मुहम्मद को एक दिन बहुत जोर की भूख लगी तो अब वह क्या करे। वह फिर से उसी कुॅए के पास पहुॅचा और रोने लगा — "मुझे अपनी लैबलैबी चाहिये। मुझे अपनी लैबलैबी चाहिये।"

फिर से वहॉ अरब प्रगट हुआ उसने पूछा "तुम्हारी मेज कहॉ है।"

"वह चोरी हो गयी।"

वह मोटे होठ वाला अरब फिर से कुॅए में चला गया और अबकी बार एक हाथ की चक्की ले कर निकला और मुहम्मद को वह चक्की देते हुए बोला — अगर तुम इसे दॉयी तरफ घुमाओगे तो

यह तुम्हें सोना देगी और अगर तुम इसे बॉयी तरफ घुमाओगे तो यह तुम्हें चॉदी देगी।"

मुहम्मद उस चक्की को ले कर घर चला गया। घर जा कर उसने चक्की को दॉये और बॉये बार इतना घुमाया कि उससे तो बहुत सारा पैसा निकला। वह तो अब गॉव में पहले से भी बहुत ज़्यादा अमीर हो गया।

अब इस चक्की की खबर की हवा गॉव वालों को भी लगी। और एक सुन्दर सुबह यह भी गायब गयी। मुहम्मद फिर से कुॅए के पास बैठा रो रहा था "मुझे अपनी लैबलैबी चाहिये। मुझे अपनी लैबलैबी चाहिये।"

वहॉ फिर से अरब निकल कर आया और उससे पूछा "तुम्हारी चक्की और मेज कहॉ हैं।" गंजा रोया "वे दोनों ही मुझसे चुरा ली गयीं हैं।"

अरब एक बार फिर से कुॅए में अन्दर गया और इस बार दो डंडे ले कर बाहर निकला। उसने उन्हें मुहम्मद को दे कर कहा कि वह केवल यही शब्द कहे "डंडों तुम एक साथ हो जाओ।"

मुहम्मद वे डंडे ले कर चल दिया। उसने उन्हें जॉचना चाहा तो वह बोला "डंडों तुम एक साथ हो जाओ।" बस तुरन्त ही डंडे उसके हाथ से उड़ गये और उसे बड़ी निर्दयता से उसे मारना शुरू कर दिया।

जैसे ही वह अपने आश्चर्य से बाहर निकला तो वह बोला "डंडों रुक जाओ।" और उन्होंने उसे मारना बन्द कर दिया। मुहम्मद यह देख कर बहुत खुश हुआ और उसने सोच लिया कि वह इन्हें कैसे इस्तेमाल करेगा।

वह जल्दी से घर पहुँचा और फिर सब गॉव वालों को अपने घर बुलाया। वे बड़े उत्सुक से उसके घर यह देखने के लिये आये कि आज वह उनको और कौन सी आश्चर्यजनक चीज़ दिखायेगा।

जब काफी लोग उसके घर आ गये तब मुहम्मद ने उनको अपनी डंडियॉ दिखायीं और बोला "डंडों तुम एक साथ हो जाओ।" बस उसका यह कहना था कि वे डंडियॉ मुहम्मद के हाथ से फिसल कर उड़ गयीं और मेहमानों को मारने लगीं।

वे सब उससे दया की प्रार्थना करने लगे पर मुहम्मद ने उनको रुकने के लिये नहीं कहा जब तक कि उन्होंने उसे मेज और चक्की वापस कर देने का वायदा नहीं कर दिया। लोग तुरन्त ही उसकी चीज़ें वापस ले आये तब उसने अपने डंडों को रोका।

गंजे मुहम्मद ने अपनी तीनों भेंटें ली और फिर अपने गॉव चला गया जहॉ वह फिर से अपने भाई के पास चला गया। अब वह अक्लमन्द और अमीर हो चुका था सो दोनों भाइयों ने अब शादी कर ली और आराम से रहने लगे।

अब गॉव में मुहम्मद से ज़्यादा कोई और अक्लमन्द आदमी नहीं था।

14 तूफान राक्षस[27]

दो बिल्लियों ने एक स्प्रिंग बनायी। मेंढक पंख लगा कर उड़ गया। चाची पिस्सू नीचे गिर गयी और पत्थर उसके ऊपर गिर पड़े। मुर्गा एक इमाम था। गाय एक नाई थी। बतखें नाचीं। यह सब तब हुआ जब एक बादशाह बूढ़ा हुआ।

इस बादशाह के तीन बेटे थे और तीन बेटियॉ थीं। एक दिन बादशाह बीमार हो गया और होजा और डाक्टरों के काफी इलाज के बाद भी उसे आराम नहीं आया।

उसने अपने सारे बेटों को बुलाया और उनसे कहा — "जब मैं मर जाऊॅगा तो तुममें से एक बादशाह बनेगा जो मेरी कब्र पर तीन रात तक पहरा देगा। और जहॉ तक मेरी बेटियों का सवाल है तो उन तीनों की शादी तुम लोग उस आदमी से कर देना जो आदमी उनको पहले मॉगने आये।"

यह कह कर वह मर गया और उसको बहुत शानो शौकत के साथ दफ़ना दिया गया जैसी कि किसी बादशाह को मिलनी चाहिये थी।

अब इसलिये कि सिंहासन बहुत दिनों तक बादशाह से खाली न रहे बादशाह का सबसे बड़ा बेटा पिता की कब्र की पहरेदारी के लिये गया। वहॉ उसने अपना प्रार्थना वाला कालीन बिछाया और आधी

[27] The Storm Fiend. Tale No 14.

रात तक बैठा बैठा वहॉ प्रार्थना करता रहा। फिर वह सुबह का इन्तजार करता रहा।

लेकिन तभी काली रात में एक बहुत डरावनी आवाज सुनायी दी। उस आवाज को सुन कर बड़ा बेटा डर गया और वहॉ से अपना कालीन ले कर भाग गया और घर जा कर ही रुका।

अगली रात बादशाह का दूसरा बेटा अपने पिता की कब्र पर पहरा देने गया। वह भी आधी रात तक वहॉ शान्ति से बैठा रहा पर उसके बाद उसके साथ भी वही हुआ जो उसके बड़े भाई के साथ हुआ था।

अबकी बार तीसरे और सबसे छोटे बेटे की बारी थी। उसने अपना बड़ा वाला चाकू लिया उसे अपनी कमर में खोंसा और कब्रगाह चला गया। आधी रात के करीब इतने ज़ोर का शोर मचा कि उसे लगा जैसे धरती और आसमान दोनों कॉप गये।

छोटा बेटा उठा और उसी दिशा में चल दिया जिस दिशा से वह आवाज आ रही थी। चलते चलते वह एक बहुत ही बड़े ड्रैगन के पास आ पहुॅचा। इसने अपना चाकू निकाला और ड्रैगन के शरीर में अपनी पूरी ताकत से घोंप दिया।

ड्रैगन बेचारा बस यही बोल सका — "अगर तुम ठीक आदमी हो तो यह चाकू मेरे शरीर में एक बार और भौंको।"

राजकुमार बोला — "मैं नहीं।"

और ड्रैगन मर गया।

राजकुमार ने उसकी नाक और कान काटने चाहे पर अँधेरे में उसे कुछ दिखायी नहीं दिया। वह अभी चारों तरफ देख ही रहा था कि दूर उसे एक रोशनी दिखायी दी। वह उस रोशनी की दिशा में चल दिया। जब वह वहॉ पहुँचा तो उसने एक कोने में एक बूढ़े को देखा।

इस बूढ़े के हाथ में रस्सी की दो गेंदें थीं – एक काली रस्सी की और दूसरी सफेद रस्सी की। बूढ़ा काली रस्सी की गेंद पर रस्सी लपेट रहा था और सफेद रस्सी की गेंद को उसने जमीन पर छोड़ रखा था।

राजकुमार ने पूछा — "पिता जी यह आप क्या कर रहे हैं?"

बूढ़ा बोला — "यह मेरा काम है बेटे। मैं रात को खत्म कर रहा हूँ और दिन को आने दे रहा हूँ।"

राजकुमार बोला — "मेरा काम आपसे अधिक कठिन है पिता जी।" कह कर उसने बूढ़े को बॉध लिया। अब वह दिन को नहीं बुला पा रहा था। फिर वह रोशनी ढूँढने के लिये चला गया।

चलते चलते वह एक किले के पास पहुँच गया जिसकी दीवार के पास **40** लोग खड़े खड़े एक मीटिंग कर रहे थे।

राजकुमार ने पूछा — "तुम लोग यहॉ क्या कर रहे हो।"

उनमें से एक बोला — "हम लोग चोरी करने के लिये किले के अन्दर जाना चाहते हैं। पर हमको पता नहीं कि हम इसके अन्दर जायें कैसे।"

राजकुमार बोला — "अगर आप मुझे रोशनी दे दें तो मैं आपकी सहायता कर सकता हूँ।"

चोर इस बात पर तुरन्त ही राजी हो गये। राजकुमार ने कुछ कीलें निकालीं और जमीन से ले कर छत तक उन्हें दीवार में ठोक दिया। फिर वह खुद ऊपर चढ़ गया और उसने नीचे खड़े हुए चोरों से एक एक कर के उस रस्सी पर चढ़ कर आने के लिये कहा।

चोरों ने उसकी बात मानी और वे एक एक कर के ऊपर आने लगे। जैसे जैसे वे आते गये वह उनका सिर काट देता और धड़ किले के ऑगन में फेंक देता। ऐसा उसने सभी चोरों के साथ किया।

यह कर के वह किले में घुसा। किले के अन्दर एक बहुत ही शानदार महल खड़ा था। जब वह दरवाजे में घुसा तो उसने देखा कि सीढ़ियों के पास ही एक खम्भे से एक सॉप लिपटा हुआ था। उसने उसके अन्दर अपनी तलवार तो घुसा दी पर वह अपनी तलवार निकालना भूल गया सो वह तलवार उस जानवर के शरीर में ही अटकी रह गयी।

वह सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गया तो एक कमरे में आ गया जहॉ एक बहुत सुन्दर लड़की सोयी हुई थी। उसने उस कमरे का दरवाजा बन्द कर दिया और वह दूसर कमरे की तरफ चल पड़ा। उस कमरे में एक और सुन्दर लड़की सोयी हुई थी जो पहली लड़की से भी ज़्यादा सुन्दर थी।

यह कमरा बन्द कर के वह तीसरे कमरे में गया जो पूरे तरीके से धातु से ढका हुआ था। वहॉ तो एक इतनी सुन्दर लड़की सोयी हुई थी कि उसके प्यार में तो वह हजारों बार पड़ सकता था। उसने यह दरवाजा भी बन्द किया और कीलों के सहारे महल से नीचे उतर आया।

फिर वह उस सफेद दाढ़ी वाले बूढ़े के पास गया जिसको वह बॉध कर आया था। उस नौजवान के देखते ही बूढ़ा चिल्ला कर बोला — "तुम इतनी देर तक यहॉ से दूर क्यों रहे। इतनी देर तक बॅधे रहने के कारण मेरी पसलियॉ दर्द कर रही हैं।" नौजवान ने उसे खोल दिया और उस बूढ़े ने फिर से सफेद गेंद और दूर लुढ़कानी शुरू कर दी।

नौजवान फिर ड्रैगन के पास लौटा उसके नाक कान काटे और उन्हें अपनी जेब में रख लिया। उनको ले कर वह अपने महल वापस आ गया जहॉ उसने देखा कि उसका बड़ा भाई बादशाह बना दिया गया था। आ कर उसने अपने रात के कारनामें के बारे में कुछ नहीं कहा और जैसा चलता रहा चलने दिया।

कुछ समय बाद एक शेर महल में आया और बादशाह के सामने आय तो बादशाह ने पूछा कि तुम क्या चाहते हो। शेर बोला — "मैं आपकी सबसे बड़ी बहिन से शादी करना चाहता हूॅ।"

बादशाह बोला — "पर मैं एक जंगली जानवर से अपनी बहिन की शादी नहीं कर सकता।"

इस तरह से इस शेर को वापस भेज दिया जाता अगर छोटे राजकुमार ने यह न देख लिया होता तो। वह आ कर बोला — "भैया हमारे पिता जी ने कहा था कि जो कोई भी पहला तुम्हारी जिस बहिन का भी हाथ मॉगने आये तुम उसी से उसकी शादी कर देना।"

यह सुन कर उसने शेर के हाथ में अपनी सबसे बड़ी बहिन का हाथ दे दिया। शेर भी उसकी बहिन को अपने साथ ले कर चला गया।

अगले दिन एक चीता आया और बादशाह से उसकी दूसरी बहिन का हाथ मॉगा। दोनों बड़े भाइयों ने उसे अपनी बहिन देने के लिये मना कर दिया पर छोटे भाई ने उन्हें फिर से अपने पिता की बात याद दिलायी तो दोनों फिर उसे अपनी बहिन देने को राजी हो गये। चीता उनकी दूसरी बहिन को ले कर चला गया।

तीसरे दिन एक चिड़िया उड़ती हुई महल में आयी और उसने उनकी सबसे छोटी तीसरी बहिन का हाथ मॉगा। बादशाह और उसका भाई फिर उसे एक चिड़िया को देने के लिये तैयार नहीं थे पर सबसे छोटे भाई ने उन्हें फिर मजबूर किया कि वे पिता का हुक्म मानें और वह छोटी बहिन को ले कर चला गया।

अब हम किले की ओर चलते हैं। इस किले में भी एक बादशाह रहता था जिसके तीन बेटियॉ थीं। जब बादशाह सुबह उठा तो उसको बाहर जाते समय लगा कि महल में कोई आया था।

वह आगे आंगन में गया तो देखा कि सीढ़ियों के पास के एक खम्भे पर एक सॉप लिपटा हुआ था जिसे तलवार से दो हिस्सों में काट दिया गया था। आगे बढ़ा तो देखा कि ऑगन में **40** सिर कटे धड़ पड़े हुए हैं।

उसने सोचा कि यह काम कोई दुश्मन नहीं कर सकता यह तो किसी दोस्त का ही काम है। वह हमको चोरों और सॉप से छुड़ाने के लिये ही आया था। यह तलवार हमारे उसी दोस्त की लगती है पर वह है कहॉ।

उसने अपने लाला से इस बात के विषय में सलाह ली तो वज़ीर बोला — "हम पता कर सकते हैं सरकार अगर हम एक बड़ी दावत का इन्तजाम करें और उसमें हिस्सा लेने के लिये हर एक से कहें तो। फिर हम उन सब आने वालों को बहुत पास से देखेंगे तो हो सकता है कि उनमें से कोई इस तलवार के नाप की म्यान ले कर आये।"

सो एक बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया गया जो **40** दिन और **40** रात तक चली। एक दिन लाला ने कहा — "सरकार इस दावत में तीन राजकुमारों को छोड़ कर सभी लोग आये हैं।"

सो उन लोगों को भी बुलाया गया।

जब वे लोग आये तो सबसे छोटे राज्कुमार की तलवार की म्यान उस तलवार से मेल खा रही थी। बादशाह ने उसे तुरन्त ही

बुलवा भेजा और उससे कहा — "तुमने हमारी बहुत अच्छी सेवा की है तो बताओ कि उसके बदले में मैं तुम्हें क्या दूँ।"

राजकुमार बोला — "आपकी सबसे छोटी बेटी से कम मुझे कुछ भी नहीं चाहिये नहीं तो मुझे आपसे कुछ भी नहीं चाहिये।"

बादशाह बोले — "मुझे बहुत अफसोस है मेरे बेटे अगर तुमने उसे मुझसे न मॉगा होता। मेरा ताज मेरा राज्य सब तुम्हारा है पर मेरी इस लड़की को मत मॉगो।"

राजकुमार बोला — "अगर आप उसे मुझे दे देंगे तो वह मुझे स्वीकार है नहीं तो मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिये।"

बादशाह बोले — "मैं तुमको अपने सबसे बड़ी बेटी दे दूँगा अपनी दूसरी बेटी भी दे सकता हूँ पर मैं अपनी सबसे छोटी बेटी से बिछड़ना नहीं चाहता।

तूफान राक्षस ने उसे शादी करनी चाही थी और क्योंकि मैं इसे उसे देना नहीं चाहता था तो मुझे इसे लोहे के कमरे में बन्द कर के रखना पड़ा ताकि वह देव उसके पास तक न पहुँच सके। यह देव इतना ताकतवर है कि कोई तोप उसको छेद नहीं सकती। कोई ऑख उसे देख नहीं सकती।"

बादशाह ने राजकुमार से बहुत विनती की कि वह छोटी राजकुमारी को अपने दिमाग से निकाल दे ताकि वह खतरे से दूर रह सके पर सब बेकार। राजकुमार तो सुनने वाला था नहीं। यह देख कर कि उसका हर तर्क बेकार जा रहा था और बात और गम्भीर

होती जा रही है बादशाह मान गया और उन दोनों की शादी हो गयी।

दोनों बड़े भाइयों की शादी उसकी दोनों बड़ी बहिनों से हो गयी। शादी कर के दोनों बड़े भाई तो अपने महल चले गये जबकि छोटा भाई अपनी पत्नी की सुरक्षा के लिये अपनी ससुराल में ही रह गया।

कुछ समय तक राजकुमार अपनी पत्नी के साथ सुख से रहा। फिर एक दिन वह अपनी पत्नी से बोला — "प्रिये। मुझे तुम्हारे पास रहते रहते काफी समय हो गया मैं एक घंटे के लिये शिकार खेलने के लिये जाना चाहता हूॅ।"

राजकुमारी बोली — "प्रिय। मुझे पूरा विश्वास है कि एक बार तुम मुझे छोड़ कर जाओगे तो लौटने पर मुझे नहीं देख पाओगे।"

पर अन्त में वह हार गयी और उसे राजकुमार की बात माननी ही पड़ी। राजकुमार अपने हथियार ले कर जंगल चला गया। तूफान राक्षस को अब यह मौका मिल गया जिसका उसे बहुत दिनों से इन्तजार था। वह उस बहादुर राजकुमार से डरता था।

जब तक वह राजकुमारी के पास था राक्षस राजकुमारी को उड़ाने की हिम्मत नहीं कर पाया था। पर अब जैसे ही राजकुमार महल से बाहर गया वह राजकुमारी को ले उड़ा।

कुछ देर बाद ही राजकुमार घर लौट आया तो उसने देखा कि राजकुमारी तो महल में नहीं थी। वह जल्दी से बादशाह के पास

गया पर देव उसकी पत्नी को ले गया था और अब वह कहीं भी नहीं दिखायी नहीं दे रही थी।

यह देख कर वह तो बहुत ज़ोर से रो पड़ा पर फिर कुछ देर बाद वह उठा अपने घोड़े पर सवार हुआ और इस इरादे से चल पड़ा कि या तो वह अपनी पत्नी को वापस ले आयेगा या फिर इस कोशिश में अपनी जान दे देगा।

वह अपनी पत्नी को ढूँढता हुआ दिनों और हफ्तों तक घूमता रहा। उसका दुख बढ़ता ही जा रहा था। आखिर उसको एक महल दिखायी दिया। वह इतना धुँधला दिखायी दे रहा था कि उसे मुश्किल से ही दिखायी देना बोल सकते हैं। यह उसकी सबसे बड़ी बहिन का महल था।

जब वह वहॉ पहुँचा तो उसकी बहिन महल के बाहर देख रही थी। उसने सोचा कि यह आदमी यहॉ कहॉ से आ गया जहॉ कोई चिड़िया भी पर नहीं मारती और कोई कारवॉ भी नहीं आता जाता।

पर ध्यान से देखने पर उसने देखा कि वह तो उसका सबसे छोटा भाई था। मिलने पर तो वे दोनों इतने खुश हुए कि कुछ देर तक तो वे बोल ही न सके बस एक दूसरे को गले लगाये ही खड़े रहे।

शाम को बहिन ने राजकुमार से कहा — "जल्दी ही मेरे पति शेर यहॉ आते ही होंगे। हालॉकि वह मुझे बहुत अच्छे तरीके से रखते हैं पर आखिर तो वह हैं एक जंगली जानवर ही। हो सकाता

है कि वह तुम्हें कोई नुकसान पहुँचायें तो मैं तुम्हें छिपा देती हूँ।" कह कर उसने अपने भाई को छिपा दिया।

जब शेर घर आया तो बहिन ने पूछा अगर मेरा कोई एक भाई वहाँ आये तो वह उसके साथ क्या करेगा। उसके पति ने जवाब दिया कि अगर उसके दोनों बड़े भाइयों में से कोई एक आया तो वह उसे मार डालेगा। पर अगर उसका सबसे छोटा भाई आया तो वह उसे अपनी बाँहों में ले कर लोरी गा कर सुला देगा।

बहिन बोली — "मेरा वही भाई आया है।"

शेर बोला — "तो लाओ न उसे यहाँ लाओ ताकि मैं उसे देख सकूँ।"

और जब राजकुमार उसके सामने जा कर खड़ा हुआ तो शेर बहुत खुश हुआ और इतना खुश हुआ कि उसके दिमाग में ही नहीं आया कि वह क्या करे। फिर उसने उससे पूछा कि वह कहाँ जा रहा था।

भाई ने उसे वह सब कुछ बताया जो कुछ उसके साथ हुआ था और कहा कि वह तूफान राक्षस को ढूँढने जा रहा था। शेर बोला — "मैं उसे केवल नाम से जानता हूँ। पर मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि तुम उसके साथ झगड़ा मोल मत लो क्योंकि इससे तुम्हारा कुछ भला नहीं होगा।"

परन्तु राजकुमार को चैन कहाँ। वह वहाँ केवल एक रात रहा और अगले दिन सुबह ही वह अपने घोड़े पर सवार हुआ और अपने

रास्ते पर चलने के लिये निकल पड़ा। शेर के उसके साथ सही रास्ता दिखाने के लिये कुछ दूर तक गया फिर वे दोनों अलग हो गये।

राजकुमार और आगे चला जब तक वह एक दूसरे महल तक नहीं आ गया। यह दूसरा महल उसकी दूसरी बहिन का था। इस बहिन ने भी सड़क से एक आदमी आता हुआ देखा तो उसे पहचानने की कोशिश की। जैसे ही उसने उसे पहचाना तो वह उसे महल के अन्दर ले गयी।

समय बहुत जल्दी ही बीत गया कि जब बहिन को लगा कि शाम हो गयी और उसका पति चीता आने वाला होगा तो उसने अपने भाई से कहा — "मेरे पति आने वाले होंगे। वह तुम्हें कहीं कोई नुकसान न पहुॅचायें इसलिये मैं तुम्हें छिपा देती हूॅ।" कह कर उसने भी उसे छिपा दिया।

शाम को जब चीता घर आया तो उसने अगर मेरा कोई एक भाई वहॉ आये तो वह उसके साथ क्या करेगा। उसके पति ने जवाब दिया कि अगर उसके दोनों बड़े भाइयों में से कोई एक आया तो वह उसे मार डालेगा। पर अगर उसका सबसे छोटा भाई आया तो वह उसे अपनी बॉहों में ले कर लोरी गा कर सुला देगा।

सो राजकुमारी अपने भाई को उसकी छिपी हुई जगह से निकाल लायी। चीते ने उससे मिल कर बहुत खुशी दिखायी। भाई ने उसे भी अपना दुखड़ा सुनाया और उससे पूछा कि क्या वह तूफान राक्षस को जानता है।

चीता बोला कि वह जानता तो नहीं है बस केवल नाम सुना है। उसने भी राजकुमार से अपनी इस खतरनाक खोज पर न जाने की विनती की। पर अगले दिन सुबह को राजकुमार तैयार हो कर फिर अपने रास्ते चल दिया। चीता भी उसे सही रास्ता दिखाने के लिये उसके साथ कुछ दूर तक गया फिर वे दोनों अलग हो गये।

रेगिस्तान पर कर के राजकुमार को आगे कुछ काला काला सा दिखायी दिया। आश्चर्य में पड़ते हुए कि वह क्या हो सकता था राजकुमार आगे बढ़ा तो वहॉ भी उसे एक महल दिखायी दिया। वहॉ उसकी तीसरी बहिन रहती थी।

जब उसने भाई को आते देखा तो वह भी बहुत खुश हुई और उससे बहुत देर तक बातें करती रही। राजकुमार भी अपनी तीनों बहिनों से मिल कर बहुत खुश था पर उसके दिमाग में तो उसकी पत्नी घूम रही थी और उसको ले कर वह बहुत दुखी था।

शाम को बहिन ने कहा कि अब उसका पति आने वाला होगा तो कहीं वह उसे कुछ नुकसान न पहुॅचाये वह उसको छिपा देती है जब तक वह यह निश्चय न कर ले कि उसके आने से वह खुश हुआ कि नहीं। कह कर उसने उसे छिपा दिया।

शाम को अपने पंखों की तेज़ फड़फड़ाहट के साथ अंका ने घर में प्रवेश किया। इस बहिन ने भी अपने पति से पूछा कि अगर उसके भाइयों में से कोई भाई यहॉ आया तो वह उसके साथ कैसा व्यवहार करेगा।

अंका बोला — "अगर तुम्हारे दोनों बड़े भाई आये तो मैं उन्हें मार दूँगा पर अगर तीसरा आया तो मैं उसे अपने पंखों पर बिठाऊँगा और सुलाऊँगा।"

यह सुन कर राजकुमारी ने अपने भाई को बाहर बुला लिया। अंका ने पूछा — "मेरे बच्चे। तुम्हारा यहॉ आना कैसे हुआ। क्या तुम्हें रास्ते में डर नहीं लगा।"

राजकुमार ने अपना दुखड़ा रोया और अंका से तूफान राक्षस के पास ले जाने की विनती की। अंका बोला — "यह इतना आसान नहीं है। क्योंकि अगर तुम उससे लड़ोगे तो उससे तुम्हें इतना कम फायदा होगा कि यही अच्छा होगा कि तुम हमारे पास ही रहो और अपने उद्देश्य को भूल जाओ।"

राजकुमार बोला — "नहीं। ऐसा नहीं हो सकता। या तो मैं अपनी पत्नी को छुड़ा कर लाऊँगा या फिर अपनी जान दे दूँगा।"

यह देख कर कि राजकुमार को उसके उद्देश्य से डिगाना असम्भव है तो अंका ने राजकुमार को तूफान राक्षस के महल तक पहुँचने का रास्ता बताया। उसने कहा कि अभी वह सो रहा होगा यही सबसे अच्छा मौका है कि तुम अपनी पत्नी को ले आओ।

लेकिन ध्यान रखना अगर वह जाग जाये और तुम्हें देख ले तो समझो सब कुछ खत्म। तुम उसे देख नहीं सकते क्योंकि कोई भी ऑख उसे नहीं देख सकती। कोई तलवार उसके ऊपर असर नहीं कर सकती। सो बच कर रहना।

अगले दिन राजकुमार अपने रास्ते चल दिया और जल्दी ही तूफान राक्षस के महल के पास पहुॅच गया। इस महल में न तो दरवाजे थे और न कोई चिमनी। यह तूफान राक्षस का घर था। राजकुमार की पत्नी खिड़की के पास बैठी हुई थी। राजकुमार को देखते ही वह चिल्लाती हुई नीचे कूद गयी — "ओ मेरे राजकुमार।"

दोनों ने एक दूसरे को गले लगा लिया। राजकुमार की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था और राजकुमारी रोये जा रही थी। उसके ऑसू तभी रुके जब उसे निर्दयी देव की याद आयी।

राजकुमारी बोली — "वह तीन दिन पहले सोया था। हमको यहॉ से जितनी जल्दी हो सके भाग जाना चाहिये इससे पहले कि उसकी नींद को **40** दिन पूरे हों।"

वह भी एक घोड़े पर चढ़ गयी और दोनों वहॉ से तेज़ी से भाग निकले। अभी वे लोगा बहुत दूर नहीं गये थे कि राक्षस की नींद के **40** दिन पूरे हो गये और तूफान राक्षस जाग गया। वह तुरन्त ही राजकुमारी के कमरे में गया ताकि एक पल के लिये वह उसका चेहरा देख सके।

उसने जा कर दरवाजा खटखटाया पर कोई जवाब न पा कर उसे संशय हो गया कि कुछ बुरा हो गया है। उसने जबरदस्ती दरवाजा खोल दिया तो देखा कि राजकुमारी तो वहॉ थी नहीं।

वह बोला — "सो राजकुमार मुहम्मद। तुम यहॉ आये और राजकुमारी को ले गये। पर थोड़ा रुको। मैं तुम दोनों को पकड़ लेता हूँ।"

यह कह कर वह शान्ति से बैठ गया कौफी पी अपना सिगार पिया और फिर जल्दी से उनके पीछे भाग लिया। राजकुमार और राजकुमारी बिना आराम किये अपना अपना घोड़ा हॉके जा रहे थे।

पर बीच में ही राजकुमारी ने तूफान राक्षस की भेजी हुई तेज़ हवा को महसूस किया। वह बोली — "मेरे राजकुमार। तूफान राक्षस तो बस हमारे पीछे ही है।"

वह अदृश्य राक्षस उन दोनों पर गिर पड़ा। उसने राजकुमार को पकड़ लिया उसकी बॉहें और टॉगें तोड़ डालीं उसका सिर कुचल कर उसकी हड्डियॉ तोड़ डालीं। उसने उसकी कोई भी चीज़ पूरी नहीं छोड़ी।

राजकुमारी ने रोते हुए तूफान राक्षस से कहा — "अब तुमने उसकी हड्डियॉ तक तो तोड़ दी हैं तो कम से कम मुझे उसकी हड्डियॉ एक थैले में तो भर लेने दो। कम से कम मैं किसी को ढूँढ कर उससे इसकी हड्डियॉ तो दफ़न करवा दूँगी।" राक्षस को इसमें कोई ऐतराज नहीं लगा सो उसने उसे ऐसा करने दिया।

तो राजकुमारी ने राजकुमार की हड्डियॉ एक थैले में रख लीं। फिर उसने राजकुमार के घोड़े को उसकी ऑखों पर चूमा उसकी पीठ

पर वह थैला बॉधा और उसके कान में फुसफुसा कर कहा — "इस थैले को इसकी जगह ले जाओ।"

राजकुमार का घोड़ा चला गया और राक्षस राजकुमारी को ले कर अपने महल लौट आया पर उसकी सुन्दरता की ताकत इतनी थी कि राक्षस उसके हाथों में अपने आपको बन्दी समझ रहा था। राजकुमारी ने राक्षस को अपने सामने आने से मना कर दिया और उससे कहा कि वह उससे दरवाजे पर रह कर ही बात करे।

इस बीच घोड़ा राजकुमार की हड्डियॉ लिये हुए कुलॉचें भरता हुआ राजकुमार की तीसरी बहिन के महल पहुॅच गया। वहॉ पहुॅच कर वह इतनी ज़ोर से हिनहिनाया कि बहिन को यह देखने के लिये बाहर आना ही पड़ा कि देखूॅ तो बाहर क्या हो गया।

घोड़े और उसके ऊपर रखा हड्डियों का थैला रखा देख कर तो वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी और बड़ी ज़ोर से नीचे गिर पड़ी जैसे कि वह खुद अपनी ही हड्डियॉ तोड़ लेगी। उससे अपने पति अंका का बड़ी मुश्किल से इन्तजार हो पा रहा था।

शाम को बहुत ज़ोर से पंख फड़फड़ाते हुए चिड़ियों का राजा अंका घर आया और जब उसने बेचारे राजकुमार की टूटी हुई हड्डियॉ देखीं तो उसने दुनियॉ की सारी चिड़ियों को बुलाया और उनसे पूछा — "तुममें से कौन ईडन के बागीचे में जा चुका है।"

एक चिड़िया बोली — "एक बूढ़ा उल्लू वहॉ जा चुका है पर अब वह इतना बूढ़ा हो चुका है कि अब तो वह हिल भी नहीं सकता।"

तब अंका ने एक और चिड़िया को उल्लू को बुलाने भेजा सो वह चिड़िया उल्लू को ले कर वहॉ आ गयी। चिड़िया के बादशाह ने पूछा — "बाबा क्या आप कभी ईडन के बाग में गये हैं?"

बूढ़ा उल्लू बोला — "हॉ बेटा गया तो था पर यह बहुत पुरानी बात है। उस समय में **12** साल से भी छोटा था। तबसे फिर मैं दोबारा नहीं गया।"

अंका बोला — "क्योंकि आप वहॉ एक बार जा चुके हैं तो फिर अब आप एक बार वहॉ और जाइये और मुझे वहॉ का थोड़ा सा पानी ला कर दीजिये।"

उल्लू ने बहुत मना किया कि वह वहॉ नहीं जा सकता था क्योंकि वहॉ का रास्ता बहुत लम्बा था और उसमें अब इतनी ताकत नहीं रह गयी थी कि वह वहॉ तक जा सके पर सब बेकार। बादशाह ने उसे एक दूसरी चिड़िया की पीठ पर बिठा दिया और इस तरीके से उसे ईडन के बागीचे से पानी लाने के लिये भेज दिया गया।

वे दोनों ईडन के बागीचे चले गये और वहॉ से पानी ले कर लौट आये। अंका ने राजकुमार की हड्डियों को उनकी जगह पर रखा और उन पर स्वर्ग से लाया पानी छिड़क दिया।

राजकुमार जॅभाइयॉ लेने लगा जैसे कि वह किसी लम्बी नींद से उठ कर जाग रहा हो। उसने चारों तरफ देखा और फिर अंका से पूछा कि वह कहॉ है और उसकी पत्नी कहॉ है।

अंका बोला — "क्या मैंने तुमसे कहा नहीं था कि तूफान राक्षस तुम्हें पकड़ ही लेगा। उसने तुम्हारी हड्डियॉ तोड़ दी थीं। हमें वे एक थैले में बन्द हुई मिली थीं। अब तुम उसे छोड़ दो नहीं तो अगली बार वह तुम्हारी हड्डियॉ भी नहीं छोड़ेगा।"

लेकिन राजकुमार तो अपना उद्देश्य छोड़ने वाला नहीं था और एक बार वह फिर अपनी पत्नी को ढूॅढने चल दिया।

अबकी बार अंका ने उसे सलाह दी — "अगर तुमको उसे किसी भी कीमत पर प्राप्त करना ही है तो पहले अपनी पत्नी से जा कर कहो कि वह उस राक्षस से किसी तरह यह मालूम करे कि उसके मरने का राज़ क्या है तभी वह मर सकता है।"

राजकुमार एक बार फिर से अपने घोड़े पर सवार हो कर तूफान राक्षस के महल चल दिया। और अब क्योंकि वह सोया हुआ था तो राजकुमार आसानी से अपनी पत्नी से बात कर सकता था।

जब राजकुमार ने उससे राक्षस के तलिस्मान के बारे में बात की तो राजकुमारी ने खुशी से वह तलिस्मान पता करने का वायदा किया। उसने कहा कि अगर कोई दूसरा उपाय काम नहीं किया तो वह उसकी चापलूसी कर के उसका फायदा उठायेगी। राजकुमार पास के एक पहाड़ में छिप कर परिणाम का इन्तजार करने लगा।

राक्षस जब 40 दिन बाद सो कर उठा तो वह फिर से राजकुमारी के कमरे में गया और जा कर उसका दरवाजा खटखटाया तो राजकुमारी ने अन्दर से उसे बनावटी गुस्से से जवाब दिया — "जाओ मेरी नजरों से दूर हो जाओ। तुम 40 दिन तक तो सोते हो जबकि मैं यहॉ अकेली बैठी रहती हूॅ। मैं अपनी ज़िन्दगी से थक गयी हूॅ।"

राक्षस तो यह सुन कर बहुत खुश हुआ कि कम से कम राजकुमारी उससे बोली तो सही। उसने उससे पूछा कि वह उसकी उदासी दूर करने के लिये क्या कर सकता है।

राजकुमारी ने फिर बनावटी गुस्से से कहा — "तुम मुझे क्या दोगे। तुम तो अपने ही में लगे रहते हो। अगर तुम्हारे पास कोई तलिस्मान हो तो मुझे वही दे दो मैं उसी से खुश हो लूॅगी।"

देव बोला — "बात यह है कि मेरा तलिस्मान एक दूर देश में है और वहॉ तक जाना बहुत मुश्किल है। अगर तुम्हारे मुहम्मद जैसा कोई दूसरा आदमी मिल जाये तो शायद वह सफल हो जाये।"

राजकुमारी को अब तलिस्मान में रुचि बढ़ने लगी थी सो उसने इसकी चापलूसी करनी शुरू की और अन्त में उसका राज़ जान ही लिया। राक्षस ने राजकुमारी से विनती की कि वह कुछ देर के लिये उसके पास बैठे।

राजकुमारी मान गयी और उसने राक्षस के तलिस्मान का पूरा इतिहास जान लिया।

देव बोला — "सातवें समुद्र की सतह पर एक बहुत बड़ा टापू है। इस टापू पर एक बैल चरता है। बैल के पेट में एक पिंजरा है। उस पिंजरे में एक सफेद फाख्ता है। वही सफेद फाख्ता मेरा तलिस्मान है।"

राजकुमारी ने पूछा — "पर इस टापू पर पहुॅचा कैसे जा सकता है?"

देव बोला — "इस रास्ते पर पन्ने के अंका के महल के सामने ही एक ऊॅचा पहाड़ है। इस पहाड़ की चोटी पर पानी का एक स्रोत है। इस स्रोत से **40** समुद्री घोड़े[28] दिन में एक बार पानी पीने आते हैं। अगर कोई इतना होशियार हो कि जब वे पानी पी रहे हों तो उनमें से एक को कब्जे में कर ले तो उस पर चढ़ कर वह जहॉ चाहे जा सकता है।"

राजकुमारी ने पूछा — "इस तलिस्मान का मेरे लिये क्या महत्व है। अगर मैं उसके पास एक बार में न पहुॅच पाऊॅ तो।"

उसने देव को अपने कमरे में से बाहर निकाल दिया और यह खबर अपने पति को दी। राजकुमार ने तुरन्त ही अपना घोड़ा लिया और अपनी सबसे छोटी बहिन के महल की ओर चल दिया और अंका को सारा हाल बताया।

अगले दिन अंका ने पॉच चिड़ियों को बुलाया और उनसे कहा कि वह राजकुमार को पहाड़ की चोटी पर स्रोत के पास ले जायें

[28] Translated for "Sea Horses" – a kind of fish

फिर वहॉ तब तक इन्तजार करें जब तक वहॉ समुद्री घोड़े न आ जायें। जब वे आ जायें और वे पानी पी रहे हों तब इससे पहले कि वे पानी में से अपना सिर बाहर निकालें उनमें से एक को पकड़ लें और उस पर राजकुमार को बिठा दें।"

अंका की जनता ने राजकुमार को उठाया और पहाड़ की चोटी पर ले गये। जैसे ही समुद्री घोड़े वहॉ आये और वे वहॉ पानी पीने लगे चिड़ियों ने उनमें से एक को पकड़ा और राजकुमार को उस पर बिठा दिया।

जैसे ही राजकुमार समुद्री घोड़े की पीठ पर बैठा तो वह बोला — "मालिक हुक्म करें।"

मुहम्मद बोला — "सातवें समुद्र में एक टापू है तुम मुझे वहॉ पहुँचा दो।"

समुद्री घोड़े ने कहा "अपनी ऑखें बन्द करो।" तो उसने अपनी आखें बन्द कर लीं। जब समुद्री घोड़े ने कहा "अपनी ऑखें खोलो।" तो राजकुमार ने अपनी ऑखें खोलीं तो देखा कि वह तो टापू पर था।

वह समुद्री घोड़े पर से उतरा उसने उस पर से लगाम उतारी वह चरते हुए बैल की खोज में चल दिया। जब वह उसे खोज रहा था तो उसे एक ज्यू मिला तो उसने उससे पूछा कि वह वहॉ कैसे आया। राजकुमार बोला कि उसका जहाज़ टूट गया था। जहाज़ तो

समुद्र में डूब गया और वह बड़ी मुश्किल से तैरते हुए इस टापू पर आ गया।

ज्यू बोला — "मैं तूफान राक्षस का सेवक हूॅ। उसका एक बैल यहॉ है जिसकी मैं दिन रात रक्षा करता हूॅ। क्या तुम मेरी सेवा करना चाहोगे? बस तुमको यही करना है कि यह बड़ा गड्ढा उसके पीने के लिये पानी से भरना है।"

राजकुमार ने इस मौके का लाभ उठाना चाहा और बैल को देखना चाहा तो ज्यू उसको बैल के रहने की जगह ले गया। जैसे ही मुहम्मद अकेला रह गया तो उसने उस बैल का पेट चीर दिया। उसने उसमें रखे हुए सुनहरे पिंजरे को निकाला और टापू के किनारे की ओर भाग गया।

वहॉ पहुॅच कर उसने अपनी जेब से लगाम निकाली और उसे पानी की लहरों पर मारा तो एकदम से ही उसका समुद्री घोड़ा बाहर आ गया और उसे तूफान राक्षस के महल ले गया।

राजकुमार ने अपनी पत्नी को अपने पास बिठाया और समुद्री घोड़े से कहा कि वह उसे पन्ने वाले अंका के महल के पास वाले पहाड़ तक ले चले।

वे लोग अंका के महल के पास पहुॅचे ही थे कि राक्षस की ऑख खुल गयी। यह देख कर कि राजकुमारी वहॉ से फिर से गायब हो गयी है तो वह भी जल्दी से उसके पीछे पीछे भागा।

सुलतान की बेटी ने तूफान राक्षस का हवा का झोंका महसूस किया तो उसे लगा कि तूफान राक्षस बस उसके पीछे ही है। यह संकट देख कर वह जादू का समुद्री घोड़ा बोला कि वह पिंजरे में से सफेद फाख्ता निकाल कर उसका सिर काट दे।

यह करने के लिये बस उनके पास केवल समुचित समय ही था। अगर उसे एक पल भी ज़्यादा लगता था तब तो वे दोनों गये थे। उन्होंने जैसे ही वैसा किया तो हवा आनी बन्द हो गयी क्योंकि वह तूफान राक्षस मर गया था।

खुशी में भर कर उन्होंने अंका के महल में प्रवेश किया। वहॉ से उन्होंने उस जादू के घोड़े को आराम करने के लिये छोड़ दिया। फिर वह अपनी दूसरी बहिन के पास गये और तीसरे दिन अपनी तीसरी सबसे बड़ी बहिन के पास गये।

राजकुमार को एक खुशी की बात पता चली कि उसकी सबसे बड़ी बहिन का शेर पति तो शेरों का राजा था। और उसकी दूसरी बहिन का चीता पति चीतों का राजा था।

अन्त में वह राजकुमारी के अपने महल आया जहॉ उसने अपनी शादी फिर से मनायी – **40** दिन और **40** रात तक। इसके बाद वे वहॉ से राजकुमार के राज्य गये। वहॉ उसने ड्रैगन के नाक और कान दिखाये और क्योंकि उसने अपने पिता की इच्छा पूरी की थी उसे बादशाह बना दिया गया। वहॉ उसने अपनी पत्नी के साथ अपने जविन के अन्तिम दिनों तक खुशी से राज किया।

15 हॅसता हुआ सेब और रोता हुआ सेब[29]

यह बहुत समय पहले की बात है कि एक बादशाह राज करता था उसके तीन बेटे थे। एक दिन उसका सबसे छोटा बेटा एक दूकान पर बैठा हुआ था कि उसके पास ही एक स्रोत था जहॉ एक स्त्री पानी भरने आयी।

लड़के ने एक पत्थर उठाया और उसके बर्तन को निशाना बॉध कर मार दिया। उसका बर्तन टूट गया। उसने कुछ नहीं कहा और वहॉ से वापस चली गयी। पर फिर जल्दी ही दूसरा बर्तन ले कर लौटी। लड़के ने फिर से एक पत्थर उठाया और उसके बर्तन को निशाना लगा कर वह पत्थर फेंक दिया। उसका बर्तन फिर से टूट गया।

स्त्री फिर से चली गयी और तीसरी बार एक और बर्तन ले कर लौटी। लड़के को अब आनन्द आ रहा था सो उसने उसका तीसरा बर्तन भी तोड़ दिया। अब वह बोली — "अल्लाह करे कि तुम हॅसते हुए और रोते हुए सेब के प्यार में पड़ जाओ।" कह कर वह वहॉ से गायब हो गयी।

कुछ दिनों के बाद उस स्त्री के शब्दों ने अपना असर दिखाना शुरू किया तो राजकुमार तो सच में ही हॅसते और रोते हुए सेब के प्रेम में पड़ गया था।

---

[29] The Laughing Apple and the Weeping Apple. Tale no 15

अब वह दिन पर दिन दुबला होता जा रहा था। जैसे ही उसके पिता ने सुना कि वह बीमार है तो उसने बहुत सारे ओझा और डाक्टर बुलाये पर यह रोग उनके वश में नहीं था।

एक दिन एक डाक्टर ने बादशाह से कहा कि राजकुमार को प्रेम की बीमारी हो गयी है। यह सुन कर बादशाह अपने बेटे के पास गया और उससे ही पूछा कि "बेटे तुम्हें क्या बीमारी है।" तब उसने बताया कि वह हॅसते हुए और रोते हुए सेब के प्रेम में पड़ गया है।

उसके पिता ने पूछा कि अब क्या किया जाये। इन दोनों सेबों को हम कहॉ ढूँढें। राजकुमार बोला — "अगर आप इजाज़त दें तो मैं खुद उन्हें जा कर ढूँढू।"

बादशाह ने उसे रोकने की बहुत कोशिश की पर राजकुमार नहीं रुक पा रहा था। उसके दोनों बड़े भाई उसके साथ जाने के लिये तैयार थे सो बादशाह ने उसे जाने की इजाज़त दे दी। एक दिन तीनों यात्रा पर निकल पड़े।

पहाड़ों के ऊपर, घाटियों में मैदानों में वे घूमते फिरे। एक दिन वे एक स्रोत के पास आये जहॉ एक चौराहा था। इस चौराहे पर यात्रियों के लिये एक नोटिस लगा हुआ था कि "जो पहली सड़क लेगा वह वापस लौटेगा।" "जो दूसरी सड़क लेगा वह लौट भी सकता है नहीं भी लौट सकता।" और "जो तीसरी सड़क लेगा वह कभी नहीं लौटेगा।"

बड़े भाई ने कहा कि वह पहली सड़क पर जायेगा। दूसरे भाई ने कहा कि वह दूसरी सड़क पर जायेगा। तीसरे भाई ने तीसरी सड़क ली। जब वे अलग होने लगे तो छोटे भाई ने कहा — "यह कैसे पता चलेगा कि हम में से कौन पहले लौट आया है। ऐसा करते हैं कि हम अपनी अपनी अँगूठी इस पत्थर के नीचे रख देते हैं फिर हम जैसे जैसे लौटते आयेंगे अपनी अपनी अँगूठी उठाते जायेंगे।"

तीनों इस बात पर राजी हो गये। उन्होंने अपनी अपनी अँगूठियॉ पत्थर के नीचे रखीं और अपने अपने रास्ते चले गये।

बड़ा भाई चलते चलते एक ऐसी जगह पहुँच गया जहॉ तैरने वाला नहानघर था। वह वहॉ पर एक नौकर की तरह से काम करने लगा। बीच वाला भाई चलते चलते एक कौफी की दूकान पर आ गया तो वह वहॉ नौकरी करने लगा।

अब हम देखते कि हमारा छोटा राजकुमार क्या कर रहा था। एक लम्बी यात्रा के बाद राजकुमार एक स्रोत के पास आ गया जहॉ एक बुढ़िया पानी भर रही थी।

उसने उससे कहा — "मॉ जी। क्या आप मुझे आज की रात अपने घर में रुकने की जगह देंगी?"

बुढ़िया बोली — "बेटे। मेरे पास तो बस एक छोटी सी झोंपड़ी है। वह भी इतनी छोटी है कि जब मैं उसमें लेटती हूँ तो मेरे पैर बाहर रहते हैं। तो मैं तुम्हें उसमें कहॉ रखूँगी।"

तब उसने बुढ़िया को एक मुट्ठी सोना दिखाया और उससे विनती की कि वह उसके कहीं और जगह ढूँढ दे। जैसे ही उसने सोना देखा तो वह बोली — "आओ बेटा आओ। मेरे पास एक बहुत बड़ा मकान है। अगर मैं तुमको उसमें जगह नहीं दूँगी तो फिर किसको दूँगी।"

सो वे दोनों चल दिये। जब वे खाना खाने बैठे तो राजकुमार ने पूछा — "मॉ जी। मैं हॅसते हुए और रोते हुए सेब से कहॉ मिल सकता हूँ।"

यह सुनते ही बुढ़िया ने उसके मुँह पर हाथ रख दिया — "चुप। ये नाम यहॉ लेना मना है।"

राजकुमार ने एक मुट्ठी सोना बुढ़िया को और दिया तो वह बोली — "सुबह को जल्दी उठ जाना और वह जो सामने पहाड़ दिखायी दे रहा है उसके उस पार तुमको एक गड़रिया मिलेगा वह महल का गड़रिया है – उसी महल का जिसमें तुम्हें हॅसते हुए और रोते हुए सेब मिलेंगे।

अगर तुम उसे खुश कर सके तो तुम उस महल में जा सकोगे। पर इतना ध्यान रखना कि जैसे ही तुम उन्हें उठा लो तुम उनको ले कर तुरन्त ही मेरे पास चले आना।"

सो अगली सुबह वह उस पहाड़ के पार चला गया। वहॉ उसे बुढ़िया के बताये अनुसार गड़रिया मिल गया। वह वहॉ अपनी भेड़ें चरा रहा था।

उसने गड़रिये को बहुत ही विनम्रता से सलाम किया। गड़रिये ने भी उसके सलाम का जवाब विनम्रता से ही दिया। फिर वह उससे इधर उधर की बात करने लगा। बातों ही बातों में उसने हॅसते हुए और रोते हुए सेब का जिक्र किया।

जैसे ही ये शब्द उसके मुॅह से निकले कि गड़रिये ने उसको इतनी ज़ोर से चॉटा मारा कि वह बेचारा नीचे गिर पड़ा। राजकुमार ने पूछा — "गड़रिये। तुमने मुझे यह चॉटा क्यों मारा?"

गड़रिया बोला —"चुप। मैं तुम्हें अभी चुप कर दूॅगा।"

पर राजकुमार ने उसे एक मुट्ठी सोना दिया और उससे पहले से भी अधिक दीनता से विनती की। इस तरह गड़रिये को सोना देने से गड़रिया बोला — "मैं अभी एक भेड़ मारता हूॅ जिससे मैं एक बड़ा सा थैला बनाऊॅगा जिसमें मैं तुम्हें रख दूॅगा। जब शाम होगी और मैं ये भेड़ें घर महल ले कर जाऊॅगा तब तुम भी भेड़ों के साथ महल में चले जाना।

जब रात हो जाये और सब लोग सो जायें तुम दूसरी मंजिल पर जाना तो अपने दॉये हाथ के कमरे में चले जाना। वहॉ सुलतान की बैटी सो रही होगी। उसके पास ही एक आलमारी में सेब रखे होंगे। अगर तुम उन्हें वहॉ से उठा सकते हो तो ठीक है नहीं तो सब खत्म।"

सो गड़रिये ने एक भेड़ मारी उसकी खाल में राजकुमार को छिपाया और उसके साथ सब भेड़ों को हॉक कर ले चला।

जब रात हुई और सब लोग सो गये तब वह भेड़ की खाल में से निकला और चुपचाप दूसरी मंजिल पर चल दिया। राजकुमार को बिना किसी कठिनाई के राजकुमारी का कमरा मिल गया और वह उसके अन्दर चला गया।

उस कमरे में एक बिस्तर पर पूरे चॉद की तरह से सुन्दर मुखड़े वाली एक लड़की सो रही थी। उसकी भौंहें काली थीं ऑखें नीली थीं बाल सुनहरी थे। निश्चित रूप से उसकी सुन्दरता की सानी का और कोई भी नहीं था। वह इतनी सुन्दर थी कि राजकुमार कुछ पल के लिये तो अपनी सुधबुध ही खो बैठा।

जब वह राजकुमारी की तरफ देख रहा था तो उसके पास की आलमारी में रखे एक सेब ने हॅसना शुरू कर दिया साथ ही दूसरे सेब ने बहुत ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया। यह देख कर राजकुमार वहॉ से जल्दी से भाग लिया अपनी भेड़ की खाल में जा कर छिप गया।

यह शोर सुन कर राजकुमारी की ऑख खुल गयी। वह उठी और उसने चारों तरफ देखा तो उसे कोई दिखायी नहीं दिया। उसने गुस्से में दोनों सेबों की बेवकूफी पर उनको बहुत डॉटा और फिर लेट गयी।

कुछ देर बाद वह फिर सो गयी। कुछ देर के बाद राजकुमार फिर खाल में से निकला और फिर ऊपर गया और फिर सेबों की तरफ बढ़ा तो वे फिर हॅसने रोने लगे।

राजकुमार फिर वहॉ से भाग गया। सेबों की आवाज सुन कर राजकुमारी फिर जाग गयी और किसी को आसपास न देख कर फिर सेबों को डॉटा — "ओ शैतानों। यह तुमने मुझे दूसरी बार जगा कर परेशान किया है। अबकी बार तुमने मुझे बेकार में जगाया तो मैं तुम्हें काट कर फेंक दूँगी।" और डॉट कर फिर सो गयी।

कुछ देर बाद राजकुमार तीसरी बार उठा और सेब लेने पहुँच गया। सेब उसे देखते ही फिर हॅसने और रोने लगे। यह देख कर वह फिर नीचे भाग गया।

सेबों की आवाज सुन कर राजकुमारी फिर जाग गयी। उसने सेबों को फिर डॉटा — "क्या तुम लोग पागल हो गये हो जो मुझे तुमने तीसरी बार जगा दिया और वह भी बिना किसी मतलब के।" उसने दोनों की पिटाई की और फिर लेट कर सो गयी।

कुछ देर बाद राजकुमार चौथी बार ऊपर आया वह आलमारी की तरफ गया सेब उठाये और नीचे चला गया। इस बार सेबों ने कोई शोर नहीं मचाया क्योंकि वे राजकुमारी के पिछले व्यवहार से बहुत गुस्सा थे। तुरन्त ही वह अपनी भेड़ की खाल के पास आ गया।

सुबह हुई तो गड़रिया अपनी भेड़ें चराने के लिये उन्हें ले जाने के लिये आया तो राजकुमार भेड़ की खाल में से निकल आया और उसे एक मुट्ठी सोना और दिया और बोला "यह सब अल्लाह की मर्जी थी।" और बुढ़िया के घर चला गया।

जब बुढ़िया ने राजकुमार को आते देखा तो उसने एक बड़े से बेसिन में पानी भरा एक मुर्गा मारा और उसका खून उस बेसिन में इकट्ठा किया। इसके बाद उसने उसमें लकड़ी का एक तख्ता रखा और राजकुमार को उस पर बिठा दिया।

अब हम महल की और चलते हैं। सुबह को जब राजकुमारी उठी तो उसने देखा कि आलमारी में तो सेब नहीं थे। "ओह कहॉ गये मेरे सेब?"

उसने उन्हें सब जगह ढूँढा पर वे उसे कहीं नहीं मिले। "ओह यह मेरी बुरी किस्मत कि मेरे सेब चोरी हो गये। उन्होंने मुझे तीन बार जगाया पर मुझे समझ में ही नहीं आया। जरूर यहॉ कोई चोर रहा होगा।"

राजकुमारी बहुत देर तक उनके लिये रोती रही "मेरे सेब। मेरे सेब।" यह आवाज बादशाह तक पहुँची तो बादशाह ने शहर के दरवाजे तुरन्त ही बन्द करने का आदेश दिया और पूरा शहर छान मारने के लिये कहा पर सेब कहीं नहीं मिले।

तब बादशाह ने ज्योतिषियों को बुलवाया जिन्होंने सितारे पढ़ कर यह बताया कि सेब चुराने वाला पहाड़ के पास खून के समुद्र में एक जहाज़ में है। वे बोले — "ओह बादशाह। लगता है कि वह बहुत दूर है क्योंकि हम यह नहीं जान पा रहे हैं कि वह खून का समुद्र कहॉ है।"

बादशाह को लगा कि यह चोर पकड़ में नहीं आ सकता तो उसने शहर के दरवाजे फिर से खोलने का आदेश दे दिया। राजकुमार ने बुढ़िया को कुछ और सोने की मुहरें दीं और उसके लिये अल्लाह से दुआ मॉगते हुए वहॉ से किसी और काम के लिये चल दिया।

कुछ दिन बाद वह उसी स्रोत पर आ गया जहॉ से वह अपने भाइयों से बिछड़ा था। वहॉ आ कर उसने वह पत्थर उठाया जिसके नीचे उन तीनों भाइयों ने अपनी अपनी अॅगूठियॉ रखी थीं। उसने देखा कि अभी तक उसके दोनों भाई नहीं लौटे हैं।

उसने अपनी अॅगूठी अपनी उॅगली में पहनी और वह उस सड़क पर चल दिया जिस पर उसका दूसरा भाई गया था।

वह घूमता रहा घूमता रहा पहाड़ के ऊपर, घाटियों में, मैदानों में, नदियों से पानी पीते हुए, रेगिस्तान में आराम करते हुए, बुलबुलों का संगीत सुनते हूए जब तक कि वह एक शहर में आ पहुचा। आ कर उसने किसी कौफ़ी की दूकान के बारे में पूछा।

इत्तफाक से वह उसी कौफ़ी की दूकान पर आ गया जिस पर उसका दूसरा भाई काम कर रहा था पर दूसरे बाई ने उसे पहचाना नहीं जबकि कौफ़ी पीते हुए और अपनी चिलम पीते हुए उसने अपने दूसरे भाई को पहचान लिया।

वह अपने दूसरे भाई को एक ओर ले गया और उससे कई सवाल पूछे जिससे वह भी अपने छोटे भाई को पहचान गया।

वे दोनों वहॉ से चल पड़े। कुछ समय बाद ही वे उसी स्रोत पर आ पहुँचे जहॉ वे बिछड़े थे। वहॉ से दूसरे भाई ने अपनी अँगूठी उठाई और फिर दोनों अपने बड़े भाई को देखने चल दिये। अन्त में उसे उन्होंने ढूँढ ही लिया। अब वे तीनों स्रोत के पास लौटे।

रास्ते में उन दोनों ने अपने छोटे भाई से पूछा कि क्या उसे अपने दोनों सेब मिल गये। छोटे भाई ने कहा "हॉ।" और दोनों सेब उन्हें दिखा दिये। उन्होंने भी जैसे ही उन्हें देखा तो वे भी उनको प्यार करने लगे।

उन्होंने अपने भाई से विनती की कि वह उन्हें उन सेबों को पकड़ने दे। राजकुमार ने उनकी बात मानी और वे सेब उनको दे दिये। जैसे ही वे जादू के फल उनके हाथ में आये तो दोनों बड़े भाइयों ने अपने छोटे भाई को मारने की और वे सेब आपस में बॉटने की सोची।

वे तीनों एक कौफ़ी की दूकान में गये और वहॉ के बागीचे में बैठ गये। कौफ़ी का और्डर दे कर कौफ़ी की दूकान वाले से एक चटाई मॉगी। बागीचे में एक कुँआ था। वह चटाई ला कर उन्होंने उस कुँए के ऊपर बिछा दी।

फिर उन्होंने छोटे भाई को उसके ऊपर बैठने के लिये कहा। छोटे भाई को कुछ पता नहीं था सो वह उसके ऊपर बैठ गया। बैठते ही वह उस कुँए में नीचे गिर पड़ा। उसके दोनों भाइयों ने यह

दिखाते हुए कि जैसे कुछ हुआ ही नहीं वहॉ खाया पिया आनन्द किया और वहॉ से चले गये।

जब वे घर आये तो उनके पिता ने पूछा कि उनका सबसे छोटा बेटा कहॉ है। दोनों भाइयों ने कहा कि वे हॅसता हुआ और रोता हुआ सेब ले आये हैं पर उनके भाई ने तो वह रास्ता चुना था जिससे गया हुआ आदमी कभी वापस नहीं आता था। इसलिये उससे अलग होने के बाद उन्होंने उसे नहीं देखा।

यह सुन कर बादशाह बेचारा बहुत रोया पर उसको विश्वास था कि अगर उसका बेटा ज़िन्दा होगा तो वह अवश्य ही और जल्दी ही वापस आयेगा।

इधर जब राजकुमार कुॅए में गिर पड़ा, इत्तफाक से वह कुॅआ सूखा था, वह मरा नहीं बस केवल भौंचक्का रह गया और इस वजह से थोड़ी देर के लिये बेहोश हो गया।

जब वह होश में आया तो इस आशा में कई बार बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाया कि शायद कोई उसकी सुन लेगा। इत्तफाक से कौफ़ी की दूकान का मालिक उस समय अपने बागीचे में घूम रहा था। उसकी चिल्लाहट सुन कर उसने उसे कुॅए में से बाहर निकाला।

बड़ी नम्रता से उसे धन्यवाद दे कर वह अपने रास्ते चला गया पर वह अपने पिता के घर नहीं गया बल्कि उसने एक टीन का काम करने वाले के यहॉ नौकरी कर ली।

एक दिन उस बादशाह की राजकुमारी ने जिसके सेब चुरा लिये गये थे 1000 मोतियों की माला बनाने का आदेश दिया। और यह काम उसने अपने नौकरों के हाथों कई देशों में भेजा। इस माला की विशेषता यह थी कि जिसने भी सेब चुराये थे वह उन मोतियों को चुराने की पूरी घटना सुनाने लग जाता था।

आखिर वे नौकर उस देश में पहुॅचे जिसमें वे तीनों भाई रहते थे। जब छोटे राजकुमार ने यह सुना तो उसने अपने मालिक से कहा कि वह मोतियों को सुनायेगा। यह बात बादशाह के नौकरों को बतायी गयी तो वे माला ले कर आये और उसे बताने के लिये कहा। राजकुमार ने कहा वह यह करेगा पर केवल बादशाह की उपस्थिति में।

सो उसको उस बादशाह के सामने ले जाया गया जिसके सामने उसे सारी कहानी सुनानी थी। बादशाह उसका गवाह बनने पर राजी हो गये और माला राजकुमार के हाथों में दे दी गयी। राजकुमार ने कहानी सुनानी शुरू की।

उसने अपने सारे कारनामों के हाल बताये जो उसने सेब ढूॅढने के लिये किये थे। जब वह अपने भाइयों के बारे में बताने को था कि उन्होंने उसे किस तरह कुॅए में धकेल दिया था तब तक माला खत्म हो गयी थी।

पर बादशाह ने इतना सुन कर ही अपने बेटे को पहचान लिया। उसे गले लगाया उसे चूमा और खुशी के मारे रो पड़ा।

अजनबियों ने बादशाह से विनती की कि वह अपने छोटे बेटे को उनके साथ जाने दें। बादशाह ने हॉ कर दी पर केवल अपने दोनों बड़े नीच बेटों को सजा देने के बाद।

फिर वे सब अपनी लम्बी यात्रा पर चल दिये। कई दिनों तक यात्रा करने के बाद वे सब सेबों के देश में पहुॅच गये। वहॉ वे राजकुमार को बादशाह के पास ले गये। बादशाह ने जैसे ही राजकुमार को देखा तो उसका तो दिल ही उसके पास पहुॅच गया। बादशाह ने उससे कहा कि वह अपनी कहानी मोतियों को फिर से सुनाये।

राजकुमार ने एक बार फिर से अपना कारनामा कहा। जब राजकुमार ने सब कह लिया तब बादशाह ने अपनी बेटी की शादी उससे कर दी ताकि राजकुमार और राजकुमारी दोनों ही सेबों के साथ खुश रहें जिन्हें वे दोनों प्यार करते थे।

बड़ी खुशी के साथ राजकुमार ने अपनी स्वीकृति दे दी और उनकी शादी हो गयी। उनकी शादी का उत्सव **40** दिन और **40** रात तक मनाया गया।

क्योंकि अब उनको खुशी मिल गयी थी तो अब हम भी अपना दीवान ढूॅढते हैं।

16 कौआ परी[30]

एक बार की बात है कि एक आदमी था जिसके एक बेटा था। आदमी चिड़ियें पकड़ने के लिये अपना सारा दिन जंगल में बिताता था और फिर उनको ला कर बेच देता था।

एक दिन पिता की मृत्यु हो गयी और लड़का अकेला रह गया। उसको बेचारे को तो तो यही पता नहीं था कि उसका पिता करता क्या था जब तक कि अपने पिता की छोड़ी हुई चीज़ों में से उसे चिड़िया पकड़ने का एक जाल नहीं मिल गया।

उसने उसे लिया और वह भी जंगल चला गया। वहॉ उसने उसे एक पेड़ पर लगा दिया। जल्दी ही उधर से एक कौआ उड़ा और पेड़ पर बैठ गया। पेड़ पर बैठते ही वह जाल में फॅस गया।

लड़का उसको जाल में फॅसा देख कर बहुत खुश हुआ। वह पेड़ पर चढ़ गया और उसे पकड़ने ही वाला था कि उसने लड़के से विनती की कि वह उसे छोड़ दे। बदले में वह उसे एक बहुत ही कीमती चिड़िया देगा। कौए ने उससे इतनी विनम्रता से यह विनती की कि उसने उसे छोड़ दिया।

लड़के ने फिर से जाल बिछाया और वहीं पेड़ की जड़ के पास ही बैठ गया। बहुत जल्दी ही एक और चिड़िया उड़ती हुई आयी और उसके जाल में फंस गयी।

---

[30] The Crowperi. Tale No 16

यह चिड़िया तो बहुत सुन्दर थी। लड़के ने अपनी ज़िन्दगी में इतनी सुन्दर चिड़िया पहले कभी नहीं देखी थी। उसको चारों तरफ से देख कर उसकी तारीफ करते हुए लड़के ने उसे सहलाया और उसे घर ले जाने ही वाला था कि कौआ उड़ता हुआ आया और उससे बोला — "इस चिड़िया को ले जा कर बादशाह को दे दो वह इसे खरीद लेगा।"

सो लड़के ने चिड़िया को एक पिंजरे में रखा और उसे महल ले गया। बादशाह ने जब उस सुन्दर चिड़िया को देखा तो उसने उसे इतना सोना दे कर खरीद लिया जिसका उस लड़के को यह भी पता नहीं था कि वह उसका क्या करेगा।

बादशाह ने उसे एक सोने के पिंजरे में रख दिया और अब वह उसके साथ दिन रात खेलता रहता था। बादशाह का एक वज़ीर था जो उस लड़के की अच्छी किस्मत से जलता था। उसके दिमाग में कुछ ऐसा आया जिससे वह उससे उसका सारा सोना छीन सकता था।

एक दिन वह बादशाह के पास गया और उससे कहा — "सरकार यह चिड़िया एक हाथीदॉत के पिंजरे में कितनी अच्छी लगेगी।"

पर बादशाह ने जवाब दिया — "पर लाला। इतना हाथीदॉत हमें मिलेगा कहॉ से।"

चालाक लाला बोला — "जिसने आपको यह चिड़िया ला कर दी वही आपको हाथीदॉत भी ला कर देगा।"

बादशाह ने उस लड़के को बुलाया और उससे इतना हाथदॉत लाने के लिये कहा जिससे वह उस चिड़िया के लिये हाथीदॉत का घर बनवा सकें। पर लड़के ने कहा कि "मैं इतना सारा हाथीदॉत आपको कहॉ से ला कर दूॅगा।"

बादशाह बोला — "यह तुम जानो। मैं तुम्हें **40** दिन देता हूॅ जिनमें तुम्हें यह इकट्ठा कर के लाना है। अगर तब तक वह यहॉ नहीं आया तो मैं तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दूॅगा।"

परेशान हो कर लड़का बादशाह के सामने से चला आया। जब वह बादशाह के विचारों में फॅस हुआ था तो कौआ उसके सामने प्रगट हुआ और उससे उसके दुख का कारण पूछा। बहेलिये लड़के ने उसे अपना दुख बता दिया।

कौआ बोला — "तुम चिन्ता मत करो। तुम बादशाह के पास जाओ और उनसे **40** गाड़ी भर कर शराब मॉगो।"

लड़का महल गया और उसने बादशाह से **40** गाड़ी भर कर शराब मॉगी। जब वह उन **40** गाड़ियों को ले कर आ रहा था तो कौआ फिर आया और लड़के से बोला — "जंगल के पास **40** पानी पीने की जगहें बनी हुई हैं। तुम यह शराब ले कर वहॉ जाओ और इसे उनमें पलट दो। हाथी इसे पी कर बेहोश हो जायेंगे तब तुम उनके दॉत निकाल लेना और बादशाह को दे देना।"

लड़के ने वैसा ही किया। हाथियों के बेहोश जाने के बाद उनके दॉत निकाल कर उन 40 गाड़ियों डाल कर वह उन्हें बादशाह के पास ले गया। बादशाह तो उतने सारे हाथीदॉत देख कर बहुत खुश हो गया और उसने लड़के को बहुत इनाम दिया।

जल्दी ही चिड़िया का घर बनवा दिया गया और चिड़िया को उसमें रख दिया गया। चिड़िया अपने उस घर में खुशी से नाचने लगी पर वह गाती नहीं थी।

चालाक लाला फिर बोला — "अगर इसका मालिक यहॉ होता तो शायद इसकी गाने की इच्छा होती।"

बादशाह ने दुखी मन से जवाब दिया — "अल्लाह ही जानता है कि इसका मालिक कौन है और उसे कहॉ ढूँढा जा सकता है।"

लाला फिर बोला — "जो हाथी दॉत ले कर आया है वही यह भी जानता होगा कि इसका मालिक कौन है वही उसे ढूँढ कर लायेगा।"

सो बादशाह ने लड़के को फिर बुलाया और उससे चिड़िया के मालिक को ढूँढने के लिये कहा। लड़का बोला — "लेकिन सरकार यह मैं कैसे बता सकता हूँ कि इसका मालिक कौन है। मैंने तो इसे जंगल में पकड़ा था।"

बादशाह फिर वही बोला — "यह तुम जानो। मैं तुम्हें 40 दिन देता हूँ इन 40 दिनों के अन्दर अन्दर उसे ढूँढ कर लाओ नहीं तो मैं तुम्हें मरवा दूँगा।"

लड़का घर जा कर बहुत रोया। पर कौआ फिर वहॉ प्रगट हुआ और उसके रोने का कारण पूछा। लड़के बेचारे फिर उसे अपनी कहानी सुना दी।

कौआ बोला — "इतनी छोटी छोटी बातों पर रोते नहीं है। तुम तुरन्त ही बादशाह के पास जाओ और उनसे एक जहाज़ मॉगो जिसमें कम से कम 40 लड़किया आ सकें। जिसमें एक बागीचा हो और एक नहानघर हो।"

लड़का तुरन्त ही बादशाह के पास गया और उनसे समुद्री यात्रा के लिये जो कुछ भी उसे चाहिये था मॉगा। उसकी इच्छा के अनुसार एक जहाज़ बनवा दिया गया।

लड़का जहाज़ पर चढ़ गया और वह यह सोच ही रहा था कि वह बॉये हाथ को अपने जहाज़ को ले जाये या फिर दॉये हाथ को कि कौआ एक बार फिर उसके सामने प्रगट हुआ।

उसने कहा — "तुम इसे अपने दॉये हाथ की ओर ले जाओ और जब तक मत रुकना जब तक तुम्हारे सामने एक बड़ा सा पहाड़ न आ जाये।

उस पहाड़ की तलहटी में 40 परियॉ रहती हैं। जब वे तुम्हारा जहाज़ देखेंगी तो वे उसे देखना चाहेंगी। पर तुम उनमें से केवल उनकी रानी को ही अपने जहाज़ पर चढ़ाना क्योंकि वही उस छोटी चिड़िया की मालकिन है।

जब तुम उसे जहाज़ दिखा रहे हो तभी अपना जहाज़ चला देना और बीच में कहीं नहीं रुकना जब तक तुम घर न लौट आओ।"

सो लड़का अपना जहाज़ ले कर चल दिया और एक बड़े पहाड़ के पास आ गया। वहॉ उसने देखा कि 40 परियॉ समुद्र के किनारे टहल रही हैं। जैसे ही उन्होंने जहाज़ को देखा तो वे उसे अन्दर से देखने की विनती करने लगीं। रानी ने उससे विशेष विनती की तो लड़के ने केवल उसे ही जहाज़ पर आने दिया।

उसको लाने के लिये एक छोटी सी नाव किनारे पर भेज दी गयी और परियों की रानी बड़ी खुशी से उस पर चढ़ कर जहाज़ तक आयी। वहॉ से उसे बागीचे में ले जाया गया। नहानघर देख कर वह बोली "अब मैं यहॉ हूॅ तो मैं नहाना भी चाहूॅगी।"

कह कर वह नहानघर में अन्दर चली गयी। जब वह नहानघर के अन्दर थी तभी लड़के ने जहाज़ चला दिया। जब तक परी का नहाना खत्म हुआ तब तक तो जहाज़ समुद्र में दूर तक जा चुका था। अब वहॉ से धरती कहीं भी दिखायी नहीं दे रही थी। यह देख कर परी बहुत ज़ोर ज़ोर से रो पड़ी।

अब उसका क्या होगा? वह उसे कहॉ ले जा रहा था? लड़के ने उसे तसल्ली देने की बहुत कोशिश की कि वह अच्छे लोगों में जा रही थी वह एक महल में जा रही थी।

और फिर तब तक नहीं रुका जब तक वह घर नहीं आ गया। बादशाह को खबर दी गयी कि जहाज़ सुरक्षित वापस आ गया है।

परी को महल में ले जाया गया। जब वह चिड़िया के घर से हो कर जा रही थी तो वह चिड़िया गा उठी। उसका गाना इतना मोहक था कि उसके गाने का जादू सारे महल पर छा गया।

परी अब वहॉ अधिक आराम महसूस कर रही थी और जब वह बादशाह से मिली तब तो उसे पूरा विश्वास ही हो गया। बादशाह ने भी उसकी इतनी तारीफ की कि वह तो उस पर से अपनी ऑखें ही नहीं हटा पा रहा था।

कुछ समय बाद ही बादशाह और परी की शादी हो गयी। अब बादशाह दुनियॉ का सबसे खुश आदमी था। पर लाला का गुस्सा तो बहुत ऊॅचा चढ़ा हुआ था। उसका उद्देश्य तो अभी भी पूरा नहीं हुआ था।

एक दिन रानी कुछ बीमार थी। जो दवा उसका इलाज कर सकती थी वह उसके अपने महल में थी। लाला ने तुरन्त ही बादशाह को सलाह दी कि दवा लाने के लिये वह लड़के को वहॉ भेज दे। सो वह अपने जहाज़ पर चढ़ा और दवा लाने के लिये चल दिया।

तभी कौआ वहॉ प्रगट हुआ और उससे पूछा कि वह कहॉ जा रहा था। लड़के ने बताया कि रानी बीमार थी और उसकी दवा लाने के लिये वह उसके महल जा रहा था।

कौआ बोला — "तुमको परी का महल पहाड़ के उस पार मिलेगा। दो शेर उसके दरवाजे पर खड़े रहते हैं। तुम यह पंख ले

जाओ। अगर तुम इसे उनके मुॅह से छुआ दोगे तो वे तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुॅचायेंगे।" लड़का उस पंख को ले कर चल दिया।

उसने अपने जहाज़ का लंगर पहाड़ के सामने डाल दिया और परी के महल की ओर बढ़ा। वहॉ दरवाजे के पास उसे दो शेर बैठे दिखायी दिये। उसने तुरन्त ही वह पंख उनके मुॅह से छुआ दिया तो वे पीछे को हट गये।

वहॉ रह रहीं परियों ने जब लड़के को देखा तो वे तुरन्त ही समझ गयीं कि उनकी रानी बीमार थी। उन्होंने उसे दवा ला कर दे दी और वह बिना देर लगाये घर लौट आया।

जैसे ही वह परी के कमरे में घुसने वाला था कि कौआ एक बार फिर प्रगट हुआ और उसके कन्धे पर बैठ गया। दोनों परी के सामने गये। परी रानी तो बस मरने ही वाली थी कि उसको दवा दे गयी। दवा के लेते ही वह ज़िन्दा हो गयी।

अपनी ऑखें खोल कर दोनों को देखते हुए उसने कौए से कहा — "ओ नीच चिड़िया। क्या तुमको इस लड़के के ऊपर इतनी भी दया नहीं आयी कि तुमने इसे इतनी तकलीफें दीं।"

तब परी रानी ने बादशाह से कहा — "यह कौआ एक बार मेरी नौकरानी थी जिसने एक बार मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया था इसलिये मैंने इसे शाप दे कर कौआ बना दिया था।"

फिर वह कौए से बोली — "पर अब मैं अपना शाप वापस लेती हूँ और तुम्हें यह देख कर आजाद करती हूँ कि तुम मुझे अभी भी प्यार करती हो।"

यह सुन कर कौए ने अपने पंख फड़फड़ाये और एक सुन्दर परी बन गया। परी की इच्छा से बादशाह ने उसकी शादी लड़के से कर दी। उस झूठे लाला को वज़ीर के पद से हटा दिया गया और उस लड़के को वज़ीर बना दिया गया। फिर वे सब खुशी खुशी रहे।

17 चालीस राजकुमार और सात सिर वाला ड्रैगन[31]

एक बार एक बादशाह था जिसके **40** बेटे थे। वे अपना सारा समय जंगल में बिताया करते थे। जब बादशाह का सबसे छोटा बेटा अपने **14**वें साल में पहुॅचा तो बादशाह ने सोचा कि अब समय आ गया है जब उन सबकी शादी कर देनी चाहिये।

सो उन्होंने उन सबको एक साथ बुलाया और उनसे इस मामले पर बात की। चालीसों भाइयों ने कहा कि वे शादी करने के लिये तैयार थे पर वे उन्हीं **40** लड़कियों से शादी करेंगे जिनके माता पिता भी एक ही होंगे।

बादशाह ने अपने राज्य में एक ऐसा परिवार ढूॅढने की बहुत कोशिश की जिसके **40** बेटियॉ हों पर उसे कोई ऐसा परिवार नहीं मिला जिसके **40** बेटियॉ हों। सबसे अधिक बेटियॉ **39** थीं **40** नहीं।

बादशाह बोला — "चालीसवें को किसी और घर से लड़की ढूॅढनी पड़ेगी।"

पर चालीसों भाइयों ने बादशाह की बात मानने से मना कर दिया और उनसे विनती की कि वह उन सबको विदेशों में जाने की इजाज़त दें ताकि वे अपने लिये अपनी दुलहिनें अपने आप ही ढूॅढ सकें।

---

[31] The Forty Princes and the Seven-headed Dragon. Tale No 17

अब बादशाह बेचारे क्या करते। वह उन्हें नहीं रोक सके उन्होंने उनको इस बात की इजाज़त दे दी। पर इससे पहले कि वे वहॉ से जाते बादशाह ने उन सबसे कहा — "शादी से पहले तुम सब तीन बातों का ध्यान रखना।

पहली बात जब तुम लोग किसी बड़ी नदी के पास पहुँचो तो उसके आसपास भी कहीं रात मत गुजारना। दूसरी बात कुछ दूर आगे जा कर तुम्हें एक हान[32] मिलेगा तुम लोग अपनी रात वहॉ भी मत गुजारना। तीसरी बात उसके आगे तुम्हें एक बड़ा सा मैदान मिलेगा वहॉ तुम लोग एक पल के लिये भी इधर उधर मत घूमना।"

सब बेटों ने अपने पिता की सलाह मानने का वायदा कर अपने अपने घोड़ों पर सवार हुए और यात्रा पर चल दिये। चिलम पीते हुए और बातचीत करते हुए वे सब अपनी यात्रा पर चले जा रहे थे। चलते चलते उन्हें शाम हो आयी तो देखा कि वे सब एक नदी के पास तक आ गये हैं।

सबसे बड़ा भाई बोला कि अब हम इससे आगे एक कदम भी नहीं जा रहे। हम लोग थक गये हैं दूसरे अब रात भी हो गयी है। इसके अलावा हम लोग तो **40** हैं हमको किसका डर।

सो वे अपने अपने घोड़ों से उतर गये और खाना खाने बैठ गये। खा पी कर वे आराम करने के लिये लेट गये। उनमें से सबसे छोटे बेटे को जो अभी केवल **14** साल का ही था नींद नहीं आयी।

---

[32] Han – means inn

वह उन सबका पहरा देता रहा। आधी रात के लगभग उसने कुछ शोर सुना तो उसने अपना हथियार निकाल लिया और ध्यान से सुनने लगा। जैसे जैसे आवाज पास आती गयी तो उसने देखा कि एक सात सिर वाला ड्रैगन चला आ रहा है।

लड़का और जानवर दोनों एक दूसरे पर हमला करने लग गये। तीन बार जानवर ने लड़के पर हमला किया पर वह उसे काबू में नहीं कर सका।

राजकुमार बोला — "अब मेरी बारी है।" कह कर राजकुमार ने ड्रैगन के ऊपर इतनी ज़ोर से प्रहार किया कि उसके छह सिर जमीन पर जा गिरे।

ड्रैगन ने मुश्किल से सॉस लेते हुए कहा — "एक बार मेरे ऊपर और वार करो।"

लड़का बोला — "नहीं मैं नहीं।"

ड्रैगन नीचे धरती में बैठता ही चला गया। पर यह क्या। देखो तो उसका एक सिर लुढ़कता ही चला गया और लुढ़क कर एक कुँए के पास तक पहुँच गया। कुँए में गिरने से पहले वह बोला — "जिसने मेरी ज़िन्दगी ली है उसी को मेरा खजाना भी लेने दो।" यह कह कर वह कुँए में गिर गया।

लड़के ने एक रस्सी ली। उसका एक सिरा उसने एक पत्थर से बॉध दिया और दूसरा सिरा पकड़ कर वह कुँए में उतर गया। नीचे

पहुँच कर उसे एक लोहे का दरवाजा मिला। उसने उसे खोला तो एक महल में पहुँचा जो उसके पिता के महल से भी सुन्दर था।

उस महल में **40** कमरे थे और उन चालीसों कमरे में एक एक लड़की थी जो कढ़ाई की मेज पर बैठी हुई थी। उनके हर एक के पास बहुत सारा खजाना इकट्ठा पड़ा था। उसको देख कर लड़कियॉ डर गयीं।

उन्होंने पूछा — "तुम कौन हो? क्या तुम कोई जिन्न हो या फिर कोई आदमी हो?"

राजकुमार बोला — "मैं एक आदमी हूँ। मैंने सात सिर वाले ड्रैगन को मारा है और मैं यहॉ उसके एक सिर के इस कुँए में गिरने के पीछे पीछे आया हूँ।"

यह सुन कर सब लड़कियॉ बहुत खुश हुईं। उन सबने उसको गले लगाया और उससे विनती की कि वह उनके पास ही रहे। उन्होंने उसे यह भी बता दिया कि वे **40** बहिनें थीं और ड्रैगन ने उन्हें चुरा लिया था। उसने उनके माता पिता को मार दिया था और अब इतनी बड़ी दुनियॉ में उनका कोई सम्बन्धी या दोस्त नहीं था।

राजकुमार बोला — "हम **40** भाई हैं और अपने लिये **40** दुलहिनों की खोज में हैं।" फिर उसने उनसे कहा कि अभी उसे ऊपर अपने भाइयों के पास जाना चाहिये पर वह जल्दी ही उन सबको वहॉ से ले जाने के लिये आयेगा। फिर वह ऊपर आया और नदी के पास गया और जा कर सो गया।

सुबह सवेरे जब चालीसों भाई जागे वे अपने पिता के कहे हुए शब्दों पर हॅसने लगे कि उन्होंने उनको उस नदी से डराने की कोशिश की थी। वे फिर वहॉ से अपनी यात्रा पर चल दिये और शाम तक चलते रहे। और लो देखो उनके सामने एक हान खड़ा हुआ था।

बड़े राजकुमार ने कहा — "अब हम यहीं विश्राम करेंगे और आगे कहीं नहीं जायेंगे।"

सबसे छोटे बेटे ने उसे यह सलाह भी दी कि उसे अपने पिता जी की सलाह याद रखनी चाहिये पर उसके दूसरे भाई उसकी कोई भी बात नहीं सुन रहे थे। उन्होंने अपना खाना खाया रात की प्रार्थना की और सोने के लिये लेट गये। पर सबसे छोटा भाई पहले की तरह से जागता ही रहा।

आधी रात के लगभग लड़के ने फिर से शोर की आवाज सुनी तो वह फिर से अपनी तलवार ले कर खड़ा हो गया। उसने देखा कि एक और सात सिर वाला ड्रैगन उसकी ओर चला आ रहा है। वह भी उससे लड़ने के लिये आगे बढ़ा पर पहले ड्रैगन ने उस पर हमला कर दिया जिसका लड़के पर कोई असर नहीं हुआ।

उसके बाद लड़के ने उस पर इतनी ज़ोर से वार किया कि उसके छह सिर कट कर नीचे गिर गये। ड्रैगन ने उससे एक बार और वार करने के लिये कहा पर राजकुमार ने कहा "मैं नहीं।" अब जैसा कि पहले हुआ था उसका भी एक सिर लुढ़कता हुआ पास के एक कुॅए में गिर पड़ा।

लड़का उस सिर के पीछे पीछे चला तो इस बार उसे एक और बड़ा महल मिला जो पिछले वाले महल से भी बड़ा था और जहॉ पिछले वाले महल से भी अधिक खजाना था। उस जगह को ध्यान में रखते हुए वह अपने भाइयों के पास लौट आया और आ कर सो गया। इस थकान के बाद वह इतनी गहरी नींद सोया कि अगले दिन सुबह उसे उसके भाइयों को जगाना पड़ा।

अगले दिन वे फिर से अपने घोड़ों पर चढ़े और आगे की यात्रा पर चल दिये – पहाड़ों के ऊपर घाटियों में कि अन्त में वे एक बड़े से मैदान में पहुॅच गये।

उन्होंने वहॉ खाया पिया और आराम करने के लिये लेटने ही वाले थे कि अचानक से उन्हें एक बहुत ज़ोर की चीख सुनायी थी। उनको लगा जैसे उस चीख को सुन कर पहाड़ भी हिल गये हों।

जैसे ही उन्होंने सात सिर वाले ड्रैगन को देखा तो वे तो बस जम ही गये। वह गरजता और आग उगलता हुआ उन्हीं की ओर चला आ रहा था। उसने आते ही कहा — "किसने मेरे दोनों भाइयों को मारा मैं आज उससे अपना भाइयों की मौत का बदला लूॅगा।"

सबसे छोटे भाई ने देखा कि उसके सारे भाईयों को तो डर के मारे जैसे लकवा मार गया हो। वे तो कुछ भी करने में असमर्थ लग रहे थे। उसने उनको दोनों कुॅओं की चाभियॉ दीं और कहा कि वे उन चालीसों लड़कियों और खजाने को निकाल कर ले जायें।

उसने साथ में यह भी कहा कि जब वह उस ड्रैगन को मार लेगा तब वह भी वापस आ जायेगा। सो **39** भाई अपने अपने घोड़ों पर सवार हो कर वहॉ से तुरन्त ही भाग गये।

अब हम अपने सबसे छोटे भाई के पास आते हैं। लड़के और ड्रैगन की लड़ाई बहुत खूँख्वार थी। वे लोग आपस में बिना किसी एक दूसरे को जीते बहुत देर तक लड़ते रहे।

जब ड्रैगन ने देखा कि राजकुमार से लड़ना व्यर्थ है तो उसने उससे कहा — "अगर तुम चिनिमाचीन[33] देश जाओ और वहॉ के बादशाह की बेटी ला कर मुझे दो तो मैं तुम्हें छोड़ सकता हूँ।"

राजकुमार ने उसकी बात मान ली क्योंकि अब वह उससे लड़ते लड़ते इतना थक गया था कि अब आगे और नहीं लड़ सकता था।

चम्पालक[34] जो ड्रैगन का नाम था उसने उसे एक लगाम दी और उससे कहा — "यहॉ रोज अजगीर[35] नाम का एक जादुई घोड़ा चरने आता है। तुम उसे पकड़ लेना उस पर यह लगाम कस देना और उससे कहना कि वह तुम्हें चिनिमाचीन देश ले जाये।"

लड़के ने उससे लगाम ली और उस जादू के घोड़े का इन्तजार करने लगा। कुछ ही देर में सुनहरे रंग का एक घोड़ा हवा में उड़ता हुआ वहॉ आया। उसने तुरन्त है उसके ऊपर लगाम कसी तो घोड़े ने पूछा — "हुक्म सुलतान। ऑख बन्द करो ऑख खोलो।"

---

[33] Chinimatchin land

[34] Champalak – the name of the Dragon

[35] Ajgyr – name of the magical horse

और लड़का चिनिमाचीन देश में था। वहॉ पहुॅच कर वह घोड़े पर से उतरा और शहर में चला गया। वहॉ पहुॅच कर वह एक बुढ़िया की झोंपड़ी में चला गया और बुढ़िया से पूछा कि क्या वह उसे अपने घर में ठहरा सकती है।

बुढ़िया बोली — "हॉ हॉ।" उसने उसको बैठने के लिये एक चौकी दी और उसके लिये कौफ़ी बनायी। जब वह कौफ़ी पी रहा था तो उसने देश के हालचाल के बारे में पूछा।

बुढ़िया ने कहा — "एक सात सिर वाला ड्रैगन हमारे सुलतान की बेटी के प्रेम में बुरी तरह गिरफ्तार है। इसी वजह से उन दोनों में बहुत सालों से लड़ाई चल रही है। हम लोग उस राक्षस से किसी तरह बच नहीं पा रहे हैं।"

राजकुमार ने पूछा — "और राजकुमारी?"

बुढ़िया बोली — "वह सुलतान के बागीचे में एक घर में रहती है। वह वहॉ से एक पग भी इधर उधर जाने की हिम्मत नहीं कर सकती है।"

अगले दिन राजकुमार बादशाह के बागीचे गया और वहॉ के माली से उसे बादशाह की सेवा में ले जाने के लिये कहा। उसने यह इतनी विनम्रता से कहा कि आखिर माली उसको बादशाह के पास ले जाने के लिये तैयार हो गया।

माली बोला — "तुम्हारा और कोई काम नहीं है सिवाय पौधों में पानी देने के।"

सुलतान की बेटी ने इस लड़के को देखा तो उसे अपनी खिड़की के नीचे बुला लिया और उससे पूछा कि वह उस देश में कैसे आया। लड़का बोला कि उसके पिता भी एक बादशाह हैं। फिर उसने उसे चम्पालक से लड़ाई के बारे में बताया और बताया कि वह कैसे उसे सुलतान की बेटी को लाने का वायदा कर के आया है।

राजकुमार आगे बोला — "पर तुम डरो नहीं। मेरा प्यार उस ड्रैगन से भी ज़्यादा ऊँचा है। अगर तुम मेरे साथ चलो तो मुझे मालूम है कि उसे कैसे मारना है।"

राजकुमारी को तो पहले से ही उस सुन्दर राजकुमार से प्यार हो गया था और इससे ज़्यादा तो वह इस लगातार जेल में रहने से भाग जाना चाहती थी। उसे राजकुमार पर इतना अधिक विश्वास हो गया था कि एक रात वह अपना घर छोड़ कर छिप कर राजकुमार के साथ चम्पालक के मैदान चली गयी।

रास्ते में वे यह बातें करते रहे कि राजकुमारी को ड्रैगन का तलिस्मान जानने के लिये क्या करना होगा क्योंकि उस तलिस्मान से ही राजकुमार ड्रैगन को मार सकता था।

हम लोग तो बस चम्पालक की खुशी की कल्पना ही कर सकते हैं जब उसने राजकुमारी को राजकुमार के साथ आते देखा होगा। वह राजकुमारी को बार बार सहलाता जा रहा था और बार बार यही कहता जा रहा था "तुम्हारे आ जाने से मुझे कितनी खुशी हुई है। तुम्हारे आ जाने से मुझे कितनी खुशी हुई है।"

राजकुमारी तो बस सारा समय रोती ही रही। कई दिन और हफ्ते बीत गये पर राजकुमारी का रोना नहीं रुका। ड्रैगन उसे इस तरह से रोते हुए देख कर परेशान था। उसने पूछा — "आखिर तुम चाहती क्या हो?"

राजकुमारी रोते रोते बोली — "बस तुम मुझे अपना तलिस्मान बता दो तब शायद मेरे दिन इतने दुख में न बीतें।"

ड्रैगन बोला — "प्रिये। वह एक ऐसी जगह सुरक्षित है जहाँ पहुँचना असम्भव है। फलाँ फलाँ देश में एक बहुत बड़ा महल है जहाँ अगर कोई पहुँच जाये तो वहाँ से बाहर नहीं निकल सकता।"

राजकुमार के लिये इतनी खबर काफी थी। उसने अपनी लगाम निकाली और उसे समुद्र के ऊपर फेंक दी। तुरन्त ही वहाँ वह सुनहरे रंग वाला घोड़ा प्रगट हो गया और बोला — "क्या हुक्म है छोटे सुलतान।"

राजकुमार बोला — "ड्रैगन के तलिस्मान के देश।"

"अपनी आँखें बन्द कीजिये और अपनी आँखें खोलिये।" और वह तो बस उसी देश में खड़ा था।

जब राजकुमार घोड़े से उतरने लगा तो जादू का घोड़ा बोला — "आप मेरी लगाम महल के दरवाजे पर जो लोहे के छल्ले पड़े हुए हैं उनमें बाँध दें। जब मैं एक बार हिनहिनाऊँगा और छल्लों को आपस में एक बार टकराऊँगा तो दरवाजा खुल जायेगा। यह दरवाजा कोई सादा दरवाजा नहीं शेर के मुँह का जबड़ा है।

सो अगर आप इसे अपने तलवार के एक ही वार से काट सके तब आप सुरक्षित हैं नहीं तो समझिये आपका अन्तिम समय आ गया।"

जैसा घोड़े ने उससे कहा था राजकुमार ने वैसा ही किया। उसने घोड़े की लगाम को दरवाजे के लोहे के छल्लों से बॉध दिया। और जब वह एक बार हिनहिनाया और छल्लों को एक झटका दिया तो दरवाजा खुल गया।

राजकुमार ने तुरन्त ही उसके जबड़े में तलवार मारी और उसके दो टुकड़े हो गये। इसके बाद उसने उसका पेट काटा और उसमें से एक पिंजरा निकाला जिसमें तीन फाख्ता थे। वे तीनों फाख्ता इतने सुन्दर थे जितने सुन्दर फाख्ता उसने कभी नहीं देखे थे।

उसने उसमें से एक फाख्ता निकाला और उसके पंख सहलाने लगा कि इतने में ही वह तो उड़ ही गया था अगर जादू के घोड़े ने उसे उड़ कर पकड़ कर उसकी गर्दन न मरोड़ दी होती। फिर राजकुमार को अपनी प्रेमिका कभी नहीं मिली होती।

अब वह फिर से अपने जादू के घोड़े पर सवार हुआ और "अपनी ऑखें बन्द कीजिये और अपनी ऑखें खोलिये।" और वह एक बार फिर से चम्पालक के महल के पास खड़ा था। दरवाजे पर राजकुमार ने बचे हुए दोनों फाख्ता मारे और फिर जैसे ही वह अन्दर गया तो उसने देखा कि ड्रैगन तो नीचे गिरा पड़ा है।

जब उसने राजकुमार के हाथों में फाख्ता देखे तो उसने उससे विनती की कि वह उसके मरने से पहले उन्हें दोबारा मारे। राजकुमार को उस पर दया आ गयी और वह उन चिड़ियों को ड्रैगन को देने ही वाला था कि सुलतान की बेटी आयी और उसने उनको अपने हाथ में ले कर दूर फेंक दिया। यह करते ही ड्रैगन बहुत ही दयनीय दशा में मर गया।

जादू का घोड़ा बोला — "यह आपके लिये बहुत अच्छा हुआ कि आपने उसको ये चिड़ियें नहीं दीं। अगर वह उनको छू भी लेता तो वह फिर से ज़िन्दा हो जाता।"

अब क्योंकि घोड़े की कोई जरूरत नहीं थी सो उसकी लगाम गायब हो गयी और उसके साथ ही जादू का घोड़ा भी।

राजकुमार ओर सुलतान की बेटी ने ड्रैगन का सारा खजाना लिया और उसे चिनिमाचीन देश ले गये। उधर सुलतान अपनी बेटी के गायब होने की वजह से बहुत दुखी था। उसने अपने राज्य में सब जगह उसकी खोज करा ली थी पर जब वह उसे कहीं भी नहीं मिली तो उसने सोचा कि वह अवश्य ही ड्रैगन के पंजे में फॅस गयी है।

जब राजकुमारी उसके सामने सुरक्षित आयी तो उसने खुश हो कर अपनी बेटी राजकुमार को ही दे दी। शादी बड़ी धूमधाम से हुई और खूब खुशियॉ मनायी गयीं। इसके बाद वे बहुत सारे सिपाहियों के साथ अपने राज्य लौटे।

राजकुमार के घर में भी यह सोच लिया गया था कि राजकुमार तो मर ही गया होगा सो राजकुमार को यह साबित करने में बहुत समय लगा कि वही उनका **40**वॉ सबसे छोटा बेटा है।

इसके लिये उसे तीन ड्रैगन और **40** बहिनों की कहानी सुनानी पड़ी और उसे यह भी बताना पड़ा कि उसके **39** भाइयों ने **39** बहिनों से शादी कर ली थी और **40**वीं बहिन की शादी चिनिमाचीन की राजकुमारी के भाई से हुई। इसके बाद वे सब हॅसी खुशी रहे।

18 चॉद घोड़ा कमेरताज[36]

एक बार एक बादशाह को कहीं से एक छोटा सा कीड़ा मिल गया। तो बादशाह ने अपने लाला यानी वज़ीर को बुलाया और दोनों उसकी जॉच करने लगे। यह क्या हो सकता है? यह क्या खाता है? आदि आदि।

रोज उसके खाने के लिये भिन्न भिन्न प्रकार के जानवर मारे जाते। इस तरह से इसे रखने की वजह से वह धीरे धीरे इतना बड़ा हो गया जैसे कि कोई बिल्ला।

इसके बाद उन्होंने उसे मार डाला उसकी खाल साफ करा कर महल के दरवाजे पर लटका दी और नगर में ढिंढोरा पिटवा दिया कि जे कोई यह बतायेगा कि यह खाल किस जानवर की है वह उसे ही अपनी बेटी देगा।

बहुत सारी जगहों से बहुत सारे लोग उस खाल के जानवर को पहचानने के लिये वहॉ आये पर उनमें से कोई भी इतना अक्लमन्द नहीं था जो यह बात बता सकता।

अब यह बात बहुत दूर दूर तक फैल चुकी थी सो यह एक देव के कानों तक भी पहुॅची। उसने सोचा कि "यह तो मेरे लिये बहुत

[36] Kamer-taj, the Moon-horse. Tale No 18
Moon-horse is a Turkush mythological creature, maybe a white horse, but with magical powers.

ही अच्छी किस्मत की बात है। बस मुझे तीन दिन तक कुछ खाना पीना नहीं है और बाद में मैं राजकुमारी को खा लूँगा।"

सो वह बादशाह के पास गया और उस प्राणी का नाम बताया और तुरन्त ही उसकी बेटी की मॉग की। बादशाह ने सोचा "उफ़। मैं एक देव को अपनी बेटी कैसे दे सकता हूँ।"

सो उसने देव को अपनी बेटी के बदले में वह जितने चाहे उतने दास देने का प्रस्ताव रखा पर सब बेकार। देव को तो बादशाह की बेटी ही चाहिये थी। सो बादशाह को अपनी बेटी देव को देनी पड़ी।

उसने अपनी बेटी को बुलाया और यात्रा के लिये तैयार होने के लिये कहा क्योंकि उसकी किस्मत में एक देव ही लिखा था। अब रोना धोना चिल्लाना सब बेकार था। लड़की ने अपने कपड़े पहने जबकि देव महल के बाहर उसका इन्तजार कर रहा था।

अब बादशाह के पास एक घोड़ा था जो गुलाब का इत्र पीता था और अंगूर खाता था। उसका नाम था कमेरताज या चॉद घोड़ा। इसी घोड़े पर चढ़ कर सुलतान की बेटी को देव के साथ उसके घर जाना था। कुछ सिपाहियों को उसके साथ कुछ दूर तक जाना था और फिर वापस आना था।

लड़की ने अल्लाह की प्रार्थना की कि वह उसे देव के हाथों से सुरक्षित रूप से बाहर निकलवा दे कि अचानक चॉद घोड़े ने बोलना शुरू कर दिया — "राजकुमारी जी आप बिल्कुल मत डरिये। आप

अपनी ऑखों बन्द कर लीजिये और मेरी गर्दन के बाल कस कर पकड़ लीजिये।"

उसने ऐसा ही किया। घोड़े की गर्दन के बाल कस कर पकड़ कर अपनी ऑख बन्द कर लीं। जैसे ही उसने ऑखें बन्द कीं तो उसे लगा कि वह तो घोड़े के साथ साथ उड़ रही है। जब उसने अपनी ऑखें खोलीं तो उसने देखा कि वह तो समुद्र के बीच में एक टापू पर बने एक प्यारे से महल के बागीचे में है।

राजकुमारी के इस तरह गायब हो जाने पर देव बहुत गुस्सा हुआ। वह बोला "फिर भी कोई चिन्ता नहीं। मैं उसे जल्दी ही ढूँढ लूँगा।" कहता हुआ वह अकेले ही अपने रास्ते अपने घर चला गया।

टापू के पास ही एक राजकुमार अपने लाला के साथ अपनी नाव में बैठा हुआ था। राजकुमार ने सुनहरे रंग के घोड़े की परछाईं समुद्र के पानी में देख कर अपने लाला से कहा — "ऐसा लगता है कि कोई उसके महल में आया है।"

सो वे अपने टापू की तरफ चल दिये और अपने टापू पर उतर कर अपने महल की ओर चल दिये। वे अपने बागीचे में घुसे तो राजकुमार ने राजकुमारी का सुन्दर चेहरा देखा जिसने अपना काफी हिस्सा परदे में छिपा रखा था पर वह उसकी सुन्दरता उसमें नहीं छिपा सकी।

राजकुमार के मुॅह से निकला — "ओह परी। तुम मुझसे डरो नहीं। मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूॅ।"

राजकुमारी बोली — "मैं कोई परी नहीं हूॅ मैं तो एक सामान्य बादशाह की सामान्य बेटी हूॅ।" फिर उसने राजकुमार को बताया कि किस तरह से वह एक देव से बच कर वहॉ आयी है।

राजकुमार बोला कि वह इससे अच्छी जगह कहीं और जा ही नहीं सकती थी। वह खुद भी एक बादशाह का बेटा था और अगर वह चाहे तो वह उसे अपने साथ ले जा सकता था। और अल्लाह की कृपा से वह उसको अपनी दुलहिन बना लेगा।

सो वे दोनों राजकुमार के पिता बादशाह के पास गये और राजकुमार ने उनको राजकुमारी की कहानी बतायी। बाद में उन दोनों की शादी हो गयी। शादी की खुशियॉ और खाना पीना **40** दिन और **40** रात तक चला।

कुछ समय तक तो वे लोग शान्ति से रहे पर फिर एक पड़ोसी देश से लड़ाई छिड़ गयी तो उस समय के रीति रिवाजों के अनुसार बादशाह को भी लड़ाई पर जाना था।

सो यह सुन कर राजकुमार बादशाह के पास गया और उनसे लड़ाई पर जाने की आज्ञा मॉगी। बादशाह की इच्छा बिल्कुल नहीं थी उनका बेटा लड़ाई पर जाये। उन्होंने कहा — "बेटा तुम अभी नौजवान हो। तुम्हारी पत्नी है तुमको इस तरह से उसे छोड़ कर नहीं जाना चाहिये।"

पर राजकुमार ने उनसे इतनी जिद की कि बादशाह को घर रहना पड़ा और उनको उसे लड़ाई पर जाने की आज्ञा देनी ही पड़ी।

देव को पता चला कि राजकुमार लड़ाई पर गया हुआ है। और उसे एक बात और पता चली कि उसकी अनुपस्थिति में राजकुमार के एक बेटा और एक बेटी भी जन्म ले चुके हैं।

उन दिनों टार्टर्स[37] को सन्देश भेजने के लिये रखा जाता था। वे बादशाह के घर से लड़ाई में राजकुमार तक उनका सन्देश लाया ले जाया करते थे। सो एक बार एक सन्देशवाहक को देव ने बीच में ही रोक लिया और उसे एक कौफ़ी की दूकान में बुलाया।

वहॉ देव ने उसे इतनी देर तक उलझाये रखा कि उसे रात हो गयी। सन्देशवाहक अब अपना सन्देश देने के लिये जाना चाहता था पर देव ने उसे सुझाया कि अब बहुत देर हो गयी है सो अब उसे कल जाना चाहिये। सो वह वहीं सो गया।

जब आधी रात हो गयी तो उसने उसका थैला ढूँढा तो उसमें एक पत्र मिल गया जो बादशाह ने राजकुमार को लिखा था कि

---

[37] Tarter is a word of Kurd or Khurd language. Tatar, also spelled Tartar, any member of several Turkic-speaking peoples that collectively numbered more than 5 million in the late 20th century and lived mainly in west-central Russia along the central course of the Volga River and its tributary, the Kama, and thence east to the Ural Mountains. The Tatars are also settled in Kazakhstan and, to a lesser extent, in western Siberia.

The name Tatar first appeared among nomadic tribes living in northeastern Mongolia and the area around Lake Baikal from the 5th century CE. Unlike the Mongols, these peoples spoke a Turkic language, and they may have been related to the Cuman or Kipchak peoples. After various groups of these Turkic nomads became part of the armies of the Mongol conqueror Genghis Khan in the early 13th century, a fusion of Mongol and Turkic elements took place, and the Mongol invaders of Russia and Hungary became known to Europeans as Tatars (or Tartars).

उसकी अनुपस्थिति में महल में एक बेटा और एक बेटी आ गये हैं। देव ने यह पत्र तो फाड़ दिया और एक और पत्र लिखा कि एक कुत्ता और कुतिया ने जन्म लिया है। तुम क्या कहते हो हम उन्हें मार दें या फिर जब तक तुम घर लौट कर आते हो तब तक रखे रहें।

यह पत्र उसने उसी लिफाफे में रख दिया जिसमें बादशाह ने अपना पत्र रखा था। सुबह को टार्टर उठा और पत्रों का थैला ले कर राजकुमार के कैम्प चल दिया।

जब राजकुमार ने अपने पिता का पत्र पढ़ा तो उसने उनको लिखा "शाह और पिता जी। उन कुत्तों को मारिये मत उन्हें तब तक रखिये जब तक मैं वापस घर आता हूॅ।" यह पत्र लिख कर टार्टर को दे दिया गया और वह महल के लिये लौट चला।

रास्ते में उसे फिर से वह देव मिला। वह फिर से उसे कौफ़ी की दूकान में ले गया और रात तक बिठा कर उसे पिलाता रहा। फिर जब वह जाने लगा तो उसने उसे फिर वही कहा कि वह अब सुबह जाये क्योंकि अब रात होने वाली है।

रात को जब वह सो गया तो देव ने फिर से उसका थैला खोला राजकुमार का पत्र निकाला और उसे फाड़ कर दूसरा पत्र लिखा "शाह और पिता जी। मेरी पत्नी और बच्चों को ले जा कर किसी पहाड़ की चोटी से नीचे फेंक दो और चॉद घोड़े को **50** टन की जंजीर से बॉध दो।" और उसके थैले में रख दिया।

अगले दिन शाम को जब टार्टर पत्र ले कर बादशाह के पास पहुॅचा तो राजकुमारी भी उसे देख रही थी। वह उसे देख कर बहुत खुश हुई और दौड़ी दौड़ी बादशाह के पास आयी ताकि बादशाह उसे उसके पति का पत्र दिखा सकें।

लेकिन बादशाह ने जब वह पत्र पढ़ा तो आश्चर्यचकित रह गया। उसकी हिम्मत ही नहीं हुई कि वह राजकुमारी को अपने बेटे का लिखा हुआ पत्र दिखा दे सो उसने उसको मना कर दिया कि राजकुमार का कोई पत्र नहीं आया।

राजकुमारी बोली — "वास्तव में मैंने उस पत्र को अपनी ऑखों से देख लिया है। ऐसा लगता है कि उनके साथ कुछ बुरा हो गया है और आप मुझे बता नहीं रहे हैं।"

फिर एक नजर उस पत्र पर डाल कर उसने अपने हाथ बढ़ा कर वह पत्र उनके हाथों से ले लिया। उसे पढ़ कर वह बेचारी बहुत ज़ोर से रो पड़ी। बादशाह ने उसको धीरज देने की अपनी ओर से बहुत कोशिश की पर उसके बाद उसने महल में रहने से मना कर दिया।

उसने अपने बच्चों को लिया और वह नगर छोड़ दिया और बाहर दुनियॉ में निकल पड़ी।

दिन और हफ्ते बीत गये। अब वह अपनी भूख भी शान्त नहीं कर पा रही थी। उसके पास अपने थके हुए शरीर को आराम देने के लिये कोई बिस्तर भी नहीं था। वह इतनी थक गयी थी अब एक

और पग भी आगे नहीं बढ़ सकती थी। वह वही एक पेड़ के नीचे बैठ गयी।

उसके मुॅह से प्रार्थना निकली — "ओह मेरे बच्चे भूख से नहीं मरने चाहिये।"

तभी धरती फाड़ कर वहॉ पानी निकल पड़ा और आकाश से आटा गिरने लगा। इनसे उसने रोटी बनायी और अपने बच्चों को खिलायी।

इस बीच देव को राजकुमारी के भाग्य के बारे में पता चला तो वह तुरन्त ही उसके बच्चों को खाने के लिये चल पड़ा। राजकुमारी ने देखा कि देव गुस्से में भर कर उसी की ओर चला आ रहा है तो वह चिल्लायी — "जल्दी आओ मेरे कमेरताज नहीं तो मैं तो मर जाऊॅगी।"

एक दूर देश में कमेरताज ने उसकी यह पुकार सुनी तो उसने अपनी **50** टन की जंजीरों को तोड़ने की कोशिश की पर तोड़ न सका। जैसे जैसे देव पास आता जा रहा था राजकुमारी का कोध बढ़ता जा रहा था।

उसने अपने दोनों बच्चों को अपनी छाती से लगा रखा था। वह फिर एक बार चिल्लायी। चॉद घोड़े ने फिर से जंजीरें तोड़ने की कोशिश की पर वह उन्हें तोड़ नहीं सका।

देव उसके और पास आता जा रहा था। बेचारी मॉ आखिरी बार चिल्लायी। इस बार कमेरताज ने अपना पूरा ज़ोर लगाया और

वह अपनी जंजीरें तोड़ने में सफल हो गया। वह तुरन्त ही राजकुमारी के सामने आ गया।

आते ही बोला — "मालकिन आप डरें नहीं। अपनी ऑखें बन्द करें और मेरा नाम लें।" तुरन्त ही वे सब समुद्र के उस पार थे। इस प्रकार देव एक बार फिर से गुस्सा हो कर भूखा ही वहॉ से चला गया।

चॉद घोड़ा राजकुमारी को अपने देश ले गया। उसे लग रहा था कि अब उसका अन्तिम समय आ गया है। उसने अपनी प्रिय मलिका से कहा कि अब उसे मरना है। तो राजकुमारी ने उससे प्रार्थना की वह उसे उसे बच्चों के साथ अकेला छोड़ कर न जाये। क्योंकि अगर वह चला गया तो देव की बुरी चालों से उसकी रक्षा कौन करेगा।

घोड़े ने उसे धीरज दिया और कहा — "आप डरिये नहीं। कोई आपको कोई नुकसान नहीं पहुॅचायेगा। जब मैं मर जाऊॅ तो मेरा सिर उतार कर धरती में रख देना। मेरा पेट फाड़ देना। यह कर के आप बच्चों सहित उसमें बैठ जाना।" इतना कह कर घोड़े ने अपनी अन्तिम सॉस ली।

राजकुमारी ने उसका सिर काटा और उसको धरती में चिपका दिया। उसका पेट काटा और खुद अपने बच्चों को ले कर वह उसमें लेट गयी। यहॉ वे तीनों गहरी नींद सो गये।

जब वह जागी तो उसने देखा कि वह तो एक बहुत सुन्दर महल में है। यह महल उसके पिता या पति किसी के भी महल से बहुत ज़्यादा सुन्दर था।

वह एक बहुत ही आरामदेह बिस्तर पर लेटी हुई थी। उसके उठते ही कुछ दासियॉ उसके लिये पानी ले कर आ गयीं। एक ने उसे नहलाया दूसरे ने उसे कपड़े पहनाये। उसके बच्चे एक सोने के पालने में लेटे हुए थे और कई आयाऐं उनके पास खड़ी हुई थीं और उनको मीठे मीठे गीत गा कर उन्हें खुश रखे थीं।

जब खाना खाने का समय आया तो उसके सामने सोने चॉदी के बर्तनों में उसके लिये खाना आ गया। यह खाना बहुत स्वादिष्ट लग रहा था।

यह सब सपना सा लग रहा था पर फिर भी दिन और हफ्ते और महीने और साल इसी तरह बीत गये। अगर यह सपना था भी तो यह सपना खत्म नहीं हुआ।

इस बीच लड़ाई खत्म हो गयी और राजकुमार जल्दी जल्दी घर लौटा। घर लौटने पर उसकी पत्नी उसे कहीं दिखायी नहीं दी तो वह अपने पिता के पास गया और उनसे अपनी पत्नी और बच्चों के बारे में पूछा।

बादशाह उसके इस अजीब से सवाल पर चौंक गया। उन दोनों ने अपने अपने पत्र दिखाये तो टार्टर सन्देशवाहक को बुलवाया

गया। जब उन्होंने उससे बारीकी से सवाल किये तो उन्हें पता चला कि एक देव उसे जाते और आते दोनों बार मिला था।

उनकी समझ में तुरन्त ही आ गया कि इस देव ने ही सन्देशवाहक को भटकाया था और उसी ने सन्देशों के साथ खिलवाड़ की थी। अब तो राजकुमार को बिल्कुल भी शान्ति नहीं थी जब तक वह अपनी पत्नी और बच्चों को न ढूँढ ले। इस इरादे से उसने अपने लाला को अपने साथ लिया और उनकी खोज में निकल पड़ा।

वे बिन रुके लगातार चलते चलते रहे। छह महीने बीत गये थे फिर भी उन्होंने अपनी यात्रा जारी रखी – पहाड़ों के ऊपर घाटियों में। उन्होंने कहीं आराम नहीं किया।

एक दिन वे एक पहाड़ की तलहटी में पहुँच गये जहॉ से उन्हें चॉद घोड़े का महल दिखायी देता था। राजकुमार बुरी तरह थक चुका था। उसने लाला से कहा — "लाला जाइये इस महल से कुछ रोटी और थोड़ा पानी ही ले आइये ताकि हम अपनी यात्रा जारी रख सकें।"

जब लाला महल के दरवाजे पर पहुँचा तो उसे दो छोटे बच्चे दिखायी पड़ गये जिन्होंने उसे आराम करने के लिये अन्दर बुला लिया। उस महल में घुसने पर उसे महल का फर्श इतना सुन्दर लगा कि उसकी उस पर पैर रखने की हिम्मत नहीं हुई।

पर बच्चे उसे खींच कर दीवान की ओर ले गये। उसे वहॉ बिठाया और खाना और पानी दिया। लाला ने उनसे यह कह कर क्षमा मॉगी कि बाहर उसका थका हुआ बेटा खड़ा इन्तजार कर रहा था। वह उसके लिये भी कुछ खाना ले जाना चाहता था।

बच्चे बोले — "ओ पिता दरवेश। पहले आप खा लीजिये फिर आप अपने बेटे के लिये भी ले जाइयेगा।" सो लाला ने खाना खाया कौफ़ी पी और हुक्का पिया।

जब वह वहॉ से अपने बेटे के पास आने को हो रहा था तो बच्चे अपने मेहमान के बारे में बताने के लिये अपनी मॉ के पास गये। राजकुमारी ने खिड़की से बाहर झॉका तो राजकुमार को पहचान लिया।

वह अपने हाथों में खाना ले कर उसको एक सोने के बर्तन में रख कर लाला के पास गयी और उसको राजकुमार के पास भेजा। राजकुमार तो मॉगने वाले की इतनी अच्छी सेवा देख कर बहुत खुश हो गया।

उसने एक बर्तन का ढक्कन उठाया और उसे नीचे रख दिया पर वह तो अपने आप ही महल की ओर लुढ़कने लगा। ऐसा ही दूसरे बर्तनों के साथ भी हुआ। जब आखिरी बर्तन का ढक्कन के साथ भी ऐसा ही हुआ तो एक दासी उसे कौफ़ी पीने के लिये महल में बुलाने के लिये आयी।

जब यह सब हो रहा था तो राजकुमारी ने दोनों बच्चों को एक एक लकड़ी का घोड़ा दिया और मेहमान को आदर से लाने के लिये महल के बाहर भेजा। उसने उनसे कहा — "जब दरवेश अपने बेटे के साथ महल में आये तो उन्हें फलॉ फलॉ कमरे में ले जाना।"

दरवेश जब अपने बेटे को ले कर आया तो दोनों बच्चे अपने अपने लकड़ी के घोड़े पर चढ़ कर बाहर आये। उन्होंने उन्हें सलाम किया और उन दोनों को उसी कमरे में ले गये जिसमें उन्हें ले जाने के लिये उनकी मॉ ने कहा था।

राजकुमारी फिर से खाना ले कर गयी और बच्चों को अपना खाना दे कर उनसे कहा कि वे मेहमानों को खाना दें और इस खाने को मेज पर रख देना। फिर उनसे खाने के लिये ज़िद करना। अगर वे यह कहें कि उन्होंने पहले ही बहुत खा लिया है और फिर वे तुमसे साथ में खाना खाने के लिये कहें तो उनसे कहना कि "हम तो खा चुके हैं। पर हॉ शायद हमारे घोड़ों को भूख लगी होगी।"

फिर वे तुमसे यह भी कह सकते हैं कि "लकड़ी के घोड़े कैसे खा सकते हैं।" तब तुम यह जवाब देना।" कह कर उसने बच्चों के कानों में कुछ फुसफुसाया।

बच्चों ने वैसा ही किया जैसा उनकी मॉ ने कहा था। खाना इतना स्वादिष्ट था कि उन्होंने उसे दोबारा खाने की भी कोशिश की। पर क्योंकि उनका पेट पहले से ही भरा हुआ था इसलिये वे ज़्यादा नहीं खा सके।

कुछ खाने के बाद ही उन्होंने पूछा — "बच्चों क्या तुम हमारे साथ नहीं खाओगे?"

बच्चे बोले — "नहीं हम तो नहीं खा सकते पर हॉ शायद हमारे घोड़े भूखे होंगे।"

यह कह कर वे अपने घोड़े मेज के पास ले आये। तभी राजकुमार बोला "बच्चों लकड़ी के घोड़े खाना नहीं खा सकते।"

बच्चे बोले — "ऐसा आपको लगता है पर शायद आप यह नहीं जानते कि कुत्ते आदमियों के बच्चे नहीं होते जैसे कि हम हैं।"

यह सुन कर तो राजकुमार खुशी से उछल पड़ा। उसने अपने दोनों बच्चों को गले से लगा कर खूब चूमा। इसी समय बच्चों की मॉ भी बाहर आ गयी तो उसे देख कर राजकुमार ने उसको जो जो परेशानियॉ झेलनी पड़ी उन सबके लिये उससे कई बार क्षमा मॉगी।

फिर उन दोनों ने जबसे वे अलग हुए थे तबसे अब तक जो कुछ भी उनके साथ हुआ था सब एक दूसरे को बताया। अब वे मिल कर बहुत खुश थे। राजकुमारी और बच्चों ने राजकुमार के राज्य वापस जाने की तैयारी आरम्भ कर दी।

जब वे लोग कुछ दूर पहुँच गये तो उन्होंने महल से विदा लेने के लिये एक बार मुड़ कर देखा तो लो वहॉ तो कोई महल नहीं था। लगता था जैसे या तो उस महल को हवा उड़ा कर ले गयी थी या फिर वह महल वहॉ कभी था ही नहीं।

देव रास्ते में ही छिपा खड़ा था पर राजकुमार ने उसे देख लिया और मार दिया। उसके बाद वे बिना किसी और उल्लेखनीय घटना के अपने घर आ गये। जब बादशाह चल बसे तो राजकुमार वहॉ का बादशाह बन गया।

तीन सेब आसमान से गिरे। एक कहानी सुनाने वाले का था। दूसरा कहानी सुनने वाले का था और तीसरा मेरा था।

19 दुख की चिड़िया[38]

यह बहुत पुरानी बात कि एक बादशाह के एक बेटी थी जो अपनी आया को बहुत प्यार करती थी। वह उसको छोड़ती ही नहीं थी। एक दिन राजकुमारी ने उसे कुछ उदास देखा तो उससे पूछा — "तुम क्या सोच रही हो?"

आया बोली — "मैं दुखी हूॅ।"

राजकुमारी ने फिर पूछा — "यह दुख क्या होता है? इसे मुझे भी दो न।"

आया बोली — "ठीक है।" कह कर वह शारशी[39] गयी जहॉ उसने पिंजरे में बन्द दुख की चिड़िया खरीदी थी। वहॉ से उसने एक चिड़िया और खरीदी और ला कर राजकुमारी को दे दी। वह उसको देख कर इतनी खुश हुई कि अब वह उससे दिन रात खेलती रहती थी।

कुछ समय बाद सुलतान की बेटी अपनी दासियों के साथ के साथ एक चिड़ियाघर देखने गयी तो वह अपनी चिड़िया को भी उसके पिंजरे में रख कर वहॉ ले गयी। उसने वह पिंजरा एक पेड़ पर टॉग दिया।

अचानक उसने वहॉ बोलना शुरू कर दिया।

---

[38] The Bird of Sorrow. Tale No 19

[39] Tscharschi – market

वह बोली — "ओ सुलताना। मेहरबानी कर के मुझे इस पिंजरे में से निकालो ताकि मैं दूसरी चिड़ियों के साथ खेल सकूँ। मैं फिर वापस आ जाऊँगी।" सो राजकुमारी ने अपनी प्यारी चिड़िया को पिंजरे में से बाहर निकाल दिया।

कुछ घंटे बाद जब राजकुमारी चिड़ियाघर में ऐसे ही घूम रही थी तो चिड़िया वहॉ आयी अपनी मालकिन को पकड़ा और ले कर एक ऊँचे पहाड़ की चोटी पर उड़ गयी और बोली — "देखो यह दुख है। मैं तुम्हारे लिये इसी तरह की और तैयारी करूँगी।" कह कर वह वहॉ से उड़ गयी।

राजकुमारी को भूख और प्यास दोनों लगे थे। वह इधर उधर घूमती रही जब तक कि उसे एक गड़रिया मिला जिससे उसने अपने कपड़े बदल लिये। इस तरह से उसने अपने आपको छिपा लिया ताकि वह अपनी पहले से भी अच्छी सुरक्षा कर सके।

बहुत देर तक घूमने के बाद वह एक गॉव में आयी। वहॉ उसे एक कौफी की दूकान ढूँढी और उसमें अन्दर जा कर उसके मैनेजर से उसे कोई नौकरी देने की विनती की। उसने उसे नौकरी दे दी। शाम को वह उसके ऊपर अपनी कौफी की दूकान छोड़ कर घर चला गया। दूकान बन्द कर के राजकुमारी वहीं सो गयी।

आधी रात वह दुख की चिड़िया प्रगट हुई उसने सारे प्याले और प्लेटें तोड़ दीं और बोली — "देखो यह दुख है। मैं तुम्हारे लिये इसी तरह की और तैयारी करूँगी।"

कह कर वह वहॉ से उड़ गयी। राजकुमारी बेचारी सारी रात यही सोचती रही कि वह अपने मालिक से सुबह क्या कहेगी। जब सुबह हुई तो कौफी की दूकान का मालिक दूकान पर लौटा तो वह भयानक तोड़ फोड़ देखी तो उसने उसे बहुत पीटा और बाहर निकाल दिया।

वह बहुत ज़ोर से रो पड़ी। वह फिर वहॉ से चलती रही तो चलते चलते एक दर्जी की दूकान पर आयी। क्योंकि बेराम[40] के त्यौहार की बहुत बड़ी तैयारियॉ हो रही थीं दर्जी सराय के लोगों के और्डर्स लेने में बहुत व्यस्त था। सो उसे एक सहायक चाहिये था। उसने उस लड़की को एक नौजवान समझा और उसे अपनी सहायता के लिये रख लिया।

एक दो दिन बाद दर्जी अपने घर गया और उसे दूकान पर छोड़ गया। जब शाम हुई तो उसने दूकान बन्द की और सो गयी। आधी रात को वह चिड़िया फिर आयी।

उसने वहॉ रखे सारे कपड़ों को काट डाला और लड़की को जगा कर बोली — "देखो यह दुख है। मैं तुम्हारे लिये इसी तरह की और तैयारी करूँगी।" कह कर वह वहॉ से उड़ गयी।

अगले दिन दर्जी सुबह जब अपनी दूकान में आया और अपनी दूकान की हालत देख कर उसने उसे बहुत डॉटा पीटा और निकाल दिया।

---

[40] Beyram – a Turkish national and religious festival

वह फिर वहॉ से निकली तो चलते चलते वह एक झालर बनाने वाले की दूकान में पहुँची। वहॉ जब वह रात को सो गयी तो वह चिड़िया आयी और सारी झालरें काट गयी और लड़की को जगा कर बोली — "देखो यह दुख है। मैं तुम्हारे लिये इसी तरह की और तैयारी करूँगी।" कह कर वह वहॉ से उड़ गयी।

जब सुबह को मालिक दूकान पर आया उसने उसे बहुत निर्दयता से पीटा और बाहर निकाल दिया। दुख से पागल सी हुई राजकुमारी फिर एक सुनसान रास्ता ले कर यह सोचते हुए कि यह चिड़िया तो उसे हमेशा तंग करती ही रहेगी वह एक पहाड़ी दर्रे में चली गयी जहॉ वह कई दिनों तक रही।

फिर उसे भूख और प्यास लगी और जंगली जानवरों से डर लगा इसलिये उसकी रातें पेड़ों के ऊपर बीततीं।

एक दिन एक बादशाह का बेटा शिकार के लिये निकला तो उसने उसे एक पेड़ पर बैठे देख लिया। उसने समझा कि वह कोई चिड़िया है तो उसने उस पर अपना तीर चला दिया। इत्तफाक से वह केवल पेड़ की एक शाख को ही लगा।

शाहज़ादा जब अपना तीर वापस लेने के लिये पेड़ तक गया तो उसने देखा कि वहॉ कोई चिड़िया नहीं बल्कि एक आदमी बैठा था। उसने पूछा — "क्या तुम कोई इन हो या जिन हो?"

राजकुमारी ने जवाब दिया — "न तो मैं कोई इन हूँ और न ही मैं कोई जिन हूँ। मैं तो तुम्हारी तरह से बस एक मनुष्य हूँ।"

तब शाहज़ादे ने उसे पेड़ से नीचे उतर आने के लिये कहा। उस गड़रिये को वह अपने महल ले गया।

वह वहॉ नहायी धोयी और उसने एक लड़की पोशाक पहनी तो शाहज़ादे ने देखा कि वह तो बहुत सुन्दर थी जैसे पूर्णमासी का चॉद हो। वह तुरन्त ही उसके प्रेम में पागल हो गया।

बिना कोई देर किये वह अपने पिता के पास गया और उनसे उस लड़की से अपनी शादी की स्वीकृति मॉगी तो सुलतान ने उस लड़की को अपने सामने बुलवाया। उसने उसकी सुन्दरता को देखा तो उसकी शान और कोमलता ने उसका मन मोह लिया। दोनों की शादी कर दी गयी और उनकी शादी का उत्सव **40** दिन और **40** रात चला।

समय आने पर उनके एक बेटी हुई जो बहुत ही सुन्दर और कोमल थी। उसको देखने से ही लगता था कि समय आने पर वह भी अपनी मॉ की तरह ही सुन्दर हो जायेगी।

एक रात आधी रात को वही चिड़िया फिर से राजकुमारी के कमरे में आयी और बच्ची को उठा कर ले गयी। वह मॉ के होठों पर खून भी लगा गयी। फिर उसने राजकुमारी को उठाया और कहा — "देखो यह दुख है। मैं तुम्हारे लिये इसी तरह की और तैयारी करूॅगी।" कह कर वह वहॉ से उड़ गयी।

सुबह हुई तो राजकुमार को अपनी बिटिया कहीं दिखायी नहीं दी और देखा कि उसकी पत्नी के होठों पर तो खून लगा है। वह

बेचारा भागा भागा अपने पिता के पास गया और जा कर उनसे सारा हाल कहा।

बादशाह ने पूछा — "तुम उसे पहाड़ पर से लाये थे न। मुझे लगता है कि वह पहाड़ की बेटी होगी। वे तो मनुष्य का मॉस खाती हैं। मैं तो तुम्हें यही सलाह दूँगा कि तुम उसको छोड़ आओ।" पर नौजवान शाहज़ादे ने उससे अपनी पत्नी की तरफ से बहुत सिफारिश की और अपने पिता को मनाने में सफल हो गया।

कुछ समय बाद उनके फिर से एक बेटी हुई। उसको भी चिड़िया वैसे ही हाल में चुरा कर ले गयी। इस बार सुलतान ने शाहज़ादे की एक न सुनी और लड़की को मर डालने का हुक्म सुना दिया। पर इस बार भी शाहज़ादे ने उन्हें किसी तरह से मना लिया।

कुछ समय बाद उनके एक बेटा हुआ। शाहज़ादे ने सोचा कि अगर इस बार भी यह बच्चा गायब हो गया तो सुलतान अबकी बार उसकी पत्नी को नहीं छोड़ेगा। सो वह सारी रात जाग कर पहरा देता रहा और अपने प्यारों को देखता रहा। पर कब तक? प्रकृति ने उसके ऊपर कब्जा किया और वह सो गया।

इस बीच चिड़िया वहॉ आयी बच्चे को चुराया लड़की के होठों पर खून लगाया और उड़ गयी।

जब मॉ जागी और देखा कि उसका बच्चा नहीं है तो वह बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। उसके रोने की आवाज सुन कर शाहज़ादा जागा तो वह भी बच्चे को वहॉ न देख कर और अपनी पत्नी के मुँह

से खून टपकता देख कर भागा भागा अपने पिता के पास गया और इस अजीब घटना को उन्हें बताया।

अबकी बार तो बादशाह का गुस्सा बहुत बढ़ गया और उसने लड़की को मार डालने का हुक्म सुना दिया। फॉसी लगाने वाले बुलाये गये तो वे तो उसकी सुन्दरता देख कर इतने अधिक प्रभावित हुए कि वे तो उसकी सुन्दरता को देखते ही रह गये। उसके दुख पर उनको दया आने लगी।

उन्होंने उससे कहा — "हमारा बिल्कुल दिल नहीं करता कि हम तुम्हें मारें। तुम जहॉ जाना चाहो जा सकती हो। बस इतना करना कि इस महल की तरफ भी कभी मत आना।" बेचारी बदकिस्मत लड़की अपनी बदकिस्मती पर रोती हुई फिर पहाड़ की तरफ चली गयी।

और फिर एक दिन फिर से वह चिड़िया उसके सामने प्रगट हुई उसने उसको पकड़ा और एक बहुत शानदार महल में ले गयी। वहॉ पहुॅच कर उसने लड़की को नीचे उतारा और अपने पंख हिलाये। अब वहॉ वह चिड़िया नहीं थी बल्कि अचनाक ही एक नौजवान खड़ा हुआ था।

वह उसका हाथ पकड़ कर उसे महल में ऊपर ले गया। वहॉ पहुॅच कर तो उसने एक बहुत ही अलौकिक दृश्य देखा। कई दासियों से घिरे हुए तीन सुन्दर चमकते हुए खुश बच्चे उसके पास आये।

जैसे ही उसकी दृष्टि उन पर पड़ी तो उसकी ऑखें तो खुशी के ऑसुओं से भर गयीं और उसका दिल उनके लिये स्नेह से भर गया।

नयी खुश राजकुमारी को साथ ले कर वह शाही कमरे में ले गया जिसमें कीमती कालीन बिछे हुए थे और सब प्रकार के आराम की वस्तुओं से भरा हुआ था।

वहॉ पहुॅच कर नौजवान लड़की से बोला — "हालॉकि मैंने तुम्हें बहुत कष्ट दिया तुम्हारे बच्चों को छीन लिया और तुम्हें मौत के दरवाजे पर ला कर खड़ा कर दिया फिर भी तुमने धीरज से उस सबको सहा और मुझे धोखा नहीं दिया।

इसके इनाम में मैंने तुम्हारे लिये यह शानदार महल बनवाया है जिसमें अब मैं तुम्हारे प्यारे लोगों को ले आऊॅगा। देखो अपने बच्चों को देखो। आज से ओ सुलताना मैं तुम्हारा गुलाम हूॅ।"

राजकुमारी जैसे उड़ते हुए अपने बच्चों के पास पहुॅच गयी। उसने उन सबको गले से लगाया चूमा और बहुत प्यार किया।

लेकिन राजकुमार का क्या हुआ राजकुमार तो बेचारा अपनी पत्नी अपने बच्चों दोनों के लिये ही दुखी था जिनके लिये कि वह सोचता था कि वे सब अब मर चुके हैं। अब वह अपने दिन अपने अफीम सूॅघने वाले के साथ बिता रहा था जो उसे कई बेकार की कहानियॉ सुना सुना कर खुश करने की कोशिश कर रहा था।

एक दिन जब अफीम खत्म हो गयी तो उस बूढ़े ने राजकुमार कुछ और अफीम खरीदने के लिये शारशी जाने की इजाज़त मॉगी। जब वह अफीम खरीदने जा रहा था तो उसने रास्ते में वह देखा जो उसने पहले कभी नहीं देखा था।

उसने देखा कि एक बहुत बड़ा और शानदार जनानखाना बना हुआ है। बूढ़े ने सोचा "यह तो बड़ी अजीब बात है। मैं तो इस सड़क पर अक्सर ही जाता हूॅ पर यह महल मैंने यहॉ कभी नहीं देखा। इसे कब बनाया गया होगा। मुझे इसे देखना चाहिये।"

अब जिस सुलताना का यह महल था वह उस समय अपनी एक खिड़की पर बैठी हुई थी। उसने अपने पति के अफीम सूॅघने वाले को पहचान लिया। वह गुलाम जो पहले दुख की चिड़िया थी उसके पास ही खड़ा था। उसने आदरपूर्वक उससे कहा — "क्या कहती हैं सुलताना। क्या मैं इस बूढ़े कहानी कहने वाले के साथ कोई चाल खेलूॅ।"

फिर उसने एक जादू का फूल उस बूढ़े की तरफ फेंका जो उसके पैरों के पास गिरा। बूढ़े ने उसे उठा लिया और उसकी नशीली महक को सूॅघने लगा। उसे सूॅघ कर वह बुड़बुड़ाया — "अगर तुम्हारा यह फूल इतना सुन्दर है तो तुम कितनी सुन्दर होगी।" सो बजाय अफीम खरीदने जाने के वह महल में घुस गया।

उधर जब बूढ़े को आने में देर हो गयी तो राजकुमार को चिन्ता हो गयी। उसने अपने नौकर को उसे ढूॅढ कर लाने के लिये भेजा।

नौकर जब महल के दरवाजे तक पहुँचा जो राजकुमारी के गुलाम ने जानबूझ कर खुला छोड़ दिया था तो वह उसके अन्दर बूढ़े को ढूँढने चला गया। रास्ते में उसे बहुत सारी दासियॉ मिल गयीं। वे उसे ऊपर ले गयीं।

ऊपर ले जा कर उन्होंने उस नौकर को जादूगर गुलाम को सौंप दिया। गुलाम ने उससे विनती की कि वह अपनी ऊपर की पोशाक उतार दे और उसके पीछे पीछे आये।

उसने अपनी ऊपर की पोशाक तो आसानी से उतार दी पर नौकर को यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि वह लाख कोशिश करने के बाद भी अपनी फ़ैज़[41] नहीं उतार सका। इस पर जादूगर गुलाम ने उसे फ़ैज़ न उतारने के कारण बाहर जाने के लिये कहा। सो उस नौकर को महल से बाहर निकाल दिया गया।

पर फिर एक बड़ी अजीब सी बात हुई। जैसे ही वह महल से बाहर निकला उसकी फ़ैज़ उसके सिर से अपने आप ही गिर पड़ी। रास्ते में उसने अफीम पीने वाले बूढ़े को पकड़ लिया।

इस बीच अपने नौकर के इतनी देर तक लौट कर न आने के कारण बहुत परेशान था तो उसने अपने खजॉची को उनके देखने के लिये भेजा। खजॉची को वे दोनों रास्ते में ही मिल गये तो उसने उन दोनों से पूछा कि रास्ते में ऐसा क्या हो गया था जिसकी वजह से उन्हें इतनी देर हो गयी।

---

[41] Faiz means Cap or Turban – a cloth worn on the head

बूढ़े अफीम पीने वाले ने जवाब दिया — "रास्ते में एक महल है। अगर उस महल से तुम्हारे ऊपर कोई गुलाब का फूल फेंका जाये तो उसे उठाना तो बिल्कुल नहीं पर अगर उठा भी लो तो सूँघना तो बिल्कुल भी नहीं। वरना उसके नतीजे के जिम्मेदार तुम खुद होगे।"

नौकर बोला — "और अगर तुम उस महल में जाओ भी तो अपनी फ़ैज़ बाहर ही उतार कर जाना।"

खजॉची ने दोनों की कही हुई बातों को कुछ अजीब सा समझा फिर भी उनकी कही हुई बातों को हॅसी की बात समझ कर वह महल में घुसा। अन्दर पहुॅच कर ऊपर जाने से पहले उसे एक गाउन पहनने के लिये कहा गया।

जब वह कपड़े बदलने के लिये अपने कपड़े उतार रहा था तो उसने देखा कि उसकी शलवार तो उससे उतर ही नहीं रही है सो उसको भी महल से बाहर भेज दिया गया। पर जैसे ही वह महल से बाहर निकला तो उसकी शलवार अपने आप ही नीचे गिर पड़ी।

अब राजकुमार से नहीं सहा गया। वह अपने नौकरों की इस अजीब सी अनुपस्थिति से बहुत परेशान हुआ तो वह खुद ही इस सबका पता लगाने के लिये चला कि उन सबका क्या हुआ। वे तीनों उसे रास्ते में ही मिल गये तो तीनों ने मिल कर उसे बड़े उत्साह से अपनी अपनी सलाह दी।

बूढ़े अफीम पीने वाले ने कहा "अगर आपके उपर कोई गुलाब का फूल फेंका जाये तो उसे बिल्कुल मत सूँघियेगा।" नौकर ने कहा "जब आप अन्दर घुसें तो अपनी फ़ैज़ बाहर ही छोड़ जायें।" खजॉची ने कहा "अन्दर घुसने से पहले ही अपनी शलवार बाहर उतार कर जाइयेगा।" राजकुमार इन सबकी ये अजीब अजीब सी सलाहें सुन कर आश्चर्य में पड़ गया।

फिर भी वह उस महल की तरफ चला और दरवाजे के अन्दर जा कर गायब हो गया। वहॉ उसका हर प्रकार से स्वागत हुआ और उसको एक बहुत बढ़िया कमरे में ले जाया गया। इस कमरे में एक बहुत सुन्दर स्त्री और तीन प्यारे बच्चे बैठे हुए थे।

स्त्री ने अपनी सबसे बड़ी बेटी को एक नीचा स्टूल दिया दूसरी बेटी को एक तौलिया दिया और बेटे को एक थाली और उसमें नाशपाती रखा एक कटोरा और एक चम्मच दी।

बड़ी बेटी ने स्टूल नीचे रखा दूसरी बेटी ने राजकुमार को तौलिया दिया और सबसे छोटे ने उसके सामने थाली रखी और उसके पास ही बैठ गया।

राजकुमार ने पूछा — "आपके यहॉ नाशपाती को चम्मच से खाने की रीति कबसे चली आ रही है?"

तीनों ने एक साथ जवाब दिया — "जबसे आदमी ने आदमी को खाना सीखा।"

राजकुमार की याद ने एक झटका खाया और उसकी ऑखों के सामने एक पुरानी घटना घूम गयी।

इसी समय जादूगर वहॉ आया और बोला — "राजकुमार अपनी सुलताना को पहचानो। अपने बच्चों को देखो।" यह सुन कर सब एक दूसरे के गले लग गये और खुशी से रोने लगे।

जादूगर आगे बोला — "मेरे शाहज़ादे। मैं आपका गुलाम हूॅ। अगर आप मुझे आजादी दें तो मैं भी अपने माता पिता से मिलना चाहता हूॅ।" उसकी उन सबको मिलवाने की कृतज्ञता से खुश हो कर राजकुमार ने उसे आजादी दे दी।

और खुद वे सब लोग एक नया त्यौहार मनाने में लग गये जिसमें उन्होंने यह निश्चय किया कि वे अब फिर कभी अलग नहीं होंगे।

20 जादुई अनार की शाख और सुन्दरी[42]

एक बादशाह था जो हर समय बहुत उदास रहता था। तो एक दिन उसने सोचा कि वह अपने वज़ीर के साथ कहीं घूम कर आये। जाने से पहले उसने अपने वज़ीर को बुलाया और उससे कहा — "इसलिये कि हमारे जाने के दिन का किसी को पता न चले मेरी शक्ल का कोई आदमी ढूँढो जो मेरे पीछे मेरी गद्दी पर बैठ सके।"

वज़ीर ने पूछा — "ऐसा आदमी कैसे ढूँढा जाये?"

बादशाह बोले — "ऐसा करते हैं कि कुछ दिन अपने राज्य में चक्कर काटते हैं। हो सकता है कि हमें कोई मिल ही जाये।"

सो दोनों ने अपना अपना वेश बदला और अपने राज्य में घूमने चल दिये। चलते चलते वे कुछ खाने के लिये एक सराय में घुसे तो वहॉ उन्हें नशे में धुत एक आदमी दिखायी दे गया जो बिल्कुल बादशाह की शक्ल का था।

सो वे सराय के मालिक को एक ओर ले गये और उससे कहा कि वह उसे उसके मन भर तक पीने दे जब तक कि वह बिल्कुल ही बेहोश न हो जाये और जब रात हो जाये तब वह उसे सड़क पर फेंक दे। यह सब हो गया।

आधी रात को बादशाह ने वज़ीर को वहॉ भेजा ताकि वह उस आदमी को छिपा कर एक टोकरी में रख कर महल ले आये। महल

[42] The Enchanted Pomegranate Branch and the Beauty. Tale No 20

ला कर उसको नहलाया गया। उसे शाही कपड़े पहनाये गये और उसे बादशाह के पलंग पर लिटा दिया गया। अब बादशाह और वज़ीर के लिये अपनी यात्रा पर जाने के लिये पूरी तैयारी थी।

जब वह शराबी सुबह को उठा तो उसने देखा कि वह तो किसी बादशाह के महल में था। उसने सोचा "यह मुझे क्या हो गया है। शायद मैं कोई सपना देख रहा हूॅ या फिर मैं मर गया हूॅ और स्वर्ग में हूॅ।"

यह सोच कर उसने ताली बजायी तो तुरन्त ही नौकर उसके लिये एक बेसिन और हाथ धोने के लिये पानी ले कर वहॉ हाजिर हो गये। हाथ मुॅह धो कर उसने कौफी पी और फिर अपनी चिलम जलायी। उसने आनन्द में भर कर कहा — "अब तो मैं बादशाह हूॅ।"

क्योंकि उस दिन शुक्रवार था सो नौकरों ने उससे विनती की कि आज उसे नमाज पढ़नी थी। वह जगह जहॉ वह रहता था वह जामी[43] थी इसलिये उसने यह तय किया था कि यह नमाज भी वहीं पढ़ी जाये। सो सारे लोग उसकी तैयारी करने के लिये वहॉ दौड़े गये।

जबसे उस शराबी ने अपना घर छोड़ा था तबसे **15** दिन बीत चुके थे। जब उसकी पत्नी ने सुना कि बादशाह सलामत उस दिन की नमाज पढ़ने के लिये उसकी स्थानीय मस्जिद आ रहे हैं तो उसने

[43] Djami – Masjid

एक अर्जी तैयार की जिसे उसने बादशाह को मस्जिद में नमाज पढ़ने के बाद जाने के समय दे दिया।

बादशाह ने उसकी अर्जी ले ली और उसे पढ़ा। उसमें लिखा था "ओ बादशाह। मेरा एक पति है जो दिन रात पीने के सिवा कुछ नहीं करता। वह **15** दिन से घर में नहीं है और न ही घर के खाने के लिये कोई पैसा भेजा है इसलिये हम लोग भूख से मर रहे हैं।"

बादशाह ने तुरन्त ही हुक्म दिया कि उस स्त्री का घर गिरा दिया जाये और उसके लिये एक नया और बढ़िया घर बनवाया जाये। उसे **500** पियास्त्रे महीने के दिये जायें। और यह कर दिया गया।

नये बादशाह के तीन शत्रु थे। एक सराय का मालिक जिसने उसे सराय के बाहर फेंक दिया था। दूसरा कसाई जिसने उसकी पिटायी की थी क्योंकि उसने उससे जो मॉस उधार खरीदा था उसके पैसे नहीं दिये थे। तीसरा एक रैस्टौरैन्ट का मालिक जो उसको खाना नहीं देता था। उसने उन तीनों को मरवाने का हुक्म दे दिया। और यह भी कर दिया गया।

इस बीच बादशाह और वज़ीर काफी जगह घूम लिये। एक दिन वे एक घाटी में पहुॅचे जहॉ उन्होंने रुकने का विचार किया। उस घाटी में एक नाला बह रहा था जिसमें उन्हें एक सेब मिला जिसे उन्होंने खा लिया।

अब बादशाह को याद आया कि जब वह घर से चला तब उसने यह कसम खायी थी कि वह यात्रा में कोई ऐसा काम नहीं

करेगा जो उसे नहीं करना चाहिये। इसने उसे बेचैन कर दिया। पर उसके पास इस बात को जानने का कोई साधन नहीं था कि वह सेब उसको खाना चाहिये था या नहीं।

बादशाह बोला — "अब हम और तो कुछ कर नहीं सकते सिवाय इसके कि हम इसके मालिक के पास जायें और उससे इजाज़त लें।"

सो वे चले तो आगे चलने पर उनको एक किसान मिला जो अपने खेत में हल चला रहा था। उसे सलाम कर के उन्होंने उससे सेब के बारे में पूछा। जब बात खत्म हो गयी तब किसान ने उनको वहॉ सेब के पेड़ों का एक बागीचा दिखाया जिसके किसी पेड़ से गिरा सेब उन्होंने खाया होगा।

उसने एक घर की तरफ भी इशारा किया जिसमें उस बागीचे का मालिक रहता था। बादशाह और वज़ीर दोनों उस मकान की तरफ गये और जा कर दरवाजा खटखटाया तो एक बुढ़िया ने दरवाजा खोला। उससे उन्होंने सेब की घटना बतायी।

बुढ़िया बोली कि यह बागीचा उसकी बेटी का था सो इस बारे में वह उसकी सलाह लेने गयी। बेटी ने वापसी में यह कहलवाया कि अगर वह उससे शादी करने के लिये तैयार है तो वह सेब उसे खाने की इजाज़त है।

बादशाह इस बारे में पहले तो सोचता रहा फिर अन्त में उस लड़की को अपनी पत्नी बनाने के लिये तैयार हो गया।

जब बुढ़िया ने यह सुना तब वह बोली कि उसकी बेटी के हाथ पॉव टेढ़े हैं, वह गंजी है और इतनी बदसूरत है कि कोई भी आदमी उसकी तरफ देखना भी नहीं चाहता।

बादशाह बोला — "कोई बात नहीं। मैं अपना वायदा पूरा करूँगा।"

उसने अपने वज़ीर से उसी दिन शादी का इन्तजाम करने के लिये कहा क्योंकि अगले दिन उसे वहॉ से आगे जाना था। सो वे लोग पास के गॉव में जा पहुँचे। जैसे ही वह लड़की वहॉ आयी तो बादशाह तो उसे देख कर आश्चर्यचकित रह गया।

उसके मुँह से निकला — "सुलताना। तुम्हारी मॉ तो कह रही थीं कि तुम बहुत बदसूरत हो पर तुम तो दुनियॉ की सबसे सुन्दर लड़की हो।"

लड़की ने कहा कि उसकी मॉ उसके बारे में हमेशा ही ऐसा कहा करती थी। शादी हो गयी। अगले दिन वज़ीर ने बादशाह को ध्यान दिलाया कि उसे आज आगे चलना है। बादशाह बोले कि उन्होंने उसी गॉव में पॉच छह दिन और रहने का अपना मन बना लिया है।

पर वह वहॉ **40** दिन रहे। फिर **41**वें दिन उन्होंने अपनी पत्नी से कहा — "अब इससे अधिक और मैं यहॉ नहीं रह सकता। अब मुझे जाना ही होगा। अगर तुम्हारे कोई बेटा हो और वह बड़ा हो

जाये तो यह ताबीज उसकी बाँह पर बाँध देना और उसे फलाँ फलाँ देश भेज देना जहाँ वह ओगुरसुज़ और हाजिरसीज़ को पूछ लेगा।[44]

यही वे दो नाम थे जो बादशाह और वज़ीर ने अपनी यात्रा पर इस्तेमाल करने का फैसला किया था।

इसके बाद वे अपने अपने घोड़ों पर सवार हुए और आगे चल दिये। जल्दी ही वे उसी किसान से मिले जिससे रास्ता पूछ कर वे यहाँ आये थे पर वे वहाँ रुके नहीं और सीधे घर चले गये।

अब जब वे घर पहुँच गये थे तो उनका पहला काम यह था कि वह नकली बादशाह से छुटकारा पाना। सो इस योजना के अनुसार आधी रात को जब सब सो गये तब उन्होंने उसे एक टोकरी में रख कर उसी सराय के पास बाहर रखवा दिया जहाँ से कुछ महीने पहले उसे उठवा कर लाया गया था।

जब वह आदमी जागा तो उसने देखा कि वह तो सड़क पर पड़ा हुआ है। "मैं शायद सपना देख रहा होऊँगा।" यह सोच कर उसने फिर से आँखें बन्द कर लीं। फिर उसने ताली बजायी तो सराय का एक नया मालिक उसके सामने आ गया।

उसने पूछा "कौन है?"

शराबी ने उससे कहा कि वह उससे मजाक करना बन्द करे नहीं तो उसे तुरन्त ही फाँसी पर लटका दिया जायेगा। फिर वह ज़ोर से बोला — "दरवाजा खोलो। मैं बादशाह हूँ।"

---

[44] Ogursuz and Hajyrsyz

सराय के मालिक ने दरवाजा खोला और एक शराबी को देख कर उसे बहुत ही निर्दयता से ठोकर मार दी। शराबी गुस्से में भर कर चिल्लाया — "ओ गधे। मैं बादशाह हूॅ। मैं तुझे तेरे इस काम के लिये निश्चित रूप से फॉसी पर लटकवा दूॅगा।"

इसके जवाब में सराय के मालिक ने अपने आपको बादशाह कहने वाले को बहुत मारा जब तक वह बेहोश नहीं हो गया। उसके बाद उसे पागलखाने भेज दिया गया।

इस बीच बादशाह ने अपने वज़ीर या लाला से कहा — "ओ लाला। हम लोग उस आदमी को बादशाह की जगह ले कर आये और जब हमारा काम निकल गया तब हमने उसे निकाल फेंका। ज़रा उसे देख कर तो आओ कि उसका हुआ क्या।"

बादशाह के कहे अनुसार वज़ीर सराय के मालिक के पास गया और उससे उस आदमी के बारे में बात की जिसे वे वहॉ रात में वहॉ छोड़ गये थे। उसने बताया कि वह आदमी तो पागल हो गया और उसे पागलखाने भेज दिया गया।

वज़ीर पागलखाने गया तो वहॉ पहुॅच कर उसने देखा कि वह बराबर यही चिल्ला रहा था कि वह बादशाह है वह बादशाह है। उसे तो इतना पीटा गया कि वह तो मरने मरने को हो रहा था। वज़ीर ने कहा उसे यह नहीं कहना चाहिये था कि वह बादशाह है नहीं तो उसका मामला और बुरा हो सकता था।

यह देख कर वह शराबी सुपरवाइज़र के पास गया और बोला — "साहब मैं तो एक शराबी हूॅ बादशाह नहीं हूॅ।" यह सुनने के बाद उसे फिर पागल नहीं समझा गया और उसे छोड़ दिया गया।

उसने पहले तो सोचा कि वह अपने घर चला जाये पर जैसे ही उसकी पत्नी ने उसकी ओर देखा तो चिल्लायी — "ओ बेशर्म। दूर हो जा मेरी नजरों के सामने से। तू अब तक कहॉ था।

इसमें कोई शक नहीं है कि बादशाह ने मेरे लिये एक नया मकान बनवाया और मुझे पेन्शन दी। लगता है कि तू उसी को मेरे साथ बॉटने के लिये आया है।"

स्त्री उसे घर के अन्दर नहीं आने दे रही थी कि तभी वज़ीर उधर से जा रहा था तो उसने यह गुस्से से भरा वार्तालाप सुना तो वह स्त्री के पास गया और उससे कहा — "अपने पति को अन्दर आने दो नहीं तो यह तुमसे फिर से वापस ले लिया जायेगा।"

स्त्री ने वज़ीर को पहचान लिया और पति को अन्दर आने दिया।

इस योग्य जोड़े को हम शान्ति से रहते छोड़ कर अब बागीचे की मालकिन के पास चलते हैं। ठीक समय पर उसके एक बेटा हुआ। जब वह बड़ा हो गया तो उसकी मॉ को बादशाह का दिया हुआ ताबीज याद आया।

उसने अपने बेटे को अपने पास बुलाया और उससे कहा — "तुम्हारे पिता तुम्हारे लिये यह ताबीज छोड़ गये थे और मुझसे कह

गये थे कि इसे उसकी बॉह पर बॉध कर फलॉ फलॉ देश भेज देना और उससे कहना कि वह ओगुरसूज़ और हाजीसीज़ के बारे में पता कर ले। यह सुन कर नौजवान ने अपनी बॉह पर वह ताबीज बॉध लिया और बादशाह के देश चल दिया।

रास्ते में उसे एक किसान मिला तो उसने उसके साथ कुछ आराम किया। वहॉ उससे बात करते समय किसान ने कहा कि ओगुरसूज़ तो उसका दोस्त है। उसने उसको सलाह दी कि वह वहॉ अकेले न जाये।

लड़का मान गया और उसने उसके बेटे को अपने साथ ले लिया। दोनों अपनी यात्रा पर चल पड़े। चलते चलते वे एक कुँए के पास आये। दोनों को बहुत प्यास लग आयी थी सो किसान के बेटे ने लड़के से कहा कि "प्यास बहुत लगी है यहॉ रुक कर थोड़ा पानी पी लेते हैं।"

किसान के बेटे ने उससे यह कहा — "मैं तुमको कुँए में पहले नीचे उतार देता हूँ ताकि तुम पहले पानी पी सको। बाद में तुम मुझे नीचे उतार देना।"

सो किसान के बेटे ने शाहज़ादे को पहले कुँए में नीचे उतार दिया। शाहज़ादे ने पानी पिया और जब वह ऊपर आने ही वाला था कि ऊपर से किसान के बेटे ने उससे कहा — "कसम खाओ कि "तुम ओगुरसूज़ के बेटे हो और मैं किसान का बेटा हूँ और मैं यह भेद किसी पर नहीं खोलूँगा।" नहीं तो तुम जहॉ हो वहीं रहो।"

शाहज़ादा तो इस समय लाचार था सो उसने यह कसम खा ली। किसान के बेटे ने उसे ऊपर खींच लिया।

फिर वे आगे चले और कुछ सप्ताह बाद ही बादशाह की राजधानी में पहुँच गये। वहॉ वे दोनों ओगुरसूज़ और हाजीसीज़ के बारे में पूछते हुए घूमने लगे।

जव यह बात बादशाह को पता चली तो उसने उन दोनों लड़कों को अपने सामने बुलवाया। उनको महल ले जाया गया। वहॉ जब बादशाह ने पूछा कि उनमें से कौन सा उसका बेटा है तो शाहज़ादे ने दूसरे लड़के की ओर इशारा कर दिया और अपने आपको किसान का बेटा बताया।

सो किसान का बेटा शाहज़ादा बन कर महल चला गया और शाहज़ादे को बादशाह के दरबार में जगह दे दी गयी।

एक बार नकली शाहज़ादे ने सपने में देखा कि उसके पास एक दरवेश आया और उसने उसे राजकुमारी सुन्दरी दी और अपने बर्तन से प्रेम का शर्बत पीने के लिये दिया।

उस समय से वह एक बदला हुआ आदमी हो गया। न वह खाता था न पीता था, न सोता था और न उसे आराम था। वह पीला पड़ता जा रहा था और कमजोर होता जा रहा था। कई जेजा और डाक्टर बुलाये गये पर किसी से कोई फायदा नहीं हुआ। कोई भी उसकी बीमारी को नहीं समझ सका इसलिये उसे कोई दवा भी नहीं दे सका।

एक दिन नकली शाहज़ादे ने बादशाह से कहा — "पिता जी। ये होजा और डाक्टर मुझे ठीक नहीं कर सकते। मेरा इलाज तो राजकुमारी सुन्दरी का प्यार है।"

बादशाह तो नौजवान के ये अजीब से शब्द सुन कर डर गया और उसके लिये भी डर गया। उसने उसको समझाने की कोशिश की — "तुमको उसके बारे में नहीं सोचना चाहिये। यह बहुत खतरनाक है। उसका प्यार तो तुम्हारे लिये केवल मौत ही ले कर आयेगा।

पर वह नौजवान तो पीला और दुबला होता ही गया अब उसकी ज़िन्दगी में कोई खुशी नहीं थी। बादशाह ने कई बार उससे पूछा कि क्या उसको किसी और चीज़ की जरूरत है। पर उसका जवाब हमेशा ही वही होता था – बस राजकुमारी सुन्दरी की।

बादशाह ने सोचा कि अगर उसने उसे नहीं जाने दिया तो वह निश्चित रूप से मर जायेगा और वह खुद उसकी मौत का कारण बनेगा। सो अल्लाह पर भरोसा करते हुए कि वह उस पर अपनी दया दृष्टि रखेगा वह अपने बेटे को जाने की अनुमति देने ही वाला था कि नकली शाहज़ादे ने कहा — "मैं वहॉ खुद नहीं जाना चाहता आप उसे लाने के लिये किसान के बेटे को भेज दें। वह उसे मेरे लिये ले आयेगा।"

बादशाह ने तुरन्त ही किसान के बेटे को बुलवा भेजा और उसे आज्ञा दी कि वह जा कर राजकुमारी सुन्दरी को ढूँढ कर लाये

जिससे कि शाहज़ादा उससे शादी कर सके। असली शाहज़ादे ने कहा "जी सरकार।" और चला गया।

अगले दिन सुबह ही वह अपनी यात्रा पर निकल पड़ा। वह राजकुमारी सुन्दरी की खोज में पहाड़ के ऊपर गया घाटियों से हो कर गया मैदानों को पार कर के गया। कुछ समय बाद वह एक समुद्र के किनारे आया जहॉ रेत पर पड़ी पड़ी एक मछली तड़प रही थी। उसने शाहज़ादे से विनती की कि वह उसे पानी में फेंक दे।

शाहज़ादा राजी हो गया पर उसके उसे पानी में फेंकने से पहले उसने शाहज़ादे को अपने तीन स्केल दिये और कहा "जब तुम किसी मुसीबत में हो तो इनमें से एक को जला देना। मैं तुम्हारी सहायता के लिये आ जाऊॅगी।" शाहज़ादे ने उससे उसके तीनों स्केल ले लिये और उससे समुद्र में डाल दिया।

अब वह एक मैदान में आ गया तो उसे एक चींटी मिली। वह एक शादी में जा रही थी तो उसे देर हो जाती तो उसने भी उससे सहायता मॉगी।

शाहज़ादे ने उसे उठाया अऐर उसके साथियों तक पहुॅचा दिया। जाने से पहले उसने अपना एक पंख दिया और दे कर बोली — "जब तुहारे ऊपर कोई मुसीबत पड़े तो तुम मेरा यह पंख जला देना। मैं तुम्हारी सहायता के लिये आ जाऊॅगी।"

शाहज़ादा वहॉ से चला तो फिर एक घने जंगल में आ गया। वहॉ इसने एक छोटी सी चिड़िया को एक बड़े से सॉप से लड़ते

देखा। चिड़िया ने शाहज़ादे से सहायता मॉगी तो शाहज़ादे ने सॉप को अपनी तलवार से मार कर दो टुकड़े कर दिये और चिड़िया को आजाद करा दिया।

इससे खुश हो कर चिड़िया ने उसे अपने तीन पंख दिये और उससे कहा कि वह अगर किसी मुसीबत में हो तो उनमें से एक पंख जला दे।

उसने फिर अपना डंडा उठाया और पहाड़ के ऊपर चल दिया। अब वह राजकुमारी सुन्दरी के पिता के राज्य में था। वह सीधा महल में चला गया और वहॉ पहुॅच कर बादशाह से विनती की कि वह अपनी बेटी की शादी उससे कर दे।

बादशाह ने कहा कि इसके लिये पहले उसे तीन काम पूरे करने होंगे उसके बाद ही वह उसकी बेटी से बात कर सकता था। तब बादशाह ने एक ऑगूठी ली और उसे समुद्र में फेंक दी। फिर शाहज़ादे से उसे तीन दिन के अन्दर अन्दर लाने के लिये कहा नहीं तो उसको अपनी जान गॅवानी पड़ेगी।

शाहज़ादे को मछली के दिये हुए स्केल्स याद आये सो उसने उनमें से एक स्केल लिया और उसे जला दिया। तुरन्त ही एक छोटी से मछली वहॉ आ गयी और उसने शाहज़ादे से पूछा — "क्या हुक्म है मेरे सुलतान?"

उसने मछली से कहा — "राजकुमारी सुन्दरी की ऑगूठी समुद्र में गिर गयी है मुझे वह ऑगूठी चाहिये।"

मछली तुरन्त ही समुद्र में नीचे गयी पर उसे अँगूठी नहीं मिली। वह एक बार फिर नीचे गयी पर वह उसे तभी भी नहीं मिली सो वह तीसरी बार एक बार फिर गयी नीचे जाते जाते वह सातवें समुद्र तक पहुँची वहॉ से वह एक मछली पकड़ कर लायी।

शाहज़ादे ने उस मछली का पेट फाड़ कर उसके पेट में से राजकुमारी सुन्दरी की अँगूठी निकाली और बादशाह को दे दी। बादशाह ने उसे राजकुमारी को दे दी।

महल के पास ही एक गुफा थी जिसमें राख और बाजरा मिला हुआ पड़ा था। बादशाह ने शाहज़ादे से कहा कि उसका दूसरा काम था बाजरे को उस राख में से अलग करना। शाहज़ादा गुफा में गया और वहॉ जा कर चींटी का पंख जला दिया।

ऐसा करने से वहॉ बहुत सारी चींटियॉ आ कर इकट्ठी हो गयीं और अपना काम करने में लग गयीं। उन्होंने अपना काम उसी दिन खत्म कर दिया। शाम को बादशाह उसे देखने के लिये आया तो उसे देख कर बहुत सन्तुष्ट हो गया कि अब एक भी दाना उस राख में नहीं रह गया था।

बादशाह बोला — "अब एक काम और रह गया है। जैसे ही वह खत्म हो जायेगा मैं तुम्हें राजकुमारी के पास ले जाऊँगा।"

राजा ने तब एक दासी को बुलवाया और उसका सिर दो हिस्सों में बॉट दिया और शाहज़ादे से कहा — "जैसे इस दासी का सिर

काट दिया गया है वैसे ही तुम्हारा सिर भी काट दिया जायेगा अगर तुमने इसे फिर से ज़िन्दा न कर दिया तो।"

नौजवान यह सोचते हुए महल से चला गया कि क्या चिड़िया का पंख जलाने यह दासी ज़िन्दा हो जायेगी। फिर भी उसके पास अब और कोई चारा नहीं था सो उसने चिड़िया का एक पंख जला दिया। एक छोटी चिड़िया वहॉ तुरन्त ही आ गयी और उसके हुक्म का इन्तजार करने लगी।

बड़े भारी दिल से शाहज़ादे ने अपना काम उसे बताया। यह चिड़िया परियों की थी। वह तुरन्त ही ऊॅची उड़ कर गायब हो गयी और फिर एक शीशी में पानी ले कर दोबारा आ भी गयी। वह उससे बोली — "देखो यह स्वर्ग का पानी है जो उस दासी को फिर से ज़िन्दा कर देगा।"

शाहज़ादा उस पानी को महल ले गया दासी के मरे हुए शरीर पर छिड़का ता वह दासी तुरन्त ही ऐसे उठ खड़ी हो गयी जैसे सोते से जागी हो।

राजकुमारी को शाहज़ादे के तीनों कामों के बारे में बताया गया तो वह शाहज़ादे के स्वागत की तैयारी करने लगी। राजकुमारी संगमरमर के एक छोटे से महल में रहती थी। उसके महल के सामने ही सोने का बना हुआ पानी का एक तालाब था। इसमें चार ओर से पानी आ कर गिरता था। ऑगन में एक सुन्दर बागीचा था जो पेड़ों फूलों और चिड़ियों से भरा हुआ था।

जब शाहज़ादे ने इसे देखा तो उसे लगा कि शायद वह स्वर्ग में है। अचानक महल का दरवाजा खुला और बागीचे में इतनी अधिक रोशनी हो गयी कि शाहज़ादा उसकी चमक से चकाचौंध हो गया। राजकुमारी दरवाजे पर अपनी पूरी चमक के साथ खड़ी थी।

वह शाहज़ादे से बात करने के लिये उसके पास आयी पर जैसे ही उसने शाहज़ादे की ओर देखा तो वह तो बेहोश हो गयी। राजकुमारी को महल में ले जाया गया और शाहज़ादा उसके पीछे पीछे गया।

जब राजकुमारी को होश आया तो वह बोली — "ओ शाहज़ादे। तुम शाह सुलेमान के बेटे हो और तुम मेरी सहायता कर सकते हो। रेह देव[45] के बागीचे में अनार की एक शाख गाती है। अगर वह तुम मुझे ला कर दे दो तो मैं फिर हमेशा के लिये तुम्हारी हो जाऊॅगी।"

शाहज़ादा राजकुमारी की इच्छा को पूरी करने के लिये बहुत दूर चला गया। एक महीने तक वह इधर उधर घूमता रहा और अल्लाह से प्रार्थना करता रहा — "ओ अल्लाह। सबको बनाने वाले। मुझे ठीक रास्ता दिखा।"

और यह प्रार्थना करते करते वह एक पहाड़ की तलहटी में पहुॅच गया। वहॉ पहुॅच कर उसने एक बहुत ही भयानक आवाज सुनी जैसे यह दुनियॉ खतम होने वाली हो।

[45] Reh Dev. Reh was the name of a Dev.

चट्टानें और पहाड़ कॉप गये और चारों तरफ अँधेरा छा गया। पर शाहज़ादा बहादुरी से आगे बढ़ता गया। पर जैसे जैसे वह आगे बढ़ता गया आवाज और तेज़ होती गयी। उसको धूल और धुँए के बादल ने घेर लिया। वातावरण और भयानक हो गया। अब वह यह भी नहीं बता सकता था कि वह ठीक रास्ते पर था या नहीं।

पर वह यह जानता था कि छह महीने की यह यात्रा उसे रेह देव के बागीचे तक जरूर ले आयेगी। और यह आवाज रेह देव के तलिस्मान की थी।

वह आगे चलता रहा तो उसको एक बागीचे की झलक दिखायी देने लगी। उसके दरवाजे पर चीखते हुए तलिस्मान थे और पहरेदार था। शाहज़ादा उसके पास गया और उसे बताया कि वह वहॉ से क्या चाहता था।

पहरेदार ने आश्चर्य से कहा — "तुम इन भयानक आवाजों से नहीं डरे। ये सारे तलिस्मान तुम्हारी वजह से बजाये गये थे। इन्होंने तो बल्कि मुझे भी डरा दिया।"

शाहज़ादे ने अनार की शाख के बारे में पूछा तो पहरेदार ने गम्भीरता से जवाब दिया कि उसका पाना तो बहुत मुश्किल काम है। पर अगर तुम डर नहीं रहे हो तो तुम तीन महीने की यात्रा और कर सकते हो।

तीन महीने बाद तुम फिर एक ऐसी ही जगह पहुँच जाओगे। वहॉ दूसरे तलिस्मान होंगे। वहॉ तुम्हें एक और बागीचा मिलेगा।

उसकी रक्षा करने वाली मेरी मॉ है। पर तुम उसके पास मत जाना जब तक कि वह ही तुम्हारे पास न आये। वहॉ जा कर उसे मेरा सलाम कहना और अपने आने का उद्देश्य उसे तब तक मत बताना जब तक वह तुमसे खुद नहीं पूछे।"

सो शाहज़ादा उस पहरेदार की बताये हुए रास्ते पर चल दिया। तीन महीने बाद उसने फिर से वैसी ही भयानक आवाज सुनी पर इस बार उसकी भयानकता का वर्णन करना कठिन था। यहीं रेह देव का बागीचा था और ये भयानक आवाजें उसके तलिस्मान से आ रही थीं।

शाहज़ादा एक चट्टान के पीछे छिप गया तो उसने एक मनुष्य की आकृति आती देखी जो बाद में पहले वाले पहरेदार की बुढ़िया मॉ की थी। उसकी मॉ लगभग **90** साल की थी। उसके बाल बर्फ जैसे सफेद थे उसकी पलकें लाल थीं उसकी भौंहें दो तीरों के समान थीं उसकी ऑखें आग जैसी दहक रही थीं उसके नाखून दो दो गज लम्बे थे।

वह एक डंडे के सहारे आ रही थी वह हवा सूँघती हुई हर कदम पर छींक रही थी। जब वह चलती थी तो उसके दोनों घुटने आपस में टकराते थे। तो ऐसी थी उस बागीचे की रक्षक।

शाहज़ादे के पास आते हुए उसने उससे पूछा कि वह वहॉ क्या कर रहा था। शाहज़ादे ने उसे उसके बेटे की ओर से सलाम कहा तो वह बोली "बिल्कुल बेकार है किसी काम का नहीं। सो तुम लोग

पहले मिल चुके हो। क्या मेरा अभागा बेटा यह सोचता है कि मैं तुम्हारे ऊपर दया करूँ? मैं जल्दी ही तुम्हें खत्म कर दूँगी।" ऐसा कह कर उसने शाहज़ादे को पकड़ लिया और बुरी तरह से झकझोर दिया।

शाहज़ादे को पता ही नहीं चला कि हुआ क्या। उसे तो बस यही दिखायी दिया कि वह किसी की पीठ पर है जिसके न तो ऑखें हैं और न कान हैं और जो मेंढक की तरह से कूद कूद कर चल रहा था। यह प्राणी उसे साथ ले कर बहुत बड़े बड़े डग भरता हुआ एक एक डग में एक एक समुद्र पार करता हुआ चला जा रहा है।

अचानक उसने शाहज़ादे को नीचे उतार दिया और बोला — "जो कुछ भी तुम सुनो जो कुछ भी तुम देखो ध्यान रखना कि उसके बारे में तुम कुछ बोलना नहीं वरना तुम गये।" कह कर वह एक पल में ही चला गया।

जैसे कोई सपना हो शाहज़ादे ने वहॉ एक बागीचा देखा जिसका उसे कोई ओर छोर दिखायी नहीं दे रहा था जिसमें कई नाले बह रहे थे कई झरने थे पेड़ फल फूल थे जिसके जैसा दुनियॉ में कोई बागीचा नहीं था। चारों ओर चिड़ियें चहक रही थीं लगता था जैसे हवा खुद ही एक गीत हो।

चारों ओर देखने के बाद शाहज़ादा बागीचे के अन्दर घुसा तो दिल को रुलाने वाली आवाज सुनी जैसे कोई रो रहा हो। तभी उसे अनार की शाख की याद आ गयी सो वह उधर ही चल पड़ा।

बागीचे के बीच में एक छोटा सा घर था जहॉ पौधों को सुरक्षा से रखा जाता था। उसने देखा कि उसमे एक लैम्प जैसा कुछ लटक रहा है जिसमें कई अनार लटक रहे हैं। उसने उसमें से एक शाख तोड़ ली।

जैसे ही उसने उसे तोड़ा तो उसे एक बहुत ही डरावनी आवाज सुनायी दी "धरती का एक आदमी हमारी जान ले रहा है। धरती का एक आदमी हमें मार रहा है।" डर के मारे शाहज़ादा वहॉ से भाग लिया।

वह शक्लरहित चीज़ जो बाहर दरवाजे पर इन्तजार कर रहा था बोला "जल्दी भागो। शाहज़ादा भी भाग कर उसकी पीठ पर बैठ गया और फिर एक पल में वह समुद्र के दूसरे किनारे पर था। अब शाहज़ादे ने पहली बार अनार की शाख को देखा।

उसने देखा कि उस शाख पर **50** अनार लगे हुए थे और वे पचासों अनार भिन्न भिन्न गीत गा रहे थे। लगता था जैसे दुनियॉ के सारे संगीत एक साथ चल रहे हों। अब वह उस बुढ़िया से मिला जो **90** साल की थी।

बुढ़िया बोली — "इस अनार की शाख को बहुत सॅभाल कर रखना। इसे कभी अपनी ऑखों से दूर मत करना। अगर तुम शादी के दिन इसे सुन सको तो ये अनार तुम्हें बहुत प्यार करेंगे। फिर तुम्हें किसी से डरने की जरूरत नहीं है क्योंकि ये तुम्हारी हर मुसीबत के समय में रक्षा करेंगे।"

मॉ से विदा ले कर वह उसके बेटे के पास वापस लौट गया जिसने उसे उसकी मॉ की सलाह मानने के लिये सराहना की। वहॉ से शाहज़ादा राजकुमारी सुन्दरी के पास वापस चला गया।

राजकुमारी उसका बेचैनी से इन्तजार कर रही थी क्योंकि वह उसे इतना प्यार करती थी कि वह हमेशा यही सोचती रहती थी कि कहीं उस पर कोई मुसीबत न आ जाये।

पर जब उसने संगीत की आवाज सुनी जो उन **50** अनारों में से आ रही थी तो वह शाहज़ादे से मिलने के लिये जल्दी से उठी तो उन **50** अनारों ने मिल कर एक ऐसा संगीत गाया जिससे उन्हें ऐसा लगा कि जैसे वे दोनों हवा में ऊपर उठ कर अल्लाह के स्वर्ग में पहुॅच गये हों।

उनकी शादी की दावत और खुशियॉ **40** दिन और **40** रात चलीं और इस सारे समय वे उन पचासों अनारों का संगीत सुनते रहे।

जब दावत समाप्त हो गयी तो शाहज़ादे ने कहा — "तुम्हारी तरह से मेरे भी माता पिता हैं। हमने अपनी शादी यहॉ तो मना ही ली है अब मैं अपने माता पिता के पास चलना चाहता हूॅ और अपनी शादी वहॉ भी मनाना चाहता हूॅ।" सो अगले दिन वे शाहज़ादे के घर के लिये चले।

जब उनकी यात्रा समाप्त होने पर आयी तो शाहज़ादा बादशाह के पास गया और जा कर उन्हें बताया कि वह राजकुमारी सुन्दरी को लाने में सफल हो गया है।

बादशाह ने उसकी वीरता और चतुराई की प्रशंसा की और उसे इनाम दिया। फिर उन्होंने राजकुमारी की नकली शाहज़ादे से शादी की तैयारी शुरू कीं। जब राजकुमारी सुन्दरी ने देखा कि उसकी शादी तो किसी नकली शाहज़ादे से हो रही है तो उसने उस नकली शाहज़ादे के गाल पर चॉटा मारा। वह बेचारा बादशाह से शिकायत करने पहुँच गया।

बादशाह को लगा कि जरूर ही दाल में कुछ काला है। सब कुछ वही नहीं है जो ऊपर दिखायी दे रहा है। सो वह राजकुमारी सुन्दरी के पास गया और उससे उसके इस व्यवहार का कारण पूछा।

राजकुमारी ने बादशाह से विनती की कि वह इस शादी को न होने दे जब तक कि किसान के बेटे को मृत्यु दंड न दे दिया जाये। सो बादशाह ने किसान के बेटे यानी असली शाहज़ादे को अपने सामने बुलाया और फिर अपने सामने ही उसका सिर कटवा दिया।

तुरन्त ही राजकुमारी सुन्दरी ने स्वर्ग का पानी लिया और उसके ऊपर छिड़क कर उसे ज़िन्दा कर दिया। उसके बाद उसने किसान के बेटे यानी असली शाहज़ादे से कहा — "तुम मर गये थे और अब तुम फिर से ज़िन्दा हो गये हो इसलिये अब तुम अपनी कसम से

आजाद हो। अब तुम आराम से बता सकते हो कि तुम्हारे साथ क्या हुआ।"

तब असली शाहज़ादे ने बताया कि जब वह अपनी मॉ के पास से चल दिया तो इस किसान के बेटे से मिला। फिर उसने कुँए की घटना बतायी और फिर इस खतरनाक खोज से सम्बन्धित सारी घटनाऐं बतायीं। फिर उसने अपना ताबीज दिखा कर अपनी पहचान साबित की।

ताबीज देख कर बादशाह को विश्वास हो गया कि वही उसका बेटा है बादशाह ने उसे गले से लगा कर बार बार चूमा। नकली शाहज़ादे को मरवा दिया गया। असली शाहज़ादे की मॉ को शादी के लिये ठीक समय पर बादशाह के पास ले आया गया।

21 जादू की बालों की पिनें[46]

एक बार एक बादशाह था जिसकी बेटी इतनी सुन्दर थी जितना सुन्दर इस दुनियॉ में कोई और नहीं था।

बादशाह की पत्नी का एक अरब दास था जिसको वह एक कमरे में बन्द रखती थी और उससे रोज एक सवाल पूछती थी — "क्या चॉद सुन्दर है? क्या मैं सुन्दर हूॅ? क्या तुम सुन्दर हो?" और वह दास भी रोज एक ही जवाब देता — "हर चीज़ और हर आदमी सुन्दर है।"

इस सुन्दर बातचीत के बाद सुलताना फिर से दरवाजे को ताला लगा देती और चली जाती। एक दिन बादशाह की बेटी नरतानेसी[47] यानी छोटा अनार महल में इधर उधर घूम रही थी कि उस अरब दास ने उसे देख लिया। देखते ही वह उससे प्यार करने लगा।

अगले दिन जब सुलताना ने उससे वही रोज के सवाल पूछे तो उसने उस दिन अपने रोज के जवाब से कुछ अलग हट कर जवाब दिया। उसने कहा — "चॉद सुन्दर है आप सुन्दर हैं मैं सुन्दर हूॅ पर नारतानेसी सबसे ज़्यादा सुन्दर है।"

यह सुन कर सुलताना बहुत गुस्सा हुई। और उस अरब ने अब क्योंकि बेटी को देख लिया था तो वह मॉ की तारीफ क्यों करता।

---

[46] The Magic Hair-pins. Tale No 21

[47] Nartanesi – name of the daughter of the Badshah. Means "Little Pomegranate"

सो वह राजकुमारी के पास गयी और उससे कहा कि चलो घूमने चलते हैं।

घूमते घूमते वे एक घास के मैदान में आ गयीं। वहॉ पहुॅच कर बेटी थक गयी थी सो वह एक पेड़ के नीचे लेट गयी और सो गयी। जब वह वहॉ सो गयी तो मॉ उसे वहीं अकेला सोता छोड़ कर घर चली गयी।

जब राजकुमारी जागी और उसने अपनी मॉ को नहीं देखा तो उसने रोना शुरू कर दिया। वह अपनी मॉ को ढूॅढने के लिये इधर उधर भागने लगी। पर सब बेकार। बहुत जल्दी ही उसका रोना चीखों में बदल गया जो सारे मैदान में गूॅजने लगीं।

इत्तफाक से उस समय तीन राजकुमार वहॉ शिकार खेलने आये हुए थे तो चीखों की आवाज सुनते सुनते उस लड़की के पास आ गये। जब लड़की ने उनको देखा तो वह और डर गयी। उसने उनसे उनकी दया और सुरक्षा की विनती की। उसने उनसे कहा कि वे उसे अपनी बहिन बना कर उसे स्वीकार करें।

तीनों भाइयों को उस पर दया आ गयी सो उन्होंने उसे अपनी बहिन बना लिया। वे उसे अपने घर ले गये। उसके बाद वे तीनों भाई रोज शिकार करने जाने लगे। वहॉ से वे शिकार कर के लाने लगे और राजकुमारी उसे खाने के लिये बनाने लगी। इस प्रकार उनके दिन खुशी से निकलने लगे। पर लड़की की सुन्दरता के चर्चे दूर दूर तक फैलने लगे।

अब यह कहानी भी फैलनी शुरू हो गयी कि तीन भाइयों को एक लड़की मिल गयी है जिसे वे बहिन बना कर अपने घर ले गये हैं। यह कहानी सुलताना के कानों में भी पड़ी तो वह यह सुन कर बहुत गुस्सा हुई कि उसकी बेटी अभी भी ज़िन्दा है।

उसने सोचा कि इस लड़की को तो उसे पहले ही मार देना चाहिये था और उसके टुकड़े जंगली जानवरों को खिला देने चाहिये थे।

सो वह एक जादूगरनी के पास गयी और उससे पूछा कि उसे उस लड़की को मार देने के लिये क्या करना चाहिये। जादूगरनी ने उसे बालों में लगाने वाले दो जादुई पिन दिये और कहा कि अगर ये पिन उसके बालों में लगा दिये जायें तो वह निश्चित रूप से मर जायेगी।

सुलताना ने वह पिनें उससे ले लीं अपना वेश एक भिखारिन का बनाया और पिनों और कुछ और चीज़ों की एक पोटली बनायी और राजकुमारी के पास चल दी।

जब तीनों भाई शिकार पर चले जाते थे तो राजकुमारी अपने घर का दरवाजा बन्द कर के रखती थी। सुलताना ने जब दरवाजा खटखटाया तो राजकुमारी ने दरवाजा नहीं खोला। तो सुलताना बोली — "मेरी बच्ची तुम दरवाजा क्यों नहीं खोल रहीं। मैं तो इतनी दूर अनातोलिया से आयी हूँ और अपने बेटों के लिये कुछ भेंट ले कर आयी हूँ। कम से कम तुम मुझसे वे भेंट तो ले लो।"

राजकुमारी ने जवाब दिया — "पर दरवाजे पर तो ताला लगा है।"

तब सुलताना ने दरवाजे की एक झिरी में से झॉकते हुए कहा — "मेरी बच्ची। यह सुन कर कि उनके एक बहिन भी है तो मैं तुम्हारे लिये भी बालों में लगाने के लिये एक पिन की भेंट ले कर आयी हूॅ। तुम अगर अपना सिर चाभी के छेद के पास कर लो तो मैं ये पिन तुम्हारे बालों में लगा दूॅ।"

राजकुमारी ने इस पर कोई शक नहीं किया और अपना सिर चाभी के छेद के पास कर दिया। सुलताना ने वह पिन उसके सिर में लगा दी। जैसे ही वह पिन उसके सिर में लगी वह तो मर कर नीचे गिर पड़ी। अपना काम खत्म करने बाद सुलताना अपने घर वापस चली गयी।

शाम को जब भाई लोग शिकार कर के घर वापस लौट कर आये और घर में घुसे तो उन्होंने देखा कि राजकुमारी का मृत शरीर तो नीचे पड़ा हुआ है। वे बहुत ज़ोर से रोने लगे और निराश हो कर अपने अपने हाथ मलने लगे।

जब उनका दुख थोड़ा सा कम हुआ तो वे उसके दफ़न की तैयारी करने लगे। उन्होंने अपनी बहिन को एक सोने के ताबूत में रखा और एक पहाड़ी पर ले जा कर उसे दो पेड़ों के बीच में टॉग दिया।

अब कुछ ऐसा हुआ कि उसके कुछ देर बाद ही वहॉ एक बादशाह का बेटा शिकार के लिये गया तो उसे दो पेड़ों के बीच एक सोने का ताबूत टॅगा हुआ दिखायी दिया। उसे उत्सुकता हुई तो उसने उसे नीचे उतार कर खोला तो देखा कि उसमें एक सुन्दर सी लड़की लेटी हुई है। उसे उससे बहुत प्यार हो गया।

वह उस ताबूत को घर ले गया और उसे अपने कमरे में रखवा दिया। अब जब भी वह बाहर जाता तो इस बात का ध्यान रखता कि वह अपने कमरे के दरवाजे पर ताला लगा कर जाये। राजकुमार अपना दिन तो शिकार में बिताता था और रात उस लड़की को देखने में जो सोने के ताबूत में मरी पड़ी थी।

इस बीच बादशाह को एक लड़ाई पर जाना था जो अभी अभी छिड़ी थी पर उनके वज़ीर ने उनको जिद कर के रोक लिया और कहा कि वह खुद जाने की बजाय शाहज़ादे को भेज दें। सो बादशाह ने अपने बेटे को बुलाया और उसे लड़ाई पर जाने का हुक्म दे दिया।

राजकुमार अपने कमरे में लौटा ताबूत खोला एक आखिरी नजर उसे देखा और फिर अपने कमरे को ताला लगाया और लड़ाई पर चला गया। जाते जाते वह सबसे कह गया कि उसके पीछे कोई उसके कमरे में न जाये। हम यह कहना भूल गये कि शाहज़ादे की शादी तय हो गयी और वह राजकुमारी जिसके उसकी शादी होने वाली थी वह भी वहीं रहती थी।

जब राजकुमार यह कह कर जा रहा था कि उसके पीछे उसके कमरे में कोई न जाये तो वह लड़की यह बात सुन रही थी। यह सुन कर उसको उत्सुकता हुई कि ऐसा उस कमरे में क्या था जो राजकुमार ऐसा हुक्म दे कर जा रहा था। इस गुत्थी को सुलझाने के लिये उसने उस कमरे में जाने का निश्चय किया।

उसके लिये इस बात का कोई मतलब नहीं था कि राजकुमार की अनुपस्थिति में उसके कमरे में किसी को जाना था या नहीं। उसने इतनी ज़ोर से दरवाजा खोला कि उसका ताला टूट गया और वह कमरे में घुस गयी।

सोने के ताबूत में रखी एक मरी हुई लड़की को देख कर उसे बड़ा अजीब लगा। वह बोली — "यह कौन सी लड़की है जिसकी राजकुमार दिन रात पहरेदारी करता है।"

उसने उसको और पास से देखा तो उसे उसके बालों में पिनें लगी हुई दिखायी दीं। उसने उन पिनों को उसके बालों से निकाल लिया। जैसे ही उसने उन पिनों को खींचा वह लड़की एक चिड़िया में बदली और उड़ गयी।

उसके बाद काफी समय बीत गया। लड़ाई भी खत्म हो गयी। राजकुमार लड़ाई से घर वापस लौटा। आते ही वह अपने कमरे में गया तो यह देख कर उसे बहुत दुख हुआ कि उसका वह सोने का ताबूत खुला पड़ा था और खाली पड़ा था। यह सब देख कर उसे बहुत गुस्सा आया।

उसने तुरन्त ही अपने नौकर को बुलाया और उससे पूछा कि किसने उसके कमरे में घुसने की हिम्मत की।"

नौकर बोला — "आपकी होने वाली पत्नी राजकुमारी ने।"

राजकुमार बोला — "उसने उसके साथ क्या किया?" और उसके दिन के बाद से राजकुमार बीमार पड़ गया और उसकी हालत दिन ब दिन बुरी होती चली गयी।

अब क्योंकि लड़ाई खत्म हो चुकी थी सो बादशाह ने राजकुमार की शादी की तैयारियॉ शुरू कर दीं। ठीक समय पर उसकी शादी हो गयी।

अब हर सुबह महल में एक चिड़िया आती एक पेड़ पर बैठती और माली से पूछती — "मेरा शाहज़ादा कैसा है?"

माली कहता — "वह सोता है।"

चिड़िया कहती — "अल्लाह करे वह सोये और हमेशा स्वस्थ रहे और मैं जिस पेड़ पर बैठी हूॅ वह मुरझा जाये।"

यह बातचीत कई दिनों तक चलती रही। रोज वह चिड़िया एक नये पेड़ पर बैठती और रोज एक नया पेड़ मुरझा जाता। जब माली ने इस तरह रोज एक पेड़ मुरझाता हुआ देखा तो उसने इस बात की शिकायत राजकुमार से की। क्योंकि उसको लगा कि अगर ऐसे ही चलता रहा तब तो एक दिन यह सारा बागीचा ही उजड़ जायेगा।

राजकुमार की भी चिन्ता बढ़ी तो उसने उस चिड़िया को पकड़ने के लिये एक जाल बिछाया। अगले दिन चिड़िया आयी और पकड़ी गयी। राजकुमार ने उसे एक सोने के पिंजरे में रख दिया और उसके सुन्दर पंखों को देखता रहता।

जब राजकुमार की पत्नी ने पहली बार उस चिड़िया को देखा तो वह पहचान गयी कि यह वही ताबूत वाली लड़की है। उसने उसी समय निश्चय कर लिया कि वह उसे जल्दी से जल्दी मार कर रहेगी।

एक बार शाहज़ादे को कहीं बाहर जाना पड़ा तो बस जैसे ही वह बाहर गया पहला मौका मिलते ही उसने उस चिड़िया का गला घोट दिया और उसे बागीचे में ही फेंक दिया। जब उसका पति घर वापस आया तो उससे कह दिया कि उसे तो बिल्ली खा गयी।

शाहज़ादा यह सुन कर बहुत दुखी हुआ पर वह कुछ नहीं कर सकता था। राजकुमारी ने जब उस मरी हुई चिड़िया को बागीचे में फेंका तो उस जगह उसके खून की बूँदों से गुलाब की झाड़ियॉ उग आयीं।

एक दिन माली की पत्नी बागीचे में से कुछ फूल चुनने के लिये आयी तो उनमें से एक फूल उस गुलाब की झाड़ी में से भी चुन कर ले गयी। उन सब फूलों को उसने एक गुलदस्ते में सजा कर रख दिया पर वे सब जल्दी ही मुरझा गये। केवल गुलाब का फूल ही ऐसा ताजा रहा जैसे अभी भी डाली पर लगा हो।

माली की पत्नी के मुॅह से निकला "क्या ही आश्चर्यजनक फूल है यह। यह नहीं मुरझाया बाकी सब मुरझा गये। उसने उसे सॅघ लिया। जैसे ही उसने उसे सूॅघा तो वह तो चिड़िया बन कर सारे कमरे में इधर उधर उड़ने लगा। यह देख कर माली की पत्नी डर गयी कि यह या तो इन है या जिन है।

जब वह कुछ सॅभली तो उसने उसे पकड़ लिया और उसके ऊपर हाथ फेरने लगी। हाथ फेरते समय उसे लगा कि उसके सिर में कोई हीरा चमक रहा है पर ध्यान से देखने पर पता चला कि वह तो एक पिन है।

उसने उसकी वह पिन खींच ली और लो वह तो अब एक लड़की बन गयी। फिर लड़की ने उसे अपनी आश्चर्यजनक कहानी सुनायी।

माली की पत्नी तुरन्त ही महल भागी गयी और वहॉ पहुॅच कर शाहज़ादे के निजी कमरे में चली गयी और उसे सब बताया। वह सब सुन कर तो शाहज़ादे की खुशी का कोई ठिकाना ही नहीं था।

उसने माली की पत्नी को वापस उसके घर भेज दिया और उससे कहा कि वह उसकी ठीक से देखभाल करे जब तक शाम को वह उसके घर आता है।

सूरज ढलते ही वल माली के घर पर था। लड़की को देखते ही वह तो बेहोश सा ही हो गया। जब उसे कुछ होश आया तब उसने उस लड़की से उसकी कहानी सुनाने के लिये कहा।

जब वह माली के घर से चला तो वह लड़की को अपने साथ लेता गया। पर जब वह अपने महल जा रहा था एक बन्दर उनके ऊपर कूद पड़ा। शाहज़ादा उसको भगाने के लिये उसके पीछे पीछे चला। अब वह इतनी देर तक लड़की से दूर रहा तो लड़की क्योंकि थकी हुई थी वह वहीं सो गयी।

जब यह बात लड़की की मॉ को पता चली कि उसकी बेटी ताबूत से गायब हो गयी है तो उसने इस बात को पक्का करने के लिये कि वह उसे फिर से परेशान नहीं करेगी वह उसकी खोज में अपने महल से निकली ताकि वह उसे मार सके।

बहुत देर तक घूमने के बाद इत्तफाक से वह उसी जगह आ पहुॅची जहॉ उसकी बेटी सोयी हुई थी। दबी दबी सी मुस्कुराहट से वह बोली "सो तुम फिर से मेरे कब्जे में आ गयीं।"

इस बीच शाहज़ादा बन्दर को पकड़ने में असफल रहा सो वह जल्दी जल्दी लड़की के पास लौटा क्योंकि उसको चिन्ता लगी हुई थी कि वह फिर किसी और नयी मुसीबत में न फॅस जाये।

जब वह उस जगह आया तो उसने देखा कि लड़की तो सोयी हुई है और एक स्त्री उसके पास बैठी हुई है। जब शाहज़ादे ने उससे पूछा कि वह वहॉ क्या कर रही है तो उसने कहा कि वह उस लड़की को वहॉ अकेला सोता देख कर बस उसकी पहरेदारी कर रही थी कि कहीं उसको कोई नुकसान न पहुॅचे।

अचानक शाहज़ादे के दिमाग में एक विचार कौंधा। उसने उस स्त्री से पूछा कि वह कौन है और क्या है। उसने कहा कि वह एक छोड़ी हुई गरीब स्त्री है जिसके पास कुछ नहीं है और वह अकेली है। शाहज़ादे ने उसे अपने साथ आने के लिये कहा कि वह उसकी इस दया का बदला जरूर चुकायेगा।

अब लड़की जाग गयी थी। उसने अपनी मॉ को पहचान लिया और छिपे तौर पर शाहज़ादे को बता दिया।

तीनों महल की ओर चल दिये। स्त्री बहुत खुश थी कि अब उसको मौका मिल गया था कि वह अपनी बेटी से हमेशा के लिये छुटकारा पा सकती थी।

पर जैसे ही तीनों महल पहुॅचे तो शाहज़ादे ने उस स्त्री और अपनी पत्नी दोनों को फॉसी की सजा सुना दी और सोने के ताबूत वाली लड़की से शादी की तैयारियॉ शुरू कर दीं। उसके बाद वे हमेशा खुश रहे।

Books on Turkish Folktales

Kunos, Ignacs
Turkish Fairy Tales and Folktales. Translated from the Hungarian version by R Nisbet Bain (in 1896). London : AH Bullen. 1901.
https://www.gutenberg.org/files/64807/64807-h/64807-h.htm

Kunos, Ignacz
Forty-four Turkish Fairy Tales. London : George Harper. Undated.
https://ia800702.us.archive.org/3/items/fortyfourturkish001862/fortyfourturkish001862.pdf

List of Forty-Four Turkish Fairy Tales

Part 1

1. The Creation
2. The Brother And Sister
3, Fear
4. The Three Orange Peris
5. The Rosebeauty
6. The Silent Princess
7. Kara Mustafa the Hero
8. The Wizard Dervish
9. The Fish-Peri
10. The Horse-dew And the Witch
11. The Simpleton
12. The Magic Turban, the Magic Whip And the Magic Carpet
13. Mahomet, The Bald-head
14. The Storm Fiend
15. The Laughing Apple And The Weeping Apple
16. The Crowperi
17. The Forty Princes and the Seven-headed Dragon
18. Kamertaj, The Moonhorse
19. The Bird of Sorrow
20. The Enchanted Pomegranete Branch And the Beauty
21. The Magic Hair-pins

Part 2

22. Patience-stone And Patience-knife
23. The Dragon-prince and the Stepmother
24. The Magic Mirror
25. The Imp of the Well
26. The Soothsayer
27. The Daughter of The Padishah of Kandahar
28. Shah Meram and Sultan Sade
29. The Wizard And His Pupil
30. The Padishah of The Thirty Peris
31. The Deceiver And The Thief
32. The Snakeperi and The Magic Mirror
33. Little Hyacinth's Kiosk
34. Prince Ahmed
35. The Liver

36. The Fortune Teller
37. Sister and Brother
38. Shah Jussuf
39. The Black Dragon And the Red Dragon
40. Madjun
41. The Forlorn Princess
42. The Beautiful Helwa Maiden
43. Astrology
44. Kunterbunt

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्न के साथ — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2023

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंगेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन ः सोलोमन और सैटर्ऩ। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारी डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales**.**
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियॉ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियॉ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2019**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियॉ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियॉ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियॉ — थोमस फ्रैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. Translated in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911.
Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॉ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

35. Short Tales of Panjab
By Charles Swynnerton – a collection of short tales given in his two books – "Romantic Tales of the Panjab" and "Indian Nights' Entertainment" given above – No 31 and 32. 1903.

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2023

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" कम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2023